हिंदी

कुमारभारती

दसवीं कक्षा

भारत का संविधान

भाग 4 क

मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य– भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करें;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखें;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता–पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे ।

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास-२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी-४ दिनांक २५.४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया । दि. २९.१२.२०१७ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई ।

हिंदी

कुमारभारती

दसवीं कक्षा

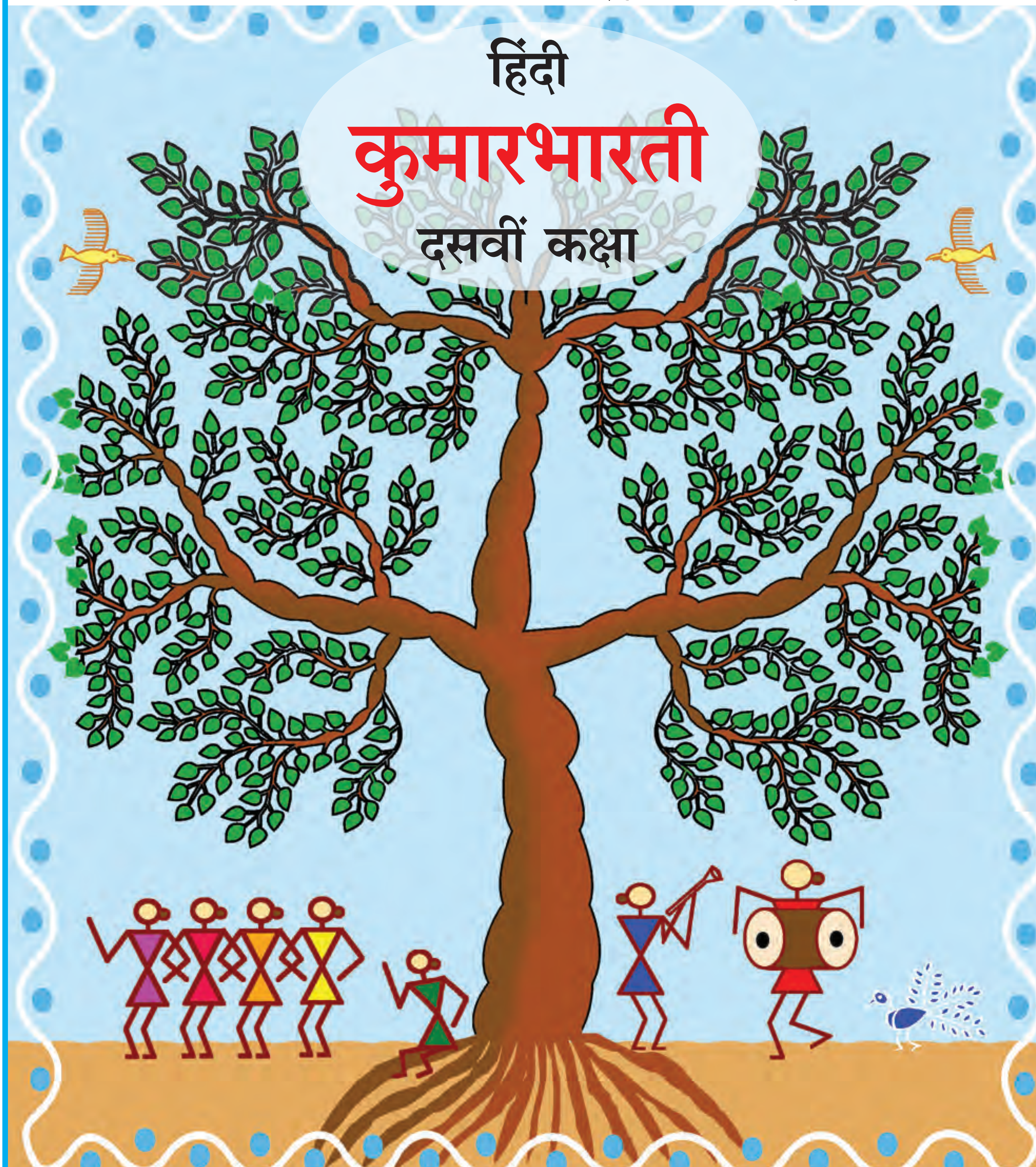

मेरा नाम ______________ है ।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

75PPGN

आपके स्मार्टफोन में 'DIKSHA App' द्वारा, पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q.R.Code के माध्यम से डिजिटल पाठ्यपुस्तक एवं प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित Q.R.Code में अध्ययन-अध्यापन के लिए पाठ से संबंधित उपयुक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी ।

प्रथमावृत्ति : २०१८
चौथा पुनर्मुद्रण : २०२२

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे - ४११००४

इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

हिंदी भाषा समिति

डॉ.हेमचंद्र वैद्य - अध्यक्ष
डॉ.छाया पाटील - सदस्य
प्रा.मैनोद्दीन मुल्ला - सदस्य
डॉ.दयानंद तिवारी - सदस्य
श्री रामहित यादव - सदस्य
श्री संतोष धोत्रे - सदस्य
डॉ.सुनिल कुलकर्णी - सदस्य
श्रीमती सीमा कांबळे - सदस्य
डॉ.अलका पोतदार - सदस्य - सचिव

हिंदी भाषा अभ्यासगट

श्री संजय भारद्वाज
सौ. वृंदा कुलकर्णी
डॉ. वर्षा पुनवटकर
सौ. रंजना पिंगळे
डॉ. प्रमोद शुक्ल
श्रीमती पूर्णिमा पांडेय
डॉ. शुभदा मोघे
श्री धन्यकुमार बिराजदार
श्रीमती माया कोथळीकर
श्रीमती शारदा बियानी
डॉ. रत्ना चौधरी
श्री सुमंत दळवी
श्रीमती रजनी म्हैसाळकर
डॉ. आशा वी. मिश्रा
श्रीमती मीना एस. अग्रवाल
श्रीमती भारती श्रीवास्तव
डॉ. शैला ललवाणी
डॉ. शोभा बेलखोडे
डॉ. बंडोपंत पाटील
श्री रामदास काटे
श्री सुधाकर गावंडे
श्रीमती गीता जोशी
श्रीमती अर्चना भुस्कुटे
डॉ. रीता सिंह
सौ. शशिकला सरगर
श्री एन. आर. जेवे
श्रीमती निशा बाहेकर

प्रकाशक :
श्री विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ
प्रभादेवी, मुंबई-२५

निमंत्रित सदस्य

श्री ता. का. सूर्यवंशी
श्रीमती मंजुला त्रिपाठी, मिश्रा

संयोजन :
डॉ.अलका पोतदार, विशेषाधिकारी हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
सौ. संध्या विनय उपासनी, विषय सहायक हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ : श्री विवेकानंद पाटील

चित्रांकन : श्री राजेश लवळेकर

निर्मिति :
श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री राजेंद्र चिंदरकर, निर्मिति अधिकारी
श्री राजेंद्र पांडलोसकर, सहायक निर्मिति अधिकारी

अक्षरांकन : भाषा विभाग, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जीएसएम, क्रीमवोव
मुद्रणादेश :
मुद्रक :

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई–बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्‌ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता–पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्‌धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

प्रिय विद्‌यार्थियो,

आपकी उत्सुकता एवं अभिरुचि को ध्यान में रखते हुए नवनिर्मित कुमारभारती दसवीं कक्षा की पुस्तक को रंगीन, आकर्षक एवं वैविध्यपूर्ण स्वरूप प्रदान किया गया है । रंग-बिरंगी, मनमोहक, ज्ञानवर्धक एवं कृतिप्रधान यह पुस्तक आपके हाथों में सौंपते हुए हमें अत्यधिक हर्ष हो रहा है ।

हमें ज्ञात है कि आपको गीत सुनना-पढ़ना, गुनगुनाना प्रिय है । कथा-कहानियों की दुनिया में विचरण करना मनोरंजक लगता है । आपकी इन मनोनुकूल भावनाओं को दृष्टिगत रखते हुए इस पुस्तक में कविता, गीत, गजल, नई कविता, पद, लोकगीत, खंडकाव्य-महाकाव्य अंश, बहुरंगी कहानियाँ, निबंध, हास्य-व्यंग्य, संस्मरण, साक्षात्कार, एकांकी, आलेख, नाट्‌यांश, उपन्यास अंश आदि साहित्यिक विधाओं का समावेश किया गया है । यही नहीं, हिंदी की अत्याधुनिक विधा 'हाइकु' को भी प्रथमतः इस पुस्तक में स्थान दिया गया है । ये सभी विधाएँ केवल मनोरंजन के लिए ही नहीं अपितु ज्ञानार्जन, भाषाई कौशलों-क्षमताओं के विकास के साथ-साथ चरित्र निर्माण, राष्ट्रीय भावना को सुदृढ़ करने तथा सक्षम बनाने के लिए भी आवश्यक रूप से दी गई हैं । इन रचनाओं का चयन आयु, रुचि, मनोविज्ञान, सामाजिक स्तर आदि को ध्यान में रखकर किया गया है ।

बदलती दुनिया की नई सोच, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा अभ्यास को सहज एवं सरल बनाने के लिए इन्हें संजाल, प्रवाह तालिका, विश्लेषण, वर्गीकरण विविध कृतियों, उपयोजित लेखन, भाषाबिंदु आदि के माध्यम से पाठ्‌यपुस्तक में समाहित किया गया है । आपकी सृजनात्मक शक्ति और कार्यक्षमता को ध्यान में रखते हुए क्षमताधारित श्रवणीय, संभाषणीय, पठनीय, लेखनीय कृतियों द्‌वारा अध्ययन-अध्यापन को अधिक व्यापक और रोचक बनाया गया है । आपकी हिंदी भाषा और ज्ञान में अभिवृद्‌धि के लिए 'ऐप' एवं 'क्यू.आर.कोड,' के माध्यम से अतिरिक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी । अध्ययन अनुभव हेतु इनका निश्चित ही उपयोग हो सकेगा ।

मार्गदर्शक के बिना लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो सकती । अतः आवश्यक उद्‌देश्यों की पूर्ति हेतु अभिभावकों, शिक्षकों का सहयोग तथा मार्गदर्शन आपके विद्‌यार्जन को सहज एवं सफल बनाने में सहायक सिद्‌ध होगा । पूर्ण विश्वास है कि आप सब पाठ्‌यपुस्तक का कुशलतापूर्वक उपयोग करते हुए हिंदी विषय के प्रति विशेष अभिरुचि, आत्मीयता एवं उत्साह प्रदर्शित करेंगे ।

हार्दिक शुभकामनाएँ !

(डॉ. सुनिल मगर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे-०४

पुणे
दिनांक : १८ मार्च २०१८, गुढ़ीपाड़वा
भारतीय सौर दिनांक : २७ फाल्गुन १९३९

भाषा विषयक क्षमता

यह अपेक्षा है कि दसवीं कक्षा के अंत तक विद्‌यार्थियों में भाषा संबंधी निम्नलिखित क्षमताएँ विकसित हों :

अ.क्र.	क्षमता	क्षमता विस्तार
१.	श्रवण	१. गद्‌य-पद्‌य को रसानुभूति एवं सहसंबंध स्थापित करते हुए सुनना-सुनाना । २. वैश्विक स्तर की जानकारी सुनकर विश्लेषणात्मक पद्‌धति से सुनाना । ३. प्रसार माध्यमों से प्राप्त जानकारी के केंद्रीय भाव को सुनकर पक्षपातरहित सुनाना ।
२.	भाषण-संभाषण	१. राज्य एवं राष्ट्र के कार्यक्रमों पर पक्ष-विपक्ष में अपना मत व्यक्त करना । २. स्थानीयकरण से वैश्वीकरण में ताल-मेल बिठाते हुए परिचर्चा करना । ३. पाठ्‌य-पाठ्‌येतर विधाओं के भावसौंदर्य को समझते हुए रसग्रहण करना ।
३.	वाचन	१. पाठ्‌य/पाठ्‌येतर सामग्री के भाषाई सौंदर्य का आकलन करते हुए आदर्श वाचन करना । २. विविध क्षेत्र के व्यक्तियों का परिचय तथा जीवनियों का मुखर एवं मौन वाचन करना । ३. प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के विविध प्रकारों से उपलब्ध सामग्री के अंतर का आकलन करते हुए वाचन करना ।
४.	लेखन	१. हिंदी के व्यावहारिक उपयोग का आकलन करते हुए कार्यालयीन कामकाज आदि का लेखन, संगणक की सहायता से प्रपत्र भरना । २. कहानी को आत्मकथा और आत्मकथा को कहानी के रूप में रूपांतरित करना । ३. विज्ञापन और किसी भी विधा का सूचनानुसार स्वतंत्र एवं शुद्‌ध लेखन करना ।
५.	भाषा अध्ययन (व्याकरण)	❊ छठी से दसवीं कक्षा के विद्‌यार्थियों के लिए भाषा अध्ययन के घटक नीचे दिए गए हैं : प्रत्येक कक्षा के पाठ्‌यांशों पर आधारित चुने हुए घटकों को प्रसंगानुसार श्रेणीबद्‌ध रूप में समाविष्ट किया है । घटकों का चयन करते समय विद्‌यार्थियों की आयुसीमा, रुचि और पुनरावर्तन का अभ्यास आदि मुद्‌दों को ध्यान में रखा गया है । प्रत्येक कक्षा के लिए समाविष्ट किए गए घटकों की सूची संबंधित कक्षा की पाठ्‌यपुस्तक में समाविष्ट की गई है । अपेक्षा है कि विद्‌यार्थियों में दसवीं कक्षा के अंत तक सभी घटकों की सर्वसामान्य समझ निर्माण होगी । पर्यायवाची, विलोम, लिंग, वचन, शब्दयुग्म, उपसर्ग, प्रत्यय, हिंदी-मराठी समोच्चारित भिन्नार्थक शब्द, शुद्‌धीकरण, संज्ञा के प्रकार, सर्वनाम के प्रकार, विशेषण के प्रकार, क्रिया के प्रकार, अव्यय के प्रकार, काल के प्रकार, कारक विभक्ति, वाक्य के प्रकार और उद्‌देश्य-विधेय, वाक्य परिवर्तन, विरामचिह्न, मुहावरे, कहावतें, वर्ण विच्छेद, वर्ण मेल, संधि के प्रकार, समास के प्रकार, अलंकार के प्रकार, छंद के प्रकार, शुद्‌ध उच्चारण और प्रयोग करना ।
६.	अध्ययन कौशल	१. सुवचन, उद्‌धरण, सुभाषित, मुहावरे, कहावतें आदि का संकलन करते हुए प्रयोग करना । २. विभिन्न स्रोतों से जानकारी का संकलन, टिप्पणी तैयार करना । ३. आकृति, आलेख, चित्र का स्पष्टीकरण करने हेतु मुद्‌दों का लेखन, प्रश्न निर्मिति करना ।

शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक बातें ....

अध्ययन अनुभव देने से पहले क्षमता विधान, प्रस्तावना, परिशिष्ट, आवश्यक रचनाएँ एवं समग्र रूप से पाठ्यपुस्तक का अध्ययन आवश्यक है । किसी भी गद्‌य-पद्‌य के प्रारंभ के साथ ही कवि/लेखक परिचय, उनकी प्रमुख कृतियों और गद्‌य/पद्‌य के संदर्भ में विद्‌यार्थियों से चर्चा करना आवश्यक है । प्रत्येक पाठ की प्रस्तुति के उपरांत उसके आशय/भाव के दृढ़ीकरण हेतु प्रत्येक पाठ में 'शब्द संसार', विविध 'उपक्रम', 'उपयोजित लेखन' 'अभिव्यक्ति', 'भाषा बिंदु', 'श्रवणीय', 'संभाषणीय', 'पठनीय', 'लेखनीय' आदि कृतियाँ भी दी गई हैं । इनका सतत अभ्यास कराएँ ।

सूचनानुसार कृतियों में संजाल, कृति पूर्ण करना, भाव/अर्थ/केंद्रीय भाव लेखन, पद्‌य विश्लेषण, कारण लेखन, प्रवाह तालिका, उचित घटनाक्रम लगाना, सूची तैयार करना, उपसर्ग/प्रत्यय, समोच्चारित-भिन्नार्थी शब्दों के अर्थ लिखना आदि विविध कृतियाँ दी गई हैं । ये सभी कृतियाँ संबंधित पाठ पर ही आधारित हैं । इनका सतत अभ्यास करवाने का उत्तरदायित्व आपके ही सबल कंधों पर है ।

पाठों में 'श्रवणीय', 'संभाषणीय', 'पठनीय', 'लेखनीय' के अंतर्गत दी गई अध्ययन सामग्री भी क्षमता विधान पर ही आधारित है । ये सभी कृतियाँ पाठ के आशय को आधार बनाकर विद्‌यार्थियों को पाठ और पाठ्‌य पुस्तक से बाहर निकालकर दुनिया में भी विचरण करने का अवसर प्रदान करती हैं । अतः शिक्षक/अभिभावक अपने निरीक्षण में इन कृतियों का अभ्यास अवश्य कराएँ । परीक्षा में इनपर प्रश्न पूछना आवश्यक नहीं है । विद्‌यार्थियों के कल्पना पल्लवन, मौलिक सृजन एवं स्वयंस्फूर्त लेखन हेतु 'उपयोजित लेखन' दिया गया है । इसके अंतर्गत प्रसंग/ विषय दिए गए हैं । इनके द्‌वारा विद्‌यार्थियों को रचनात्मक विकास का अवसर प्रदान करना आवश्यक है ।

विद्‌यार्थियों की भावभूमि को ध्यान में रखकर पुस्तक में मध्यकालीन कवियों के पद, दोहे, सवैया, साथ ही कविता, गीत, गजल, बहुविध कहानियाँ, हास्य-व्यंग्य, निबंध, संस्मरण, साक्षात्कार, एकांकी आदि साहित्यिक विधाओं का विचारपूर्वक समावेश किया गया है । इतना ही नहीं अत्याधुनिक विधा 'हाइकु' को भी प्रथमतः पुस्तक में स्थान दिया गया है । इनके साथ-साथ व्याकरण एवं रचना विभाग तथा मध्यकालीन काव्य के भावार्थ पाठ्यपुस्तक के अंत में दिए गए हैं । जिससे अध्ययन-अध्यापन में सरलता होगी ।

पाठों में दिए गए 'भाषा बिंदु' व्याकरण से संबंधित हैं । यहाँ पाठ, पाठ्यपुस्तक एवं बाहर से भी प्रश्न पूछे गए हैं । व्याकरण पारंपरिक रूप से न पढ़ाकर कृतियों और उदाहरणों द्‌वारा व्याकरणिक संकल्पना को विद्‌यार्थियों तक पहुँचाया जाए। 'पूरक पठन' सामग्री कहीं न कहीं पाठों को ही पोषित करती है । यह विद्‌यार्थियों की रुचि एवं उनमें पठन संस्कृति को बढ़ावा देती है । अतः इसका अभ्यास अवश्य करवाएँ । उपरोक्त सभी अभ्यास करवाते समय 'परिशिष्ट' में दिए गए सभी विषयों को ध्यान में रखना अपेक्षित है । पाठ के अंत में दिए गए संदर्भों से विद्‌यार्थियों को स्वयं अध्ययन हेतु प्रेरित करें ।

आवश्यकतानुसार पाठ्येतर कृतियों, भाषाई खेलों, संदर्भों-प्रसंगों का भी समावेश अपेक्षित है । आप सब पाठ्यपुस्तक के माध्यम से नैतिक मूल्यों, जीवन कौशलों, केंद्रीय तत्त्वों, संवैधानिक मूल्यों के विकास के अवसर विद्‌यार्थियों को अवश्य प्रदान करें । पाठ्यपुस्तक में अंतर्निहित प्रत्येक संदर्भ का सतत मूल्यमापन अपेक्षित है । आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप सभी शिक्षक इस पुस्तक का सहर्ष स्वागत करेंगे ।

✻ अनुक्रमणिका ✻

पहली इकाई

क्र.	पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
१.	उड़ चल, हारिल	कविता	सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'	१-२
२.	डिनर (पूरक पठन)	वर्णनात्मक कहानी	गजेंद्र रावत	३-१०
३.	नाम चर्चा	हास्य-व्यंग्य निबंध	नरेंद्र कोहली	११-१८
४.	मेरी स्मृति	हाइकु	डॉ. रमाकांत श्रीवास्तव	१९-२१
५.	भाषा का प्रश्न (पूरक पठन)	भाषण	महादेवी वर्मा	२२-२६
६.	दो संस्मरण	संस्मरण	संजय सिन्हा	२७-३३
७.	हिम	खंडकाव्य अंश	नरेश मेहता	३४-३६
८.	प्रण	नाटक अंश	मोहन राकेश	३७-४२
९.	ब्रजवासी	पद	भक्त सूरदास	४३-४४
१०.	गुरुदेव का घर	पत्र	निर्मल वर्मा	४५-४८
११.	दो लघुकथाएँ	लघुकथा	त्रिलोक सिंह ठकुरेला	४९-५२
१२.	गजलें (पूरक पठन)	गजल	अदम गोंडवी	५३-५६

दूसरी इकाई

क्र.	पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
१.	संध्या सुंदरी	नई कविता	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	५७-५८
२.	चीफ की दावत	संवादात्मक कहानी	भीष्म सहानी	५९-६८
३.	जानता हूँ मैं	आलेख	महात्मा गांधी	६९-७४
४.	बटोहिया (पूरक पठन)	लोक भाषा गीत	रघुवीर नारायण	७५-७७
५.	अथातो घुम्मक्कड़-जिज्ञासा	वैचारिक निबंध	राहुल सांकृत्यायन	७८-८३
६.	मानस का हंस	उपन्यास अंश	अमृतलाल नागर	८४-८९
७.	अकथ कथ्यौ न जाइ	पद	संत नामदेव	९०-९१
८.	बातचीत (पूरक पठन)	साक्षात्कार	दुर्गाप्रसाद नौटियाल	९२-९९
९.	चिंता	महाकाव्य अंश	जयशंकर प्रसाद	१००-१०२
१०.	टॉल्स्टॉय के घर के दर्शन	यात्रा वर्णन	डॉ. रामकुमार वर्मा	१०३-१०८
११.	दुख (पूरक पठन)	मनोवैज्ञनिक कहानी	यशपाल	१०९-११६
१२.	चलो हम दीप जलाएँ	गीत	सुरेंद्रनाथ तिवारी	११७-११९
	व्याकरण तथा रचना विभाग एवं भावार्थ			१२०-१२८

१. उड़ चल, हारिल

– *सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'*

उड़ चल हारिल लिए हाथ में, यही अकेला ओछा तिनका
उषा जाग उठी प्राची में कैसी बाट, भरोसा किनका !
शक्ति रहे तेरे हाथों में, छूट न जाय यह चाह सृजन की
शक्ति रहे तेरे हाथों में, रुक न जाय यह गति जीवन की !

ऊपर-ऊपर-ऊपर-ऊपर, बढ़ा चीर चल दिग्मंडल
अनथक पंखों की चोटों से, नभ में एक मचा दे हलचल !
तिनका तेरे हाथों में है, अमर एक रचना का साधन
तिनका तेरे पंजे में है, विधना के प्राणों का स्पंदन !

काँप न, यद्‌यपि दसों दिशा में, तुझे शून्य नभ घेर रहा है
रुक न यद्‌यपि उपहास जगत का, तुझको पथ से हेर रहा है !
तू मिट्टी था, किंतु आज मिट्टी को तूने बाँध लिया है
तू था सृष्टि किंतु स्रष्टा का, गुर तूने पहचान लिया है !

मिट्टी निश्चय है यथार्थ, पर क्या जीवन केवल मिट्टी है ?
तू मिट्टी, पर मिट्टी, से उठने की इच्छा किसने दी है ?
आज उसी ऊर्ध्वंग ज्वाल का, तू है दुर्निवार हरकारा
दृढ़ ध्वज दंड बना यह तिनका, सूने पथ का एक सहारा !

मिट्टी से जो छीन लिया है, वह तज देना धर्म नहीं है
जीवन साधन की अवहेला, कर्मवीर का कर्म नहीं है !
तिनका पथ की धूल स्वयं तू, है अनंत की पावन धूली
किंतु आज तूने नभ पथ में, क्षण में बद्‌ध अमरता छू ली !

उषा जाग उठी प्राची में, आवाहन यह नूतन दिन का
उड़ चल हारिल लिए हाथ में, एक अकेला पावन तिनका !

('इत्यलम्' कविता संग्रह से)

— ० —

परिचय

जन्म : १९११, देवरिया (उ.प्र.)
मृत्यु : १९७८, दिल्ली
परिचय : सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' जी आधुनिक हिंदी साहित्य के जाज्वल्यमान नक्षत्र और बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं । आपने कविता, कहानी, उपन्यास, आलोचना, निबंध, संस्मरण, नाटक सभी विधाओं में सफलतापूर्वक अपनी कलम चलाई है । आपने अनेक जापानी हाइकु कविताओं को अनूदित भी किया है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'हरी घास पर क्षण भर', 'आँगन के पार द्‌वार', 'सागर मुद्रा' (कविता संग्रह), 'शेखरः एक जीवनी'(दो भागों में), 'नदी के द्‌वीप' (उपन्यास), 'एक बूँद सहसा उछली', 'अरे ! यायावर रहेगा याद' (यात्रा वृत्तांत), 'सबरंग', त्रिशंकु' (निबंध संग्रह), 'तार सप्तक', 'दूसरा सप्तक' और 'तीसरा सप्तक' (संपादन) आदि ।

पद्‌य संबंधी

प्रस्तुत कविता में 'अज्ञेय' जी ने हारिल पक्षी के माध्यम से देश के नवयुवकों को आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है । कवि का कहना है कि जीवन पथ में अनेक कठिनाइयाँ आएँगी किंतु उनसे घबराना नहीं है । जीवन-जगत के आह्‌वान को स्वीकार करके 'फीनिक्स' पक्षी की भाँति आसमान की ऊँचाइयों तक पहुँचना ही हमारा लक्ष्य होना चाहिए ।

शब्द संसार

हारिल पुं.सं.(दे.) = हरियाल (एक पक्षी) (महाराष्ट्र का राज्यपक्षी)
ओछा वि.(दे.) = तुच्छ, छोटा
दिग्मंडल पुं.सं.(सं) = दिशाओं का समूह
विधना पुं.(सं.) = होनहार
उपहास पुं.सं.(सं.) = हँसी, दिल्लगी
गुर पुं.सं.(दे.) = कार्य साधने की युक्ति, कायदा
ऊर्ध्वंग पुं.सं.(सं.) = शरीर के ऊपर का भाग
दुर्निवार वि.(सं.) = जिसका निवारण करना कठिन हो ।
हरकारा पुं. सं. (फा.) = डाकिया, संदेशवाहक

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-**

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

तिनके की विशेषताएँ

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

हारिल की शक्ति संबंधी कवि की अपेक्षाएँ

१.------- २.-------

(३) उचित जोड़ियाँ ढूँढ़कर लिखिए :

अ	आ
१. प्राण	-------
२. -------	पंख
३. उषा	-------
४. -------	पावन धूली

(४) चार ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्न शब्द हों :

प्राची : ________________
उपहास : ________________
अमरता : ________________
हलचल : ________________

(५) पद्य में प्रयुक्त प्रेरणादायी पंक्तियाँ लिखिए ।

(६) कविता की अंतिम दो पंक्तियों का अर्थ लिखिए ।

(७) निम्न मुद्दों के आधार पर पद्य विश्लेषण कीजिए :

१. रचनाकार का नाम
२. रचना का प्रकार
३. पसंदीदा पंक्ति
४. पसंद होने का कारण
५. रचना से प्राप्त प्रेरणा

उपयोजित लेखन

'यदि मैं बादल होता.....' विषय पर लगभग सौ शब्दों में निबंध लिखिए ।

75YKIB

२. डिनर

(पूरक पठन)

– गजेंद्र रावत

अगस्त की शुरुआत थी...

बारिश की तेज बौछारें होकर हटी थीं लेकिन अब वातावरण में किसी तरह की कोई सरसराहट नहीं बची थी । एकदम ठहरी हवा सीली और चिपचिपी हो गई थी। आसमान में काले-दूधिया बादलों में खामोश घमासान मचा हुआ था, मानो किसी चिकने फर्श पर फिसल रहे हों । लेकिन सड़क पर वाहनों की धक्कापेल से उठती बेसुरी ध्वनि ने वहाँ बिखरी कुदरत की नायाब चुप्पी को जबरन दबा दिया था ।

उर्मि के कंधे पर लंबी तनियों के दो बैग झूल रहे थे और एक बड़ा पोली बैग उसकी ठुड्डी तक पहुँच रहा था जो दोनों बाजुओं के बीच थमा हुआ था । बुरी तरह अस्त-पस्त थी वो, भीतर से एकदम तर-बतर । खीझ और झुँझलाहट के बावजूद उसकी आँखें उद्विग्न-सी सामने के सरपट दौड़ते ट्रैफिक पर लगी हुई थीं । वह ऑटो खोज रही थी । कभी कोई ऑटो दिखाई देता पर हाथ देने पर भी रुकता न था । जो रुकता वह रोहिणी जाने के नाम से ही बिदक जाता । वह बहुतों से पूछ चुकी थी । बार-बार ऑटोवालों की हिलती स्प्रिंगदार खिलौनों-सी मुंडियों ने उसे बुरी तरह चिढ़ा दिया था । इस 'न' की आशंका भर से उसकी दिल की धड़कनें तेज हो गईं । इस अविवेकपूर्ण अभ्यास ने उसकी टाँगों से मानो संचित ऊर्जा का रेशा-रेशा बाहर खींच लिया हो । वह लगभग पैरों को घसीट रही थी । उनमें कदम भर चलने की ताकत नहीं बची थी । जब चाहिए होते हैं तो एक भी नहीं दिखता और जब नहीं चाहिए तो चारों तरफ ऑटो-ही-ऑटो देख लो। इतना तो दिन भर के काम से नहीं थकी जितना कंबख्त ऑटो करने में टाँगें टूट गईं और देखो अभी तक हो भी नहीं पाया... वह सोच रही थी और बचती-बचाती सड़क पार कर पैदल ही चलने लगी । पैर घसीटते-घसीटते यही ऊहापोह पंचकुइयाँ के और अधिक व्यस्त चौराहे तक ले आई । अब नहीं चला जाता । बस ! वो फुटपाथ से लगी रेलिंग पर पीठ टिकाकर खड़ी हो गई । गहरी साँस भरते हुए उसने आसमान की ओर सिर उठाया और साँस छोड़ते हुए आँखें मूँद लीं मानो पल भर को विराम लिया हो । मगर थोड़ी देर में उसकी आँखें फिर सड़क पर लगी थीं ।

चारों ओर अच्छा-खासा अँधेरा घिर चुका था । सड़क के किनारे बिजली के खंभों पर बत्तियाँ टिमटिमाने लगी थीं जिनके इर्द-गिर्द बरसाती पतंगे जमा हो रहे थे।

परिचय

जन्म : १९५८, पौड़ी (उत्तराखंड)

परिचय : गजेंद्र रावत जी हिंदी के एक चर्चित रचनाकार हैं । आपकी कहानियों में दैनिक अनुभवों के विविध रूप दिखाई पड़ते हैं । आपकी कहानियाँ नियमित रूप से पत्र-पत्रिकाओं की शोभा बढ़ाती रहती हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : 'बारिश', 'ठंड और वह', 'धुंधा-धुंआँ तथा अन्य कहानियाँ' (कहानी संग्रह) आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत संवादात्मक कहानी में रावत जी ने नारी के जीवन संघर्ष एवं उससे परिवार-समाज की अपेक्षाओं को दर्शाया है । पढ़ी-लिखी, नौकरी करने वाली बहू चाहिए पर साथ ही यह अपेक्षा भी रहती है कि घर के सारा काम भी वही करे । कहानीकार ने कहानी में यह स्पष्ट किया है कि घर के काम में हाथ बँटाने की जिम्मेदारी पुरुषों की भी उतनी ही है जितनी एक महिला की ।

वह फिर से हाथ का सामान उठाकर बिना समय गँवाए पीछे के ऑटो की तरफ चल दी ।

''चलोगे बाबा ?'' उर्मि हाँफती हुई बस इतना ही बोल पाई ।

''कहाँ ? वह काफी बूढ़ा था ।

''रोहिणी !'' उर्मि डरी-सहमी धीरे-से बोली ।

''बिलकुल चलेंगे पुत्तर...'' बूढ़े की आवाज में अपनापन था, जुबान मीठी थी ।

इतना सुनते ही वह झट से ऑटो में बैठ गई । बूढ़े की सहमति ने उसे दिली राहत दी । बूढ़ा अभी भी अगले पहिये पर झुका हुआ था और पाँव से दबाकर टायर देख रहा था । बूढ़े की पैंट का पोंचा घुटने तक गुल्टा हुआ था । उसके घुटने के थोड़ा नीचे रगड़ का निशान बना हुआ था । वैसे तो वह अच्छा-खासा लंबा था लेकिन उसकी कमर स्थायी तौर से झुकी थी । सिर के सन-से बाल बिना कंघी के फैले हुए थे । उसके चेहरे के गोरे रंग पर मैल, धूल और धुएँ की चिपचिपी परत चढ़ी हुई थी । उसने आँखें मिचमिचाते हुए पिछली सीट के छोटे-से अँधेरे में उसे देखा- वह बैठ चुकी थी । तीनों बैग सीट के पीछे रखकर वह हाथ में मोबाइल और छोटा-सा पर्स लिए चुपचाप बैठी थी ।

''चलो जी चलते हैं ।'' बूढ़ा मीटर गिराते हुए सीट पर बैठ गया और दोनों हाथ जोड़े पल भर आँखें मूँदे रहा । सुबह से नहीं मिला हाथ जोड़ने का टाइम ? वह बूढ़े के क्रियाकलाप देखते हुए सोचने लगी ।

''हाँ, तो पुत्तर कौन-से सेक्टर जाना है ?'' बूढ़े की जुबान में पंजाबी लहजा था ।

'' सेक्टर तेरह ।'' वो इत्मीनान से बोली अब पहले वाली खीझ, झुँझलाहट जाती रही थी ।

बूढ़ा बिना बोले चल पड़ा । ऑटो गति पकड़ने लगा ।

''पुत्तर एक बात पूछूँ ?'' बूढ़ा आगे सड़क पर दृष्टि गड़ाए झिझकते हुए धीमे-से बोला ।

''हाँ ?''

''ऐसा लगता है पुत्तर आप कहीं काम करती हो ?'' ''हाँ, अखबार में !'' उर्मि ने सिर पीछे टिका लिया था । ''अखबार में ? अखबार में कैसे ?'' बूढ़ा हैरान था । ''खबरें लाती हूँ...'' उर्मि कहते हुए लापरवाही से मुसकराई ।

''खबरें ?'' बूढ़े ने दोहराया, वह और ज्यादा हैरान था । काफी देर तक बूढ़ा चुप रहा, उर्मि की इस अजीब नौकरी के बारे में सोचता रहा । चलते-चलते अचानक एक अजीब-सी ध्वनि के साथ ऑटो बंद हो गया और धीरे-धीरे रुक गया ।

संभाषणीय

कामकाजी महिलाओं की समस्याओं की जानकारी इकट्ठा करके चर्चा कीजिए ।

‘‘ओ हो !’’ बूढे के मुँह से निकला, ‘‘क्या मुसीबत है ?’’ वह झुँझलाते हुए ऑटो को सड़क के किनारे तक खींच लाया ।

ऑटो के रुकते ही दस मिनट के अंदर ही उर्मि पसीने-पसीने हो गई । बूढ़े की बड़बड़ाहट उसके कानों तक पड़ रही थी । गरमी और घुटन से त्रस्त वह सामान ऑटो के भीतर ही छोड़कर नीचे बैठे बूढ़े के पास आ खड़ी हुई और थोड़ा-सा नीचे झुकते हुए बोली, ‘‘ठीक तो हो जाएगा न ?’’

‘‘हाँ, हाँ क्यों नहीं, चालीस साल से ऑटो चला रहा हूँ, पुर्जे-पुर्जे से वाकिफ हूँ । बस हो गया समझो !’’ भीतर लगी ग्रीस से उसका हाथ बुरी तरह सन गया था ।

‘‘आप इस उम्र में भी ... आपके बच्चे कमाते होंगे ?’’ वह आदतन पूछ बैठी लेकिन पल भर में ही उसे अहसास हुआ कि इतना निजी सवाल नहीं पूछना चाहिए था ।... पता नहीं कैसे तो गुजारा कर रहा होगा बेचारा !

बच्चों के नाम पर बूढ़े ने एक बार नजर उठाकर जरूर देखा और फिर सिर झुकाकर ऐसे काम में लग गया जैसे कुछ सुना ही न हो ।

‘‘बच्चे ! हाँ पुत्तर ...’’ बूढ़ा इतना ही बोल पाया कि उर्मि का मोबाइल बज उठा । वह फिर बोला, ‘‘आपका ...!’’

उर्मि चौंकी और मोबाइल को कान से सटाकर फुटपाथ पर चढ़ती हुई बात करने लगी, ‘‘आ रही हूँ बाबा ! हाँ भई हाँ ! शास्त्री नगर में हूँ...ऑटो खराब हो गया है.... नहीं-नहीं, वह ठीक कर रहा है ।’’ अंतिम शब्द उसने बहुत धीमे-से कहे ।

कुछ देर की आशा-निराशा के बाद ऑटो स्टार्ट हो ही गया । ऑटो को स्टार्ट होते देख उर्मि जल्दी से उछलकर पिछली सीट पर बैठ गई ।

कुछ देर ऑटो को ठीक-ठाक चलते देख, बूढ़ा बोलने लगा, ‘‘दो लड़के हैं, पहला तो शादी होते ही अलग हो गया, मैंने सोचा, चलो छोटेवाला तो साथ है पर वह तो और भी चालाक निकला, एक प्लॉट था उसके बिकते ही पट्ठे ने हमारा सामान बाँध दिया... मुझे ही पता है कि कैसे इज्जत बचाई ...’’ इतना कहते-कहते उसकी आँखें नम होती चली गईं । आवाज अवरुद्ध होती जा रही थी ।

‘‘तो अभी बिलकुल अकेले हो ?’’

‘‘हाँ पुत्तर, घरवाली को मरे चार साल हो गए हैं... बस बेटी है तुम्हारी उम्र की होगी, वो चक्कर लगा लेती है हफ्ते-पंद्रह दिन में । बेटी का मन नहीं मानता ! बेचारी वह भी अकेली कमाने वाली है । उसके आदमी के पास भी काम नहीं है ।’’ बूढ़ा धीमे-धीमे बोल रहा था और आखिरी शब्द तक बिलकुल ऊर्जाहीन हो चुका था मानो आगे नहीं बोल पाएगा ।

लेखनीय

‘बढ़ते हुए प्रदूषण (वायु, ध्वनि) का स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ रहा है,’ विषय पर अपने विचार लिखिए ।

कुछ देर वे चुप्पी में बँध गए ।

बूढ़ा फिर धीर-धीरे बोलने लगा, ''मैं किसी को दोष नहीं देता... सब किस्मत का खेल है ! दस साल का था मैं, जब लाहौर से दिल्ली आया था ... बाऊ जी ताँगा चलाते थे । यहाँ भी ताँगा ले लिया और जिंदगी भर वही चलाते रहे ।''...

यकायक एक तीखा-कर्कश स्वर गूँजा । ... खड़खड़-खड़खड़ ... और झटके के साथ ऑटो रुक गया ।

''ओफ्फ ओ ! अब क्या हुआ ?'' बूढ़ा झुंझलाया।

उर्मि ने कलाई को रोशनी तक ले जाकर टाइम देखा, फिर खीझ में धीरे-से फुसफुसाई, ''नो...ओ नो !'' बूढ़ा उतरकर ऑटो के इर्द-गिर्द घूमने लगा ''पंचर हो गया ... दस मिनट लगेंगे । आप फिकर न करें !''

फिर एक बार ऑटो पटरी के साथ खड़ा हो गया । बूढ़े ने आगे से प्लग-पाना, जैक और स्टेपनी निकाल ली, फिर बैठकर जैक लगाने लगा।

उर्मि ऑटो से उतर फुटपाथ पर चढ़ गई । उद्‌विग्न-सी, सिर नीचे किए छोटे-छोटे कदमों से टहलने लगी । अब टाइम ज्यादा हो गया है, ये गुस्सा कर रहे होंगे । बच्चे तो मेरे जिम्मे ही मानकर चलते हैं ... उसने सोचा ।

आकाश बादलों से पटा हुआ था । दूर कभी-कभी बिजली चमक जाती थी जिसकी तेज रोशनी आस-पास के घिरे अँधेरे में दिखाई दे रही थी।

अचानक मोबाइल बजने की आवाज ने उसे चौंका दिया । ये चिंता कर रहे होंगे ? उसने जल्दी से मोबाइल कान से लगा लिया ...''हैलो !''

''हैलो, क्या हो रहा है ? कहाँ हो यार ?''

वह ऑटो से थोड़ा दूर जाकर धीरे-से बोली, ''ऑटो पंक्चर हो गया है, ऑटो वाला बूढ़ा है, बेचारा धीरे-धीरे पहिया बदल रहा है ।''

''ऐसे खटारे में चढ़ी क्यों ? छोड़ो उसे, दूसरा ऑटो ले लो !''

''दूसरा मिलना मुश्किल है, बहुत कोशिशों से मिला है ये भी ।''

''अरे हाँ, तुम तो बूढ़े का साक्षात्कार ले रही होगी, वृद्‌धों के एकाकी जीवन पर लेख जो लिखना है ।''

''नहीं, नहीं...क्या बात कर रहे हो ।''

''नहीं, नहीं...क्या, ऐसा ऑटो ही क्यों किया... कभी तो दिमाग का इस्तेमाल किया करो''... वह उसी तरह झुकी हुई एक लंबी साँस खींचकर बिना हिले-डुले खड़ी रही । झिड़कते रहते हैं हर वक्त ! न जाने क्या समझते हैं अपने आपको ? मैं कोई जान-बूझकर ऐसा कर रही हूँ। इसे पचास रुपये दे देती हूँ... उसने पचास का एक नोट पर्स से निकालकर मुट्‌ठी में दबा लिया । अब वह सामने गुजरते ऑटो पर नजर रखे हुए थी ।

अपने परिवेश में यातायात सुरक्षा संबंधी लगे पोस्टर, भित्तिपट तथा विज्ञापन पढ़िए तथा कक्षा में लगाइए ।

‘‘टाइम लगेगा क्या बाबा ?’’

‘‘नहीं, पुत्तर बस हो गया !’’बूढ़ा पहिये के नट कस रहा था ।

‘‘तुम्हारा बच्चा छोटा है क्या ?’’बूढ़ा दोनों घुटनों पर हाथ रखकर खड़े होते हुए बोला ।

वह बूढ़े के इस असंगत प्रश्न से हैरान थी लेकिन उसने धीमे-से स्वीकृति में सिर हिला दिया । असंगत प्रश्न होने के बावजूद उसे अपने पापा की याद आ गई। उन्होंने बड़े किए हैं मेरे दोनों बच्चे...।

बूढ़ा ऑटो की तकनीक पर बड़ी देर तक बड़बड़ाता रहा ।

वह बिना कुछ कहे बैठ गई । ऑटो फिर से दौड़ते ट्रैफिक में शामिल हो गया । ऑटो जब सिग्नल पर रुका तो उर्मि ने कलाई की घड़ी को फिर देखा और सिर्फ होंठों को हिलाते हुए फुसफुसाई ... ‘एक महाभारत अभी घर पर भी झेलनी है... क्या पकाना है ? ओफ हो ! लेबर-सी जिंदगी हो गई है ! दिन भर रिपोर्टिंग के लिए धक्के खाओ... घर पहुँचो तो.... डिनर बनाओ !’

आगे की ड्राइविंग सीट पर बूढ़ा भी लगातार बड़बड़ा रहा था जो ट्रैफिक के भारी शोर में स्पष्ट नहीं था। उर्मि का मन घर पर ही लगा था ... अनुराग मुझसे तो इतनी पूछताछ कर रहे हैं कि कहाँ हूँ, पर ये नहीं कि सब्जी ही काट दें, दाल धोकर गैस पर चढ़ा दें । दिन भर आराम ही तो किया है । सुबह तो खाना मैं ही बनाकर आती हूँ । ... लेकिन मेरी किस्मत कहाँ ! ये सब तो मेरे इंतजार में होंगे ! आएगी और करेगी ....और क्या ? दुनिया में सिर्फ औरत को न तो कभी थकान होती, न दुख, न तकलीफ ! सारे काम औरत के जिम्मे हैं... आदमी तो फिर आदमी है ! ये सारे खयाल करते-करते उसके मुँह से हल्की-सी आह निकल आई ।

‘‘मुड़ना किधर है ?’’ बूढ़ा तेजी से बोला ।

वह चौंकी और फिर बाहर देखती हुई बोली, ‘‘सीधे हाथ... अगले गेट से अंदर ले लेना ।’’

ऑटो बिल्डिंग के नीचे रुक गया । बूढ़े को पैसे देकर वह सामान को पहले की तरह समेटे भारी कदमों से सीढ़ियाँ चढ़ते-चढ़ते सोचने लगी... ‘दस से ऊपर का टाइम हो गया है, तीन भूखे प्राणी घर में विचरण कर रहे होंगे... उनके लिए, अपने लिए खाना बनाना ! क्या मुसीबत है ! सुबह फिर प्रेस कॉन्फ्रेंस और दफ्तर ! कैसे होगा ये सब ! क्या उनके बस का कुछ भी नहीं है ? मैं भी तो जॉब करती हूँ। ये तो तीन महीने से घर पर ही हैं... मेहनत तो मेरे काम में ही ज्यादा है ।’ वह दरवाजे तक पहुँच गई और बेल दबाकर दीवार से सिर टिकाकर खड़ी हो गई ।

दरवाजा खुला । वे तीनों एक साथ ही उदास चेहरे लिए दरवाजे पर खड़े थे । छोटा दौड़कर उससे लिपट गया ‘‘मम्मा भूख लगी है !’’

आजकल ‘वृद्‌धों का जीवन कष्टमय होता जा रहा है’, किसी वृद्‌ध से मुलाकात करके उनसे इस विषय में सुनिए ।

‘उसके तन-बदन में जैसे आग लग गई हो। कम-से-कम बच्चों को कुछ खाने को दे सकते थे’ ... उसने सोचा लेकिन धीरे से बुदबुदाई, ‘‘अरे भीतर तो आने दे !’’

अनुराग सिर नीचे किए हुए बोला, ‘‘बहुत लेट हो गई हो, ऐसा भी क्या ऑटो था ?’’

उर्मि ने कुछ न कहा, एक नजर रसोई की ओर देखा । एकदम साफ-सुथरी। ‘दिन में कामवाली करके गई होगी तब से किचन में घुसे तक नहीं । इन्होंने सब्जी तक नहीं काटी । हर तरफ मुझे ही मरना है ।’ वह भीतर-ही-भीतर सोचती रही। बेडरूम की तरफ जाते हुए विपरीत दिशा में हाथ से इशारा करते हुए बोली, ‘‘वहाँ अँधेरा क्यों किया है ?’’

‘‘हम सब बेडरूम में ही थे । सीरियल देख रहे थे इसलिए वहाँ क्या फायदा बेकार में लाइट ...’’ अनुराग के साथ खड़ी बेटी शैफी ने कहा ।

‘‘चलो ठीक है, मैं हाथ-मुँह धोकर खाना पकाती हूँ ।’’ वह तल्ख होकर बोली। ... ‘सीरियल देख रहे हैं... बताओ ।’

वे सब वहीं खड़े उसे हाथ-मुँह धोते चुपचाप देखते रहे ।

उर्मि रसोई की तरफ मुड़ गई । ऐप्रन पहनकर फ्रिज से सब्जियाँ निकालकर स्लैब पर रखते हुए खीझ से बोली, ‘‘चाकू कहाँ है ?’’

‘‘डायनिंग टेबल पर होगा ।’’ बेडरूम से अनुराग की आवाज थी । इनसे छोटी-छोटी मदद की भी उम्मीद नहीं की जा सकती ... वह झल्लाहट में पैर पटकती डायनिंग टेबल तक पहुँची । ‘...यहाँ कहाँ रख दिया अँधेरे में ! कोई चीज जगह पर नहीं मिलती ।’ वह बड़बड़ाई और दीवार तक पहुँचकर लाइट का बटन दबा दिया। रोशनी होते ही उसने टेबल पर देखा तो भौचक्की रह गई । वहाँ खाना बना रखा हुआ था । डोंगा, सब्जी और केसरोल ! उसने जल्दी से डोंगे का ढक्कन हटाया और देखकर ढक दिया।

इस सीन को लाइव देखने के लिए वे तीनों बेडरूम से निकलकर डायनिंग टेबल के पास इकट्‌ठा हो गए ।

उन्हें पास देखकर उर्मि बुरी तरह झेंप गई । हथेलियों से मुँह छिपाती वहीं दुबककर बैठ गई ।

वे तीनों जोर-जोर से हँसते ताली बजाते उसे घेरकर खड़े हो गए । छोटा, मौका देखकर माँ से चिपक गया और तुतलाता हुआ बोला, ‘‘मम्मा हमने बना दिया’’ इतनी रात हँसी की आवाज दूर तक जाती रही ।

‘मैं भी क्या-क्या सोचती रहती हूँ’, उसने इन्हीं ठहाकों के बीच फिर सोचा । शर्म से उसके गालों पर लालिमा फैल गई ।

(‘लकीर’ कहानी संग्रह से)

— ० —

शब्द संसार

वाकिफ वि.(अ.) = परिचित, ज्ञात
तल्ख वि.(फा.) = कड़ुवा, कटु
डोंगा पुं.सं.(दे.) = बड़ा कटोरा

मुहावरे

बिदक जाना = भड़क जाना, चौंकना
पसीना-पसीना हो जाना = बहुत श्रम करना, थक जाना
भौचक्का रह जाना = आश्चर्यचकित होना
झेंप जाना = लज्जित होना

स्वाध्याय

✻ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

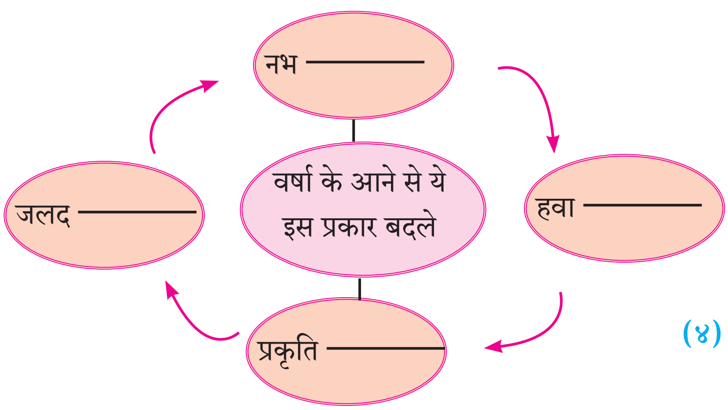

(२) ऐसे चार प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों :

१. गरमी और घुटन
२. सड़क
३. नौकरी
४. शास्त्री नगर

(३) उत्तर लिखिए :

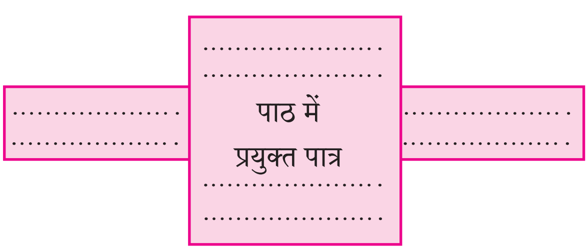

(४) उत्तर लिखिए :

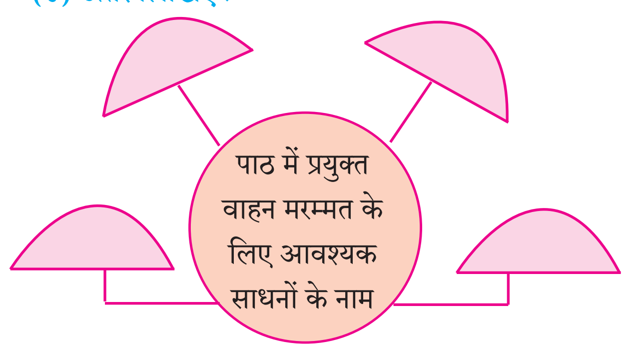

(५) निम्नलिखित कथनों में से केवल सत्य कथन छाँटकर पुनः लिखिए :

१. ऑटो के रुकने से उर्मि खुश थी ।
२. आगे की ड्राइविंग सीट पर युवती थी, लगातार बड़बड़ा रही थी ।
३. उर्मि उतरकर ऑटो के इर्द-गिर्द घूमने लगी ।
४. रोशनी होते ही उर्मि ने टेबल देखा तो वह क्रोधित हो गई ।

(६) शब्दयुग्म पूर्ण कीजिए :

१. ________ - दूधिया
२. डरी - ________
३. ________ - गिर्द
४. हाथ - ________

अभिव्यक्ति 'घर के कामों में प्रत्येक सदस्य का सहयोग आवश्यक है', इसपर अपने विचार लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) निम्नलिखित वाक्यों में उचित विरामचिह्न लगाकर वाक्य फिर से लिखिए :

१. हाँ तो पुत्तर कौन-से सेक्टर जाना है बूढ़े की जुबान में पंजाबी लहजा था
२. रोहिणी उर्मि डरी-सहमी धीरे-से बोली
३. ऐसा लगता है पुत्तर आप कहीं काम करती हो
४. मैं भी क्या-क्या सोचती रहती हूँ उसने इन्हीं ठहाकों के बीच फिर सोचा
५. उसने सोचा लेकिन धीरे से बुदबुदाई अरे भीतर तो आने दो
६. जी हाँ जी हाँ बहुत प्यारा बच्चा है मेरे मित्र ने कहा
७. संदर्भ लकीर कहानी संग्रह से
८. तुम बोलती क्यों नहीं अंबिका आक्रोश की दृष्टि से उसे देखती है
९. मल्लिका क्षण भर चुपचाप उसकी तरफ देखती रहती है क्या हुआ है माँ
१०. पचासों कहानियाँ पढ़ जाऊँ तो कही एकाध नाम मिलता है नहीं तो लोग यह वह से काम चला लेते हैं

(२) निम्नलिखित विरामचिह्नों का उपयोग करते हुए लगभग १० वाक्यों का परिच्छेद लिखिए :

विरामचिह्न युक्त परिच्छेद
। - ? ; , ! ‘ ’ “ ” × × × —— ० —— .... ( ) {} [ ] ^ : -

उपयोजित लेखन

मुद्दों के आधार पर कहानी लेखन कीजिए :

घना जंगल — विशाल और घने वृक्षों पर पंछियों का बसेरा — रोज पंछियों का बच्चों के लिए दाना चुगने उड़ जाना — हर बार जाते समय बच्चों को समझाना — ‘फँसना नहीं, बहेलिया आएगा, जाल बिछाएगा’ बच्चों द्वारा इसे केवल रटना — रटते-रटते एक दिन पेड़ से नीचे उतरना — दाने देखकर खुश होना — माँ की सीख याद आना — चौकन्ना होना — सावधान होकर उड़ जाना — बहेलिए का पछताना — शीर्षक ।

768GJY

३. नाम चर्चा

– नरेंद्र कोहली

कहते हैं, हिंदी के कथा साहित्य में गतिरोध आ गया है । ऐसे संकट हिंदी साहित्य में पहले भी आए हैं और अकसर आते रहते हैं । हिंदी में आते हैं तो अन्य भाषाओं के साहित्य में भी आते होंगे पर फिर भी सारी दुनिया का काम चलता रहता है । यह कोई ऐसी कठिनाई नहीं है जिसका कोई समाधान न हो ।

इस गतिरोध से एक भयंकर समस्या दूसरे क्षेत्र में पैदा हो गई है । सारे हिंदी भाषी प्रदेशों में नाम को लेकर गतिरोध आ गया है । कहीं किसी के घर में कोई संतान हुई और मुसीबत उठ खड़ी हुई । कितनी भयंकर समस्या है कि बच्चे का नाम क्या रखें ?

इस कर्तव्य को पूरा करने में मुझे कोई परेशानी नहीं थी पर हिंदी कथा साहित्य के इस गतिरोध ने मेरी गति भी अवरुद्ध कर दी है । पहले यह होता था कि किसी ने नाम पूछा और हमने कोई भी पत्रिका उठा ली, जिस किसी कहानी की नायिका या नायक का नाम दिखा, वही टिका दिया । लोग होते भी इतने सरल थे कि झट वह नाम पसंद कर लेते थे ।

अब हिंदी का कथा लेखक अपनी कहानियों में नाम रखने से कतराने लगा है । पचासों कहानियाँ पढ़ जाओ तो कहीं एकाध नाम मिलता है; नहीं तो लोग 'यह', 'वह' से काम चला लेते हैं । हर कहानी के नायक का नाम 'वह' और मेरी बात मान अपनी संतान का नाम 'वह' रखने को कोई भी तैयार नहीं । नाम हिंदी का कहानी लेखक नहीं रखता और परेशानी मेरे लिए खड़ी हो गई !

मेरे मस्तिष्क में एक साहित्यिक टोटका आया । मैंने सोचा, 'कथा साहित्य में गतिरोध आने पर भी तो आखिर हिंदी कहानी पत्रिकाओं का संपादक अपना कार्य किसी प्रकार चला ही रहा है न । कैसे चलाता है वह ?'

थोड़ी-सी छानबीन से पता चला कि कोलकाता और बनारस में बहुत दूरी नहीं है । बस, कोलकाता से बाँग्ला कहानियाँ बनारस में आ जाती हैं । मैंने हजारों-लाखों बाँग्ला नामों को पीट-पीटकर खड़ा किया और खड़ी बोली के नाम बना लिए ।

इस बार प्रादेशिकता आड़े आई । मेरे भाई-बंधु, मित्र तथा अधिकांशतः पड़ोसी पंजाबी हैं । दूसरे प्रदेशों के लोग मेरा पंजाबी अक्खड़पन कम ही सहते हैं, इसलिए अधिक निभती नहीं । एक कश्मीरी

परिचय

जन्म : १९४०, सियालकोट (पंजाब अविभाजित भारत)

परिचय : नरेंद्र कोहली जी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं । आपने उपन्यास, व्यंग्य, नाटक, कहानी, संस्मरण, निबंध, आलोचनात्मक साहित्य में लेखनी चलाई है । आप प्राचीन भारतीय संस्कृति से प्रेरणा लेकर समकालीन, तर्कसंगत लेखन करते हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : 'गणित का प्रश्न', 'आसान रास्ता' (बालकथाएँ), 'परिणति', 'नमक का कैदी' (कहानी संग्रह), 'परेशानियाँ', 'त्राहि-त्राहि', (व्यंग्य), 'किसे जगाऊँ', 'नेपथ्य' (निबंध), 'प्रविनाद', 'बाबा नागार्जुन' (संस्मरण), 'श्रद्धा', 'आस्था' (उपन्यास) आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत हास्य-व्यंग्य निबंध में नरेंद्र कोहली जी ने 'नामकरण की समस्या' पर मनोरंजक प्रकाश डाला है । नवजात शिशु का नाम रखने के लिए लोग किस तरह परेशान होते हैं, किस-किस तरह के नाम रखना चाहते हैं, इनका लेखक ने हास्य-व्यंग्यपूर्ण विवेचन किया है ।

मेरे पास आए । कश्मीर बहुत सुंदर प्रदेश है । फिर उनकी बिटिया कश्मीर के सौंदर्य से भी अधिक प्यारी थी । उस बच्ची का नाम कुछ ऐसा ही होना चाहिए था, जिसमें कश्मीर का सारा प्राकृतिक सौंदर्य साकार हो सके । मैंने क्षमता भर परिश्रम किया किंतु किसी भी नाम से उन्हें संतुष्ट नहीं कर पाया । अंततः उन्होंने ही कहा कि यदि मैं कोई नया नाम नहीं दे सकता तो उनके सोचे हुए नाम का हिंदी में कोई अच्छा-सा पर्याय दे दूँ, जो कि उस बच्ची का नाम रखा जा सके।

मैंने उनकी बात मान ली, इसमें मुझे कोई परेशानी नहीं थी । मैंने उनका सोचा हुआ नाम पूछा ।

''रोजलीना ।'' वे बोले, ''इसमें कश्मीर का सौंदर्य, कश्मीर के गुलाब का सौंदर्य, सब कुछ आ जाता है । वैसे पंडित नेहरू भी कश्मीरी थे ।'' वे अत्यंत भावुक हो उठे-''रोजलीना शब्द से ही हमारी बेबी का चेहरा आँखों के सामने घिर जाता है ।''

''नाम तो सुंदर है !'' मैंने स्वीकार किया ।

''बस, कठिनाई इतनी है कि नाम अंग्रेजी में है और हमारे रिश्तेदार इसे हजम नहीं कर पा रहे । आप इसका हिंदी या भारतीय पर्याय दे दें,'' उन्होंने कहा ।

मैंने बहुत सोचा, शब्दकोश उलट-पलट डाले और तब खोजकर उनको 'रोजलीना' का पर्याय दिया, 'गुलाबो' ।

उन्होंने मेरा चेहरा देखा और नाक सिकोड़कर बोले, 'आखिर पंजाबी हो न !''

मुझे तब भी लगा था कि प्रादेशिकता मेरे कर्तव्य में बाधा खड़ी कर रही है ।

अभी कल ही मेरे एक पंजाबी पड़ोसी आए थे । उनके घर पर परम परमेश्वर की किरपा से एक पुत्तर का जनम हो गया था । अतः वे चाहते थे कि मैं उनके सुपुत्तर के लिए कोई सोणा-सा नाम चुन दूँ ।

मैं मान गया । वैसे इतनी जल्दी मैं सामान्यतः माना नहीं करता पर कल रात से एक बड़ा मधुर-सा नाम मेरे मन में चक्कर-भंबीरी काट रहा था । सोचा, 'इनको वही नाम बता दूँ । इनके सुपुत्तर को नाम मिल जाएगा और मुझे उसकी चक्कर-भंबीरी से मुक्ति ।'

मैंने कहा, ''लाला जी ! इसका नाम तो आप रखे 'निकुंज' । बढ़िया नाम है और सारे मुहल्ले में किसी का ऐसा नाम नहीं है ।''

''आप मजाक बढ़िया करते हैं, मास्टर साहब !'' वह दोनों हाथों से ताली पीटकर खिलखिलाए, ''क्या नाम चुना है । कुंभकरन जैसा लगता

लेखनीय

आपके घर में होने वाले नामकरण कार्यक्रम का निमंत्रण पत्र बनाइए ।

है ।'' मैंने कुछ नहीं कहा, चुपचाप उन्हें देखता रहा ।

''ऐसा करो'', वह बोले, ''कोई बढ़िया-सा अंग्रेजी का नाम सोचो । मैंने सोचा है, वेल्कम कैसा रहेगा ? वे खुशी से उछल पड़े । अपने मकान का नाम भी हम इसी पुत्तर के नाम पर वेल्कम बिल्डिंग रखेंगे ।''

मेरी बुद्धि चक्कर खा गई । ऐसे नाम की तो मैंने कल्पना ही नहीं की थी । पिंकी-शिंकी तो लोग नाम रखने लगे हैं । सुना था, किसी ने अपनी बेटी का नाम 'ट्विंकल' भी रखा है । हमारे पड़ोस में एक साहब ने अपने बेटे को 'प्रिंस' घोषित किया है पर वेल्कम ऊँचा नाम था ।

''पहला पुत्तर है न ?'' मैंने पूछा । ''हाँ जी ! पैल्ला, एकदम पैल्ला।'' वह बोले । ''तो ठीक है'', मैं बोला, ''इसका नाम वेल्कम रखिए और दूसरे का फेयरवेल ।''

वे एक साथ दो-दो नाम पसंद कर चल पड़े ।

अभी पिछले दिनों ही क्षेत्रीयता ने मुझे एक बार और पछाड़ दिया । हमारे मकान से चौथे मकान में रहने वाले मेरे पड़ोसी का लड़का तीन वर्ष का हो गया था, पर वे अभी तक उसके लिए एक नाम तक नहीं खोज पाए थे । जैसे-जैसे दिन निकलते जाते थे, उनकी चिंता और भी गहरी होती जाती थी । जब अपने लड़के के लिए एक उपयुक्त नाम तक नहीं ढूँढ़ पा रहे थे तो उसके योग्य कन्या और नौकरी कहाँ से खोज पाएँगे ।

मुझसे मिले तो अपनी चिंता गाथा ले बैठे । जब वे बहुत रो चुके और बहुत रोकने पर भी मेरा हृदय पूरा गल गया और फेफड़ों की बारी आ गई तो मैंने पूछा, ''आखिर समस्या क्या है ?''

''समस्या क्या है ?'' वह बोले, ''बबुआ की महतारी का हठ और क्या ?'' ''क्या हठ है ?'' बहुत चाहने पर भी उनका घरेलू रहस्य पूछने से मैं स्वयं को न रोक सका ।

वह बोले, ''हमारा बबुआ बहुत शोर मचाता है, बहुत ज्यादा । उसकी महतारी कहती है कि उसका नाम उसके शोर मचाने पर ही रखेंगे ।''

मैं चकित हो गया, हठ को सुनकर । यह भी क्या हठ ! लोग गुण पर तो नाम रखते ही हैं पर दोष को लेकर नाम !

मुझे चिंतित देखकर वह बोले, ''कोई नाम सोच रहे हैं क्या ?''

मैंने कहा, ''एक नाम सूझा है । आपके बबुआ के शोर मचाने से मिलता-जुलता नाम । शाायद आपको पसंद आए ।''

''हमारी पसंद क्या है'', उनका मुँह लटका ही रहा, ''पसंद तो बबुआ की महतारी को होना चाहिए । बोलिए, क्या नाम सूझा है आपको ?''

''कोलाहल !'' मैंने बताया ।

''कोलाहल !'' उन्होंने दुहराया, ''वैसे तो सुंदर है, पर बबुआ की

संभाषणीय

भारत में सघन वन किन स्थानों पर बचे हैं, इसकी जानकारी के आधार पर आपस में चर्चा कीजिए ।

महतारी को पसंद नहीं आवेगा ।''

''क्यों ?'' मैंने पूछा ।

बोले, नाम तो कोई हमारे देसवा जैसा ही होना चाहिए । जैसे हमारा नाम है रामखेलावन । कोई ऐसन ही नाम हो ।''

मेरी बुद्धि चकमक हो रही थी । जल्दी से बोला, ''रामखेलावन के तोल पर आप शोरमचावन रख दीजिए।''

''शोरमचावन !'' वह उछल पड़े, ''बहुत बढ़िया । हम तीन बरिस से एही नाम तो खोज रहे थे । आप सचमुच बहुत बुद्धिमान हैं, मास्टर साहब'' और वे चले गए ।

बच्चे के गुण-दुर्गुण पर नाम रखने वाले वे अकेले ही नहीं थे ।

मेरे एक मित्र का पल्ला पकड़कर एक और साहब आए । पता नहीं लोगों को कहाँ-कहाँ से मालूम हो जाता है कि मैं बच्चों के नाम रखने में बहुत दक्ष हूँ ! मैंने उन्हें चलते-से दो-तीन नाम सुझाकर पीछा छुड़ाना चाहा तो वह खुले । बोले, ''ऐसे नहीं चलेगा, साहब ! हम तो आपको नामों का विशेषज्ञ समझकर आए हैं ।''

''आपको कैसा नाम चाहिए ?'' मैं ऐसे अवसरों पर स्वयं को उस दुकानदार की स्थिति में पाता हूँ, जो ग्राहक को तैयार माल से संतुष्ट न कर पाने के कारण, ऑर्डर पर माल बनवा देने का प्रस्ताव रखता है ।

''बात यह है, साहब !'' वह बोले, ''आप जानते हैं, किसको अपना बच्चा प्यारा नहीं लगता । हमें भी अपना बच्चा प्यारा है । वैसे आप उसे देखें तो आप भी मानेंगे कि वह बहुत प्यारा है । क्यों भाई साहब ।'' उन्होंने मेरे मित्र को टहोका दिया, ''ठीक कह रहा हूँ न ?''

''जी हाँ ! जी हाँ ! बहुत प्यारा बच्चा है,'' मेरे मित्र ने कहा ।

''पर साहब !'' वह फिर बोले, ''बहुत सताता भी है । हम चाहते हैं कि उसका कुछ ऐसा नाम रखा जाए कि उसका प्यारापन और सताना दोनों ही बातें कवर हो जाएँ। काम तो कठिन है, पर आप विद्वान हैं । कोई-न-कोई नाम तो सुझा ही देगें ।''

मैंने सोचा, काम वस्तुतः बीहड़ था । लोग भी कैसे-कैसे मूर्ख होते हैं। क्या शर्तें लाए हैं ! पर ठीक है, मैं भी विद्वान हूँ ।

मेरी बुद्धि ने एक चमत्कार किया । ऐसे चमत्कार वैसे कभी-कभी ही होते हैं पर हो जाते हैं ।

मैं बोला, ''आपकी शर्त बहुत कठिन है फिर भी प्रयत्न करना हमारा धर्म है । मेरे मन में एक नाम है। नाम अत्यंत साहित्यिक है और हिंदी साहित्य के मूर्धन्य साहित्यकार, कवि तथा नाटककार जयशंकर 'प्रसाद' की अलौकिक प्रतिभा की उपज है ।'' मैंने देखा, वे श्रद्धा से नत होकर मेरी

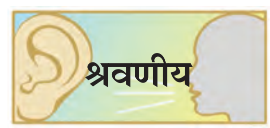

काका हाथरसी जी की हास्य-व्यंग्य कविता सुनकर सुनाइए ।

बात सुन रहे थे । मैं फिर बोला, ''प्रसाद जी ने भी बचपन के इन्हीं दोनों पक्षों को एक साथ देखा था और अपने एक गीत 'उठ-उठ री लघु-लघु लोल लहर' में उन्होंने प्यार और हठीले बचपन को 'दुर्ललित' कहा है । आप यही नाम अपने बच्चे का भी रख दें ।''

उनके चेहरे के भाव नहीं बदले । वे वैसे ही जड़ मुद्रा में बैठे रहे ।

''साहब ! हम नौकरी पेशा लोग तो हैं नहीं ।'' कुछ देर बाद, बड़ी खीझ के साथ बोले, ''फैशनेबल नाम हमारे घरों में नहीं चलते । हमारे बच्चे को तो बड़े होकर आढ़त का काम करना है, फर्म खोलनी है । हमें तो ऐसा नाम चाहिए, जो किसी फर्म का नाम भी हो सके। लटठ्राम गेंदामल वगैरह-वगैरह । कोई ऐसा ही नाम बताइए ।''

मैं फिर चिंता में पड़ गया । ठीक है, नाम को लेकर जहाँ क्षेत्रीय आग्रह हैं, वहाँ व्यावसायिक आग्रह भी होंगे। आखिर किसी फिल्म एक्टर का नाम बिछावनमल तो नहीं हो सकता न ! उसी तरह फर्म का नाम... और फिर उनकी शर्तें !

मैं बोला, ''आप ऐसा करें, बच्चे का नाम प्यारूमल सताऊमल रख दें । फर्म का नाम जरूर लगेगा, बच्चे का चाहे न लगे ।''

उनकी आँखों का भाव पहली बार बदला और वह चमककर बोले, ''मारा ! अब ठीक है । वाह प्यारूमल सताऊमल एंड संस ! वाह भई, वाह !''

पर मैंने उसी दिन से नाम बताने का काम स्थगित कर दिया है । अब मैंने नामों का वर्गीकरण आरंभ कर रखा है-फर्मों के उपयुक्त नाम, नेताओं के उपयुक्त नाम, एक्टरों के उपयुक्त नाम इत्यादि । देखना यह है कि कितने वर्ग बनते हैं और फिर उनके अनुसार नामों की सूचियाँ बनाऊँगा और फिर नाम बताने का ही धंधा आरंभ कर दूँगा । उन नामों को पेटेंट करवा लूँगा और फिर उन पेटेंट नामों की रॉयल्टी देकर ही लोग उनमें से कोई नाम रख सकेंगे । आप अपनी आवश्यकता लिखित रूप से भेजें !

—— ० ——

पठनीय

शंकर पुणतांबेकर जी की कहानी 'रावण तुम बाहर आओ' पढ़िए और चर्चा कीजिए ।

शब्द संसार

चक्कर-भंबीरी पुं. सं.(हिं.)= भँवर, लगातार घूमना
निकुंज पुं. सं.(सं) = वन वाटिका
बीहड़ वि.(सं.) =ऊबड़-खाबड़, विषम
आढ़त स्त्री.सं.(हिं.) = दलाली लेकर माल बिकवाने का स्थान

स्वाध्याय

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) तालिका पूर्ण कीजिए :

व्यक्ति और उनके बच्चे के लिए सुझाए गए नाम

व्यक्ति	नाम
________	________
________	________
________	________
________	________

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

१. लेखक द्वारा नामों का वर्गीकरण
- -------
- -------

२. नाम को लेकर किए गए आग्रह
- -------
- -------

(३) कारण लिखिए :

१. चौथे मकान में रहने वाले पड़ोसी परेशान थे: ------------------------------

२. लेखक को बुद्धिमान मास्टर साहब कहा गया : ------------------------------

३. इससे प्रदेश के लोगों की लेखक से अधिक नहीं निभती : ------------------------------

४. लेखक की बुद्धि चक्कर खा गई : ------------------------------

(४) दिए गए शब्दों में से उपसर्ग/प्रत्यय, मूल शब्द अलग करके लिखिए । इन्हीं शब्दों से उपसर्ग/प्रत्यययुक्त शब्द बनाइए तथा वाक्य में प्रयोग करके अपनी कॉपी में लिखिए :

अतिरिक्त, दृष्टिहीन, प्रतिवर्ष, शिष्टता, अमूल्य, प्रभाती, असंतुष्ट, व्यावसायिक

शब्द	मूलशब्द	उपसर्ग	प्रत्यय	उपसर्ग और प्रत्यययुक्त शब्द
सुरुचि	रुचि	सु	-	सुरुचिपूर्ण
राष्ट्रीय	राष्ट्र	-	ईय	अंतरराष्ट्रीय

अभिव्यक्ति 'व्यक्ति की पहचान नाम से नहीं, गुणों से होती है' इस विचार को स्पष्ट कीजिए ।

भाषा बिंदु

(१) कोष्ठक की सूचना के अनुसार निम्न वाक्यों का काल परिवर्तन कीजिए :

- आवाज अवरुद्ध होती जा रही थी । (सामान्य भूतकाल)

- मेम साहब को परदे पसंद आए थे । (पूर्ण वर्तमानकाल)

- मानव व्यक्तित्व के समान ही उसकी वाणी का निर्माण दोहरा होता है । (सामान्य भविष्यकाल)

- एक साथ काम पर आएँगे और एक साथ वापस घर लौटेंगे । (पूर्ण भविष्यकाल)

- आप इन दिनों फ्लाबेर के पत्र पढ़ रहे हैं । (पूर्ण भूतकाल)

- बस्ती के लिए यह तूफान प्रलय बनकर आया था । (अपूर्ण भूतकाल)

- मैं घर में रहकर तुम्हारे सब कामों में बाधा डालूँगी । (अपूर्ण वर्तमानकाल)

- मैं एक चीज पर लिखना शुरू करती हूँ । (अपूर्ण भविष्यकाल)
  ----

(२) आकृति में दिए गए वाक्य का काल पहचानकर निर्देशानुसार काल परिवर्तन कीजिए :

बेटे के दफ्तर का बड़ा साहब घर आ रहा था । ---- ------काल

सामान्य वर्तमानकाल ------------------------

सामान्य भविष्यकाल ------------------------

पूर्ण भविष्यकाल ------------------------

पूर्ण वर्तमानकाल ------------------------

सामान्य भूतकाल ------------------------

अपूर्ण वर्तमानकाल ------------------------

पूर्ण भूतकाल ------------------------

अपूर्ण भविष्यकाल ------------------------

उपयोजित लेखन

निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर उसपर आधारित ऐसे पाँच प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हों :

महर्षि कर्वे १०५ वर्ष तक जीवित रहे । जब देश भर में उनकी जन्म शताब्दी मनाई गई तो मुंबई की एक सभा में नेहरू जी ने कहा था, ''आपके जीवन से प्रेरणा और स्फूर्ति प्राप्त होती है । आपका जीवन इस बात की बेमिसाल कहानी है कि एक मानव क्या कर सकता है । मैं आपको बधाई देने नहीं आया वरन आपसे आशीर्वाद लेने आया हूँ ।''

भारतरत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने कहा था, ''डॉ. कर्वे का जीवन इस बात का ज्वलंत प्रमाण है कि दृढ़ धारणावाला साधारण व्यक्ति भी सर्वथा विपरीत परिस्थितियों में भी महान कार्य कर सकता है ।''

अण्णा साहब उन इक्के-दुक्के व्यक्तियों में से थे जो एक बार निश्चय कर लेने पर असाध्य कार्य को सिद्‌ध करने में लग जाते और उसे पूरा करके दिखा देते । भारत सदा से महान पुरुष रत्नों की खान रहा है और डॉ. कर्वे उन समाज सुधारकों में से थे जिन्होंने किसी सिद्‌धांत को पहले अपने जीवन में उतारकर उसे क्रियात्मक रूप दिया । हम प्रायः भाग्य को कोसा करते हैं और धन की कमी की शिकायत किया करते हैं परंतु यह उस व्यक्ति की कहानी है जो गरीब घर में पैदा हुआ, बच्चों को ट्यूशन पढ़ाकर स्वयं पढ़ाई की और इस अकेले व्यक्ति ने 'भारतीय महिला विद्‌यापीठ' की स्थापना की ।

प्रश्न :

१. ---
२. ---
३. ---
४. ---
५. ---

76HCLL

४. मेरी स्मृति

– डॉ. रमाकांत श्रीवास्तव

गई है पिकी
प्रतीक्षारत पुनः
आम्र शाखाएँ ।

महुआ खड़ा
बिछा श्वेत चादर
किसे जोहता ।

किसकी व्यथा
छा गई बन घटा
नभ है घिरा ।

साँझ का तारा
किसे खोजने आया
आम निशा में ।

कौन संदेशा
ले पवन आया है
सुनने तो दो ।

रची-बसी हो
मेहँदी की गंध में
याद आती हो ।

खुल गए हैं
पी कहाँ पुकार से
पृष्ठ पिछले ।

कटे बिरिछ
गाँव की दुपहर
खोजती साया ।

परिचय

जन्म : १९२१, रायबरेली (उ.प्र.)
परिचय डॉ. श्रीवास्तव जी ने १९४४ से अब तक पत्रकारिता और संपादन को व्यवसाय एवं मिशन के रूप में जिया । आपने दैनिक, साप्ताहिक, मासिक पत्रों के संपादन के अतिरिक्त हिंदी समिति, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान में प्रधान संपादक (राजपत्रित) के रूप में दरजनों विविध विषयक संदर्भ एवं मानक ग्रंथों का संपादन किया है ।
प्रमुख कृतियाँ : २० पुस्तकें प्रकाशित । 'बेटे को क्या बतलाओगे' (उपन्यास) आदि ।

पद्‌य संबंधी

प्रस्तुत कविता हाइकु विधा में लिखी गई है । यहाँ डॉ. रमाकांत श्रीवास्तव जी ने प्रत्येक हाइकु में अलग-अलग विषयों पर लेखन किया है । आपने इन रचनाओं में आम, महुआ, आकाश, तारा, पवन, मेहँदी, गाँव आदि के बारे में अपने संक्षिप्त विचार व्यक्त किए हैं । इनके अतिरिक्त झींगुर, कोयल आदि की खुशियों को भी आपने इस कविता में स्थान दिया है ।

गाँव मुझको
मैं ढूँढ़ता गाँव को
खो गए दोनों ।

वर्षा की साँझ
बजाते शहनाई
छिपे झींगुर ।

बजाने आई
पिकी छिप बाँसुरी
अमराई में ।

फूल खिलता
महक मुरझाता
स्वप्न बनता ।

बड़े सवेरे
उठ जातीं चिड़ियाँ
जगाता कौन ?

आए कोकिल
धुन वंशी की गूँजे
बौर महके ।

— ० —

सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

(१) पहचान कर लिखिए :

१. चहचहाने वाली
२. कूकने वाली
३. महकने वाला
४. शहनाई बजाने वाले

(२) हाइकु में निम्नलिखित अर्थ में आए शब्द :

१. पेड़
२. शाम

(३) निम्न पंक्तियों का भावार्थ लिखिए :

'गाँव मुझको
मैं ढूँढ़ता गाँव को
खो गए दोनों ।'

शब्द संसार

जोहना क्रि.(दे.) = प्रतीक्षा करना
बिरिछ पुं.सं.(दे.) = वृक्ष
महुआ पुं.सं.(दे.) = एक प्रकार का वृक्ष
पिकी स्त्री.सं.(सं.) = कोयल

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–**

(१) पहचानकर लिखिए :

१. प्रतीक्षा करने वाली -------
२. संदेश लाने वाला -------
३. खो जाने वाले -------
४. खोजने आने वाला -------

(२) जोड़ियाँ मिलाइए :

अ	आ
१. गाँव की दोपहर	झींगुर
२. मेहँदी की गंध	व्यथा
३. शहनाई	छाँव
४. छाई घटा	याद

(३) कविता में 'कोयल' तथा 'साँझ' के संदर्भ में आया वर्णन लिखिए ।

(४) इन पंक्तियों का भावार्थ लिखिए :
'महुआ खड़ा ------ नभ है घिरा ।'

(५) 'हरी-भरी वसुंधरा के प्रति मेरी जिम्मेदारी' पर अपने विचार लिखिए ।

(६) निम्न मुद्दों के आधार पर पद्य विश्लेषण कीजिए :
१. रचनाकार का नाम
२. रचना का प्रकार
३. पसंदीदा पंक्ति
४. पसंद होने का कारण
५. रचना से प्राप्त संदेश/प्रेरणा

अपठित पद्यांश

निम्नलिखित अपठित पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

निर्मम कुम्हार की थापी से कितने रूपों में कुटी-पिटी,
हर बार बिखेरी गई किंतु मिट्टी फिर भी तो नहीं मिटी ।
आशा में निश्छल पल जाए, छलना में पड़कर छल जाए,
सूरज दमके तो तप जाए, रजनी ठुमके तो ढल जाए,
यों तो बच्चों की गुड़िया-सी भोली मिट्टी की हस्ती क्या,
आँधी आए तो उड़ जाए, पानी बरसे तो गल जाए,

१. संजाल पूर्ण कीजिए :

मिट्टी पर परिणाम करने वाले घटक

(२) विधान के सामने सही अथवा गलत लिखिए :
१. हवा के आने से मिट्टी गल जाती है ।
२. पानी बरसने से मिट्टी उड़ जाती है ।
३. सूरज के दमकने पर मिट्टी ढल जाती है ।
४. मिट्टी कभी-कभी बिखर जाती है ।

(३) पद्य की प्रथम चार पंक्तियों का भावार्थ लिखिए ।

उपयोजित लेखन

'रेल की आत्मकथा' विषय पर लगभग सौ शब्दों में निबंध लिखिए ।

76RBN9

५. भाषा का प्रश्न

(पूरक पठन)

– महादेवी वर्मा

भाषा मानव की सबसे रहस्यमय तथा मौलिक उपलब्धि है । वैसे बाह्य जगत भी ध्वनिसंकुल है तथा मानस जगत को भी अपने सुखद-दुखद जीवन स्थितियों को व्यक्त करने के लिए कंठ और स्वर प्राप्त हैं ।

चेतन ही नहीं, जड़ प्रकृति के गत्यात्मक परिवर्तन भी ध्वनि द्‌वारा अपना परिचय देते हैं । वज्रपात से लेकर फूल के खिलने तक ध्वनि के जितने कठिन-कोमल आरोह-अवरोह हैं, निदाघ के हरहराते बवंडर से लेकर वासंती पुलक तक लय की विविधतामयी मूर्च्छना है, उसे कौन नहीं जानता । पशु-पक्षी जगत के सम-विषम स्वरों की संख्यातीत गीतिमालाओं से भी हम परिचित हैं परंतु ध्वनियों के इस संघात को हम भाषा की संज्ञा नहीं देते, क्योंकि इसमें वह अर्थवत्ता नहीं रहती जो हृदय और बुद्‌धि को समान रूप से तृप्ति तथा बोध दे सके ।

मानव कंठ को परिवेश विशेष में जीवनाभिव्यक्ति के लिए जो ध्वनियाँ दायभाग में प्राप्त हुई थीं, उन्हें उसके अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा से सर्वथा नवीन रूपों में अवतरित किया । उसने अपनी जीवनाभिव्यक्ति ही नहीं, उसके विस्तृत विविध परिवेश को भी ऐसे शब्द संकेतों में परिवर्तित कर लिया, जो विशेष ध्वनि मात्र से किसी वस्तु को ही नहीं, अशरीरी भाव और बोध को भी रूपायित कर सके और तब उस वाणी के द्‌वारा उसने अपने रागात्मक संस्कार तथा बौद्‌धिक उपलब्धियों को इस प्रकार संग्रंथित किया कि वे प्रकृति तथा जीवन के क्षण-क्षण परिवर्तित रूपों को मानव चेतना में अक्षर निरंतरता देने को रहस्यमयी क्षमता पा सके ।

मनुष्य की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति में सबसे अधिक समर्थ और अक्षर भाषा ही होती है । वही मानव के आंतरिक तथा बाह्य जीवन के परिष्कार का आधार है, क्योंकि बौद्‌धिक क्रिया तथा मनोरागों की अभिव्यक्ति तथा उनके परस्पर संबंधों को संग्रथित करने में भाषा एक स्निग्ध किंतु अटूट सूत्र का कार्य करती है । भाषा में स्वर, अर्थ, रूप, भाव तथा बोध का ऐसा समन्वय रहता है, जो मानवीय अभिव्यक्ति को व्यष्टि से समष्टि तक विस्तार देने में समर्थ है ।

मानव व्यक्तित्व के समान ही उसकी वाणी का निर्माण दोहरा होता है । जैसे मनुष्य का व्यक्तित्व बाह्य परिवेश के साथ उसके अंतर्जगत के घात-प्रतिघात, अनुकूलता-प्रतिकूलता, समन्वय आदि विविध परिस्थितियों द्‌वारा निर्मित होता चलता है, उसी प्रकार उसकी भाषा असंख्य

परिचय

जन्म : १९०७, फर्रूखाबाद (उ.प्र)
मृत्यु : १९८७, इलाहाबाद (उ.प्र)
परिचय : महादेवी वर्मा जी छायावादी कवियों में प्रमुख स्थान रखती हैं । आपकी रचनाओं में पीड़ा, दर्द, रहस्यवाद, प्रकृति चित्रण यत्र-तत्र, सर्वत्र दिखाई पड़ते हैं । आपने गद्‌य-पद्‌य दोनों विधाओं में समर्थ लेखन किया है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'ठाकुर जी भोले हैं', 'आज खरीदेंगे हम ज्वाला' (बाल कविता संकलन), 'स्मृति की रेखाएँ', 'मेरा परिवार' 'अतीत के चलचित्र' (रेखाचित्र), 'यामा', 'रश्मि', 'नीहार', 'सांध्यगीत' 'दीपाशिखा', 'सप्तपर्णा' (कविता संग्रह) आदि ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत भाषण में लेखिका ने भाषा के महत्त्व को स्थापित करते हुए इसे आलोक की दीपशिखा बताया है । भाषा के अभाव में विकास के सारे मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं । भाषा के माध्यम से ही व्यावहारिक जीवन का लेन-देन सहज एवं सुकर बन पाता है । महादेवी जी का मानना है कि विविध भाषाओं ने अपने देश को समृद्‌धशाली बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है ।

जटिल-सरल, अंतर-बाह्य प्रभावों में गल-ढलकर परिणति पाती है । कालांतर में हमारा समग्र अंतर्जगत, हमारी संपूर्ण बौद्‌धिक तथा रागात्मक सत्ता शब्द संकेतों से इस प्रकार संग्रंथित हो जाती है कि एक शब्द संकेत अनेक अप्रस्तुत मनोराग जगा देने की शक्ति पा जाता है ।

भाषा सीखना तथा भाषा जीना एक-दूसरे से भिन्न हैं तो आश्चर्य की बात नहीं । प्रत्येक भाषा अपने ज्ञान और भाव की समृद्‌धि के कारण ग्रहण करने योग्य है, परंतु समग्र बौद्‌धिक तथा रागात्मक सत्ता के साथ जीना अपनी सांस्कृतिक भाषा के संदर्भ में ही सत्य है । कारण स्पष्ट हैं । ध्वनि का ज्ञान आत्मानुभव से तथा अर्थ का बुद्‌धि से प्राप्त होता है । शैशव में शब्द हमारे लिए ध्वनि संकेत मात्र होते हैं । यदि हम ध्वनि पहचानने से पहले उसके अर्थ से परिचित हो जावें तो हम संभवतः बोलना न सीख सकें ।

अतः यह कहना सत्य है कि वाणी आत्मानुभूति की मौलिक अभिव्यक्ति है, जो समष्टिभाव से अपने विस्तार के लिए भाषा का रूप धारण करती है । इसीलिए पाणिनि ने कहा हैः-‘‘आत्मा बुद्‌धया समेत्यार्थान् मनोयुक्त विवक्षया ।’’ अर्थात बुद्‌धि के द्‌वारा सब अर्थों का आकलन करके मन में बोलने की इच्छा उत्पन्न करती है ।

मानव व्यक्तित्व जैसे प्राकृतिक परिवेश से प्रभावित होता है, उसी प्रकार उसकी भाषा भी अपनी धरती से प्रभाव ग्रहण करती है और यह प्रभाव भिन्नता का कारण हो जाता है । भाषा संबंधी बाह्य भिन्नताएँ पर्वत की ऊँची-नीची अनमिल श्रेणियाँ न होकर एक ही सागरतल पर बनने वाली लहरों से समानता रखती हैं । उनकी भिन्नता समष्टि की गति की निरंतरता बनाए रखने का लक्ष्य रखती है, उसे खंडित करने का नहीं ।

प्रत्येक भाषा ऐसी त्रिवेणी है, जिसकी एक धारा व्यावहारिक जीवन के आदान-प्रदान सहज करती है, दूसरी मानव की बुद्‌धि और हृदय की समृद्‌धि को अन्य मानवों के बुद्‌धि तथा हृदय के लिए संप्रेषणशील बनाती है और तीसरी अंतःसलिला के समान किसी भेदातीत स्थिति की संयोजिका है ।

हमारे विशाल देश की रूपात्मक विविधता उसकी सांस्कृतिक एकता की पूरक रही है, उसकी विरोधिनी नहीं । इसी से विशेष जीवन पद्‌धति चिंतन, रागात्मक दृष्टि, सौंदर्य बोध आदि के संबध में तत्त्वगत एकता ने देश के व्यक्तित्व को इतने विघटनधर्मा विवर्तनों में भी संश्लिष्ट रखा है ।

धरती का कोई खंड, नदी, पर्वत, समतल आदि का संघात कहा जा सकता है । मनुष्यों की आकस्मिक रूप से एकत्र भीड़ मानव समूह की संज्ञा पा सकती है । राष्ट्र की गरिमा पाने के लिए भूमिखंड विशेष की ही नहीं, एक सांस्कृतिक दायभाग के अधिकारी और प्रबुद्‌ध मानव समाज की भी आवश्यकता होती है, जो अपने अनुराग की दीप्ति से उस भूमिखंड के हर कण

‘भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है’ इसपर चर्चा कीजिए ।

‘बुरी संगति किसी को भी दिशाहीन बना सकती है’ इसपर तर्क सहित अपने विचार लिखिए ।

को इस प्रकार उद्‌भासित कर दे कि वह एक चिर नवीन सौंदर्य में जीवित और लयवान हो सके।

कहने की आवश्यकता नहीं कि हिमकिरीटिनी भारत भूमि ऐसी ही राष्ट्र प्रतिमा है । ऐसे महादेश में अनेक भाषाओं की स्थिति स्वाभाविक है, किंतु उनमें से प्रत्येक भाषा एक वीणा के ऐसे सधे तार के समान रहकर ही सार्थकता पाती है, जो रागिनी की संपूर्णता के लिए ही अपनी झंकार में अन्य तारों से भिन्न है ।

सभी भारतीय भाषाओं ने अपनी चिंतना तथा भावना की उपलब्धियों से राष्ट्र जीवन को समृद्‌ध किया है । उनकी देशगत भिन्नता, उनकी तत्त्वगत एकता से प्राणवती होने के कारण महार्घ है ।

ज्वाला धरती की गहराई में कोयले को हीरा बनाने की क्रिया में संलग्न रहती है, और सीप जल की अतल गहनता में स्वाति की बूँद से मोती बनाने की साधना करती है । न हीरक धरती की ज्वाला को साथ लाता है, न मुक्ता जल की गहराई को, परंतु वे समान रूप से मूल्यवान रहेंगे ।

हम जिस संक्रांति के युग का अतिक्रमण कर रहे हैं, उसमें मानव जीवन की त्रासदी का कारण संवेदनशीलता का आधिक्य न होकर उसका अभाव है । हमारी राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ हमारी मानसिक परतंत्रता का ऐसा ग्रंथि बंधन हुआ है, जिसे न हम खोल पाते हैं, न काट पाते हैं । परिणामतः हमारे विकास के मार्ग को हमारी छाया ही अवरुद्‌ध कर रही है।

अतीत में हमारे देश ने अनेक अंधकार के आयाम पार किए हैं, परंतु इसके चिंतकों, साधकों तथा साहित्य सृष्टाओं की दृष्टि के आलोक ने ही पथ की सीमाओं को उज्ज्वल रखकर उसे अंधकार में खोने से बचाया है।

भाषा ही इस आलोक के लिए संचारिणी दीपशिखा रही है ।

पावका नः सरस्वती ।

('संभाषण' भाषण संग्रह से)

— ० —

श्रवणीय

अपनी भाषा को समृद्‌ध करने के लिए दूरदर्शन पर आने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों को देखिए तथा आकलन सहित सुनिए ।

पठनीय

हरिशंकर परसाई जी का 'टॉर्च बेचने वाले' हास्य-व्यंग्य निबंध पढ़िए और इसकी प्रमुख बातें लिखिए ।

शब्द संसार

गत्यात्मक वि.(सं.) = गतिशील

निदाघ पुं.सं.(सं.) = गरमी, ग्रीष्म ऋतु

मूर्च्छना स्त्री.सं.(सं.) = मूर्च्छा

दायभाग पुं.सं.(सं.) = पैतृक धन, संपत्ति को उत्तराधिकारी में बाँटने की व्यवस्था

विवर्तन पुं.सं.(सं.) = घूमना, चक्कर

संश्लिष्ट वि.(सं.) = संश्लेषित (जोड़ना, मिलाना)

प्रबुद्‌ध वि.(सं.) = जागा हुआ, ज्ञानी

उद्‌भासित वि.(सं.) = प्रकाशित, सुशोभित, चमकता हुआ

स्वाध्याय

✲ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(१) कारण लिखिए :

ध्वनियों के संघात को भाषा की संज्ञा नहीं दे सकते ।

१.

२.

भाषा ग्रहण करने योग्य है

१.

२.

(२) संजाल पूर्ण कीजिए :

देश की एकता बनाए रखने वाले घटक

____

____

____

____

(३) कृति कीजिए :

अभिव्यक्ति को एक व्यक्ति से समाज तक पहुँचाने वाले घटक

------

(४) लिखिए :

१. भाषा के कार्य
- १. -------
- २. -------

२. राष्ट्र को गरिमा प्रदान करने वाले घटक
- १. -------
- २. -------

(५) पाठ में प्रयुक्त विलोम शब्दों की जोड़ियाँ ढूँढ़कर लिखिए :

विलोम शब्द जोड़ियाँ			
______ × ______	______ × ______	______ × ______	______ × ______
______ × ______	______ × ______	______ × ______	______ × ______
______ × ______	______ × ______	______ × ______	______ × ______
______ × ______	______ × ______	______ × ______	______ × ______

अभिव्यक्ति 'भाषा सेतु का काम करती है', इसपर अपने विचार लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) निम्नलिखित वाक्यों में आए अव्ययों को रेखांकित कीजिए और कोष्ठक में उनके भेद लिखिए :

१. लड़का मेरे पास बैठा और धीरे-धीरे बातें करने लगा । (.............), (.............)

२. 'अरे पुत्तर !' बूढ़ा इतना ही बोल पाया कि उर्मि का मोबाइल बज उठा । (.............), (.............)

३. थोड़ी-सी छानबीन से पता चला कि कोलकाता और बनारस में बहुत दूरी नहीं है । (.............), (.............)

४. ''ओह नहीं मल्लिका ! कभी बैठे-बैठे मन उदास हो जाता है ।'' (.............), (.............)

(२) पाठ में प्रयुक्त अव्यय छाँटिए और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

- क्रियाविशेषण अव्यय
  १. ----------- २. ----------- वाक्य = ------------------------------
  ----
- संबंधसूचक अव्यय
  १. ----------- २. ----------- वाक्य = ------------------------------
  ----
- समुच्चयबोधक अव्यय
  १. ----------- २. ----------- वाक्य = ------------------------------
  ----
- विस्मयादिबोधक अव्यय
  १. ----------- २. -----------वाक्य = ------------------------------
  ----

(३) नीचे आकृति में दिए हुए अव्ययों के भेद पहचानकर उनका अर्थपूर्ण स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

अव्यय

काश !
बाद
बल्कि
यदि ...तो
वाह !
अलावा
के लिए
क्योंकि

हाय
प्रायः
और
पास
इसलिए
तरफ
कारण
अच्छा
नहीं .... तो

उपयोजित लेखन 'जैसी करनी वैसी भरनी' इस कहावत के आधार पर कहानी लिखिए ।

६. दो संस्मरण

– *संजय सिन्हा*

हंस और आदमी

आपने कभी हंसों को उड़ते हुए देखा है ?

जरूर देखा होगा । आपने देखा होगा कि बहुत ऊपर आसमान में अंग्रेजी अक्षर 'वी' (v) के आकार में ये उड़ते चले जा रहे होते हैं ।

जब मैं छोटा था और सितंबर-अक्तूबर की हलकी ठंड में घर की छत से कभी हंसों की ये उड़ान दिख जाती तो मैं हैरान रह जाता । ऐसा लगता मानो बहुत से अनुशासित सिपाही सफेद पंखों में लिपटकर हवा में तैरते चले जा रहे हैं ।

मेरे मन में ढेरों सवाल उठते । आखिर ये इस तरह 'वी' आकार बनाकर क्यों उड़ रहे हैं ? ये सब कहाँ जा रहे हैं ? सबसे पीछेवाला सबसे आगे क्यों नहीं आने की कोशिश कर रहा ? बीचवाला क्यों अपनी जगह पर उसी रफ्तार से चला जा रहा है ? क्या किसी ने इन्हें निर्देश दिया है कि ऐसे ही उड़ना है ? कौन है इनका निर्देशक ?

बहुत से सवाल लेकर जब मैं माँ के पास आता, तो माँ मेरा सिर सहलातीं । कहती कि ये मानसरोवर के राजहंस हैं ।

''तो ये सारे हंस जो इस तरह एक गति से उड़ते हैं, उसका क्या मतलब हुआ ?''

''ये आपस में रिश्तेदार हैं ।''

''सबसे आगे वाला उनका नेता होता है । वही उड़ने की रफ्तार और दिशा तय करता है । उसके पंखों को बाकियों से ज्यादा मेहनत करनी होती है । सामने आने वाले खतरों को वह पहले पहचानता है । वह हवा को काटता है, उसके बाद बाकी के हंस हवा को काटते हुए चलते हैं और अपने से पीछे उड़ने वाले हंसों के लिए वह उड़ान को आसान बनाते चलते हैं ।'' माँ कहतीं ।

''लेकिन माँ, सबसे आगे वाला ज्यादा मेहनत करता है और सबसे पीछेवाले के लिए रास्ता आसान बनाता चलता है, ऐसा क्यों ? उससे उसे क्या फायदा ?''

''मैंने कहा न कि ये रिश्तेदार हैं । ये जानते हैं कि कर भला तो हो भला इसलिए ये एक-दूसरे का साथ देते हुए चलते हैं । ये बहुत दूर तक उड़ते हुए चले जाते हैं । ये एक बार में दस घंटे उड़ सकते हैं ।''

परिचय

जन्म : १९६४, पटना (बिहार)

परिचय : संजय सिन्हा जी विगत तीस वर्षों से सक्रिय पत्रकारिता से जुड़े हुए हैं । आपकी कहानियाँ, संस्मरण आदि अनुभवजन्य हैं । आपकी रचनाएँ पत्र-पत्रिकाओं में नियमित छपती रहती हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : '६.१ रिक्टर स्केल' (उपन्यास), 'समय' (संस्मरण संग्रह) ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत प्रथम संस्मरण पक्षियों के प्रतीक लेकर मनुष्य के आत्मबल को मजबूत करने तथा दृढ़निश्चयी होकर सामूहिक जीवन जीने की उपयोगिता को दर्शाता है। इस संस्मरण में सिन्हा जी ने नेतृत्व के गुण, उसकी जवाबदेही को स्पष्ट किया है।

दूसरे संस्मरण में पारिवारिक रिश्तों-संबंधों के महत्व को दर्शाया गया है । किस तरह लेखक के परिवार ने अपरिचितों को सहजता से आश्रय दिया, सहायता की, वह आज के समय में अनुकरणीय है ।

''दस घंटे ?''

''हाँ, बेटा । कई बार उससे भी ज्यादा । इनमें सबसे आगेवाला हंस सबसे अधिक मेहनत करता है । फिर जब वह थकने लगता है तो सबसे पीछेवाला उसकी जगह लेने पहुँच जाता है । ऐसे ही सारे हंस उड़ते हुए अपनी-अपनी जगह बदलते चले जाते हैं । मैंने बताया न, सबसे आगेवाला नेता होता है और वह दूसरे हंसों के लिए उड़ान को आसान बनाता हुआ अपने पंखों से हवा को काटता चलता है । पीछेवाले को कम मेहनत करनी होती है, उसके पीछेवाले को और कम । इस तरह ये बीच हवा में ही सुस्ताते हुए, एक-दूसरे का साथ देते हुए हजारों मील का सफर तय कर लेते हैं ।''

माँ फिर मुझे हंसों की ढेर सारी कहानियाँ सुनातीं । बतातीं कि हंस मोती खाते हैं । हंसों के पास नीर-क्षीर अलग करने का विवेक होता है । वे दूध और पानी को अलग कर सकते हैं। एक बार एक शिकारी ने किसी हंस को मार दिया तो कैसे सिद्‌धार्थ ने उसे बचा लिया । शिकारी ने सिद्‌धार्थ से जब अपना शिकार माँगा तो उन्होंने कैसे उसे समझाया कि मारने वाले से बचाने वाले का हक ज्यादा होता है और फिर मैं उन हंसों के साथ उड़ता हुआ बहुत दूर चला जाता । मेरे पंख तब कमजोर थे, लेकिन मुझसे आगे वाला हंस मेरे लिए उड़ान को आसान बनाता चला जाता । मेरे हिस्से की मेहनत वह करता, और हम साथ-साथ आसमान में बहुत दूर उड़ते चले जाते ।

मेरे मन की उड़ान में सबसे आगे वाला हंस पिता जी की तरह लगता। फिर माँ । फिर चाचा-चाची, हम सारे भाई-बहन और दादी भी ।

दादी तो बूढ़ी हो गई हैं ।

कोई बात नहीं। पिता जी के मजबूत पंख सबके लिए रास्ता बनाते चलेंगे । वे सभी संकटों से दो हाथ-करके सामने दीवार बनकर खड़े रहेंगे । पहले दादी जी ने पिता जी के लिए रास्ता बनाया होगा, अब पिता जी दादी जी के लिए बना रहे हैं । यह परिवार है ।

पिता जी थक जाएँगे, तब ?

तब माँ आगे हो जाएगी । फिर चाचा जी आगे हो जाएँगे और उड़ते-उड़ते मैं भी तो बड़ा हो जाऊँगा, फिर मैं आगे हो जाऊँगा । मैं पिता जी से कहूँगा कि आप आराम कीजिए, मेरे पंख सबके पंखों को आराम देंगे । मेरे पंख सबको साथ लेकर उड़ेंगे ।

जब मैं बड़ा हो जाऊँगा तो सबको हंसों के बारे में बताऊँगा । बताऊँगा कि आदमी भी चाहे तो ऐसे साथ-साथ बहुत दूर तक उड़ सकते हैं ।

एक दिन मैं बड़ा हो गया । बहुत कोशिश की लेकिन आदमी ऐसा

रिश्तों को निभाने की सार्थकता को स्पष्ट करने वाली हुमायूँ और रानी कर्मवती की कहानी सुनिए।

कहाँ होता है ? वह एक बार आगे हो जाता है तो सिर्फ अपने लिए सोचने लगता है । उसे पीछेवालों की चिंता नहीं रहती । कई बार पीछे चलने वाले भी आगे निकलने की होड़ में उस अनुशासन को तोड़ देते हैं । कई बार तो अपने पंखों से दूसरों के लिए हवा काटने की जगह उसके लिए मुश्किलें खड़ी कर देते हैं ।

माँ तो कहती थीं कि भगवान के बनाए सभी जीवों में आदमी सबसे बुद्‌धिमान होता है ।

लेकिन मुझे तो हंस बुद्‌धिमान लगते हैं । सबको साथ लेकर उड़ते हैं । एक दिन में दस घंटे उड़ते हैं । हजारों मील उड़ते हैं । सबसे कमजोर हंस भी उनके साथ उड़ लेता है ।

आदमी ऐसा कहाँ करता है ?

अब माँ नहीं हैं ।

होतीं तो पूछता, ''माँ, इन हंसों को रिश्तों का पाठ किसने पढ़ाया ?''

× × ×

आत्मीय रिश्ते

कई साल पहले एक रात हमारे घर की घंटी बजी । तब हम पटना में रहते थे ।

आधी रात को कौन आया ?

पिता जी बाहर निकले। सामने दो लोग खड़े थे । एक पुरुष और एक महिला । पटनावाले हमारे घर के बरामदे में लोहे की ग्रिल लगी थी, जिसमें हम रात में ताला बंद कर देते और पूरा घर सुरक्षित हो जाता ।

पिता जी ने ताला खोला । पूछा कि आप लोग कौन हैं, कहाँ से आए हैं । उन्होंने पिता जी के हाथ में एक चिट्‌ठी पकड़ाई । पिता जी ने चिट्‌ठी पढ़ी और खुश हो गए । उन्होंने आगंतुकों पर आँख मूँदकर विश्वास कर लिया । उन्होंने हमें आवाज देकर बुलाया और कहा कि ये लोग फलाँ जगह से आए हैं, और इन्हें तुम्हारी बुआ जी ने भेजा है ।

बुआ जी ने भेजा है ? वाह !

अब हमारे लिए ये जानना जरूरी नहीं था कि वह कौन हैं, कहाँ से आए हैं । बुआ जी का कहा पत्थर की लकीर था ।

उन्हें हमारी बुआ जी ने भेजा था, यही जान लेना बहुत बड़ी बात थी । सरदी की वह रात थी, फटाफट उनके सोने के लिए एक बिस्तर का इंतजाम किया गया । हम दोनों भाई दो रजाइयों में लिपटे थे, हमारी एक रजाई ले ली गई और कहा गया कि दोनों भाई एक ही रजाई में घुस जाओ । एक रजाई नये मेहमान को देनी है । हमें याद है, हम पहली बार उनसे मिल रहे थे । पिता जी ने अपनी बड़ी दीदी और उनके पूरे परिवार का हाल पूछा और ये

संभाषणीय

घर में अतिथि के आगमन पर आपको कैसा लगता है, बताइए ।

जान लिया कि वे उनके जानने वाले हैं । मतलब हमारे रिश्तेदार नहीं, बुआ की पहचानवाले हैं।

आने वाली महिला की तबीयत थोड़ी खराब थी और पटना मेडिकल कॉलेज अस्पताल में उनका इलाज होना था । चूँकि वह मेरी बुआ जी को जानते थे और बुआ जी के छोटे भाई का परिवार पटना में था इसलिए ये तो सोचने की बात नहीं थी कि वह कहाँ रहेंगे। वह बिना किसी पूर्व सूचना के हमारे घर पहुँच गए थे । उनकी ट्रेन आनी तो शाम को थी, लेकिन ट्रेन के टाइम से न चलने का बुरा कौन मानता है ।

ट्रेन पाँच घंटे लेट पहुँची थी और हमारे वह मेहमान बिना खाए-पिए आधी रात में हमारे घर पहुँच गए थे ।

फटाफट खाना बना। सोने का जुगाड़ हुआ ।

और सुबह उन्हें अस्पताल पहुँचाने का भी ।

वे कोई सप्ताह भर हमारे घर रहे। हम खूब घुल-मिल गए। हम रोज ठहाके लगाते, साथ खाते और पूरी मस्ती करते। ऐसा लग रहा था मानो हम सदियों से एक-दूसरे को जानते हों । बुआ जी ने तिल की मिठाई भेजी थी । दिल्ली में उसे गजक कहते हैं, हमारे यहाँ सब तिलकुट कहते थे । हम सबने तिल और गुड़ की उस मिठाई को खूब मजे लेकर खाया । हमारी बुआ जी सारे संसार का ख्याल रखती थीं और भाई-भतीजों में तो उनकी आत्मा ही बसती थी ।

उन्होंने अपने परिचित भेज दिए, हमने उन्हें रिश्तेदार बना लिया ।

आप जानकर हैरान रह जाएँगे कि हम दुबारा कभी उन रिश्तेदारों से नहीं मिल पाए जो उस रात हमारे घर आए थे । लेकिन हम सब भाई-बहनों के जहन में उस रिश्ते की याद आज भी ताजा है । हम आज भी उनके आने और अपनी रजाई छिन जाने को याद कर खुश होते हैं ।

जब मैं पच्चीस साल पहले भोपाल से दिल्ली नौकरी करने आया था तो मेरे मामा जी ने एक चिट्ठी अपने एक जज दोस्त के नाम लिखकर मुझे भेज दिया था । दिल्ली के किदवई नगर में वह रहते थे। मैं चिट्ठी लेकर उनके घर पहुँच गया । विश्वास कीजिए, जितने दिन उनके घर रहा, परिवार के एक सदस्य की हैसियत से रहा । उनकी बेटियाँ मेरी बहनें बन गईं, और उनका बेटा मेरा भाई । मुझे कार्यालय से आने में देर होती तो वे चिंतित होते। मेरी राह तकते ।

मेरे एक परिजन ने जानना चाहा है कि मैं हर रोज माँ, भाई, पत्नी, पिता और तमाम रिश्तों पर ही क्यों लिखता हूँ।

उनका कहना है कि ये सारे रिश्ते तो उनके पास भी हैं । फिर रोज-रोज रिश्तों की चर्चा क्यों ? बात तो सही है ।

अपने प्रिय प्राणी की विविध नस्लों की जानकारी अंतरजाल से प्राप्त करके लिखिए ।

लेकिन फिर मैं जब सोचने बैठता हूँ तो यही सोचने लगता हूँ कि क्या सबके पास रिश्ते हैं ? क्या सचमुच रिश्ते हैं ?

कल मेरे पास किसी ने रिश्तों पर कुछ सुंदर पंक्तियाँ लिखकर भेजी।

आज मैं बहुत छोटे में उन्हें आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ। आप बहुत गंभीरता से उन पंक्तियों को समझने की कोशिश कीजिएगा । मुझे यकीन है कि आपने हजारों बार पहले भी ये पंक्तियाँ पढ़ी होंगी लेकिन आज एक बार मेरे कहने से पढ़िए। फिर मुझे बताइए कि क्या सचमुच हम सब उन पंक्तियों के किसी कोने के करीब हैं ।

''अकेले हम सिर्फ बोल सकते हैं, लेकिन रिश्तों के बीच बातें करते हैं। अकेले हम मजे कर सकते हैं, लेकिन रिश्तों के बीच उत्सव मनाते हैं। अकेले हम मुसकरा सकते हैं, लेकिन रिश्तों के बीच हम ठहाके लगाते हैं।''

और आखिरी लाइन यह कि ''यह सब सिर्फ इनसानी रिश्तों में ही संभव है।''

मैं रोज-रोज रिश्तों की कहानियाँ सिर्फ इसलिए लिखता हूँ क्योंकि सच यही है कि आज आदमी सबके बीच रहकर भी सबसे अकेला हो गया है । सारे रिश्ते हैं, लेकिन दरअसल कोई रिश्ता नहीं बचा है । हम सब अपनी जिंदगी जीने की तैयारी में इतने व्यस्त हो गए हैं कि हमारे पास स्वयं के लिए भी समय नहीं रहा ।

अब मैं कहीं जाता हूँ तो होटल बुक कराता हूँ। पता नहीं सारे रिश्ते कहाँ चले गए । आपमें से अगर किसी के पास बुआ के उस पड़ोसी का कोई रिश्ता बचा है, तो आप भाग्यशाली हैं।

मैं तो अपने उसी भाग्य की तलाश में हर रोज मुँह उठाए आपके पास पहुँच जाता हूँ।

('समय' संस्मरण संग्रह से)

— ० —

पठनीय

डाक विभाग की ई-सेवाओं के बारे में जानकारी पढ़िए।

शब्द संसार

रफ्तार स्त्री.सं.(फा.) = गति
इनसानी वि.(दे.) = मानवीय
यकीन पुं.सं.(अं.) = विश्वास
जहन पुं.सं.(अ.) = समझ, बुद्धि

मुहावरे

संकट से दो हाथ करना = मुकाबला करना
पत्थर की लकीर होना = पक्की बात होना

कहावत

कर भला तो हो भला = परोपकार से अपना उपकार होना

✻ सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :–

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

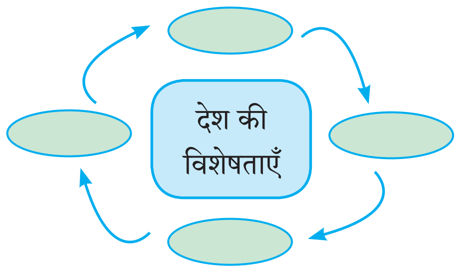

(२) कारण लिखिए :

१. लेखक रोज-रोज रिश्तों की कहानियाँ लिखते हैं – ....

२. हमारे वे मेहमान आधी रात घर पहुँचे – ....

(३) उत्तर लिखिए :

१. रजाइयों की संख्या –

२. महिला का इलाज यहाँ हुआ –

(४) कृति कीजिए :

१. पाठ में आए शहरों के नाम –

२. तिल से बनी मिठाइयों के नाम –

(५) अंतर स्पष्ट कीजिए :

कर सकते हैं	
अकेले हम	रिश्तों के बीच हम

(६) कृदंत तथा तद्धित शब्द बनाइए :

बचना, मानव, उड़ना, चलना, माँगना, व्यक्ति, संस्कृति, अधिकार, शिक्षा, सजना, लिखना, बैठना, इच्छा, क्षण, दौड़ना, आत्मा

कृदंत	तद्धित
--------------	--------------
--------------	--------------
--------------	--------------
--------------	--------------
--------------	--------------
--------------	--------------
--------------	--------------
--------------	--------------

अभिव्यक्ति 'सहकारिता ही जीवन है' विषय पर अपने विचार लिखिए।

भाषा बिंदु

(१) निम्नलिखित संधि विच्छेद की संधि कीजिए और भेद लिखिए :

अनु.	संधि विच्छेद	संधि शब्द	संधि भेद
१.	दु:+लभ	--------	--------
२.	महा+आत्मा	--------	--------
३.	अन्+आसक्त	--------	--------
४.	अंत:+चेतना	--------	--------
५.	सम्+तोष	--------	--------
६.	सदा+एव	--------	--------

(२) निम्नलिखित शब्दों का संधि विच्छेद कीजिए और भेद लिखिए :

अनु.	शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
१.	सज्जन	+	
२.	नमस्ते	+	
३.	स्वागत	+	
४.	दिग्दर्शक	+	
५.	यद्यपि	+	
६.	दुस्साहस	+	

(३) निम्नलिखित आकृति में दिए गए शब्दों का विच्छेद कीजिए और संधि के भेद लिखिए :

दिग्गज
साप्ताहिक
निश्चल
भानूदय
निस्संदेह
सूर्यास्त

विग्रह		भेद
________ + ________		(________)
________ + ________		(________)
________ + ________		(________)
________ + ________		(________)
________ + ________		(________)
________ + ________		(________)
________ + ________		(________)
________ + ________		(________)

(४) पाठों में आए संधि शब्द छाँटकर उनका विच्छेद कीजिए और संधि का भेद लिखिए :

उपयोजित लेखन 'मेरा प्रिय कवि/लेखक' विषय पर सौ शब्दों में निबंध लिखिए ।

779ZRJ

७. हिम

– नरेश मेहता

हिम, केवल हिम
केवल चलना
इस कठोर, ठंडी तापस प्रशांतता पर
केवल चलना ऊर्ध्व
ऊर्ध्वतम ही है चलना
जैसे पृथिवी चलकर गौरीशंकर बनती !
छूट गए पीछे
कस्तूरी मृगवाले वे
मधु मानव-से उत्सव जंगल,
ग्रीष्म तपे
तँबियारे झरे पात की
वे वनानियाँ,
गिरे चीड़फूलों से लदी भूमि
औ' औषधियों के वल्कल पहने
परम हितैषी वृक्ष
सभी कुछ छूट गए ।
नाना वर्ण-गंध के फूलों वाली
उपत्यकाएँ
देव-अप्सराओं के परिधान सरीखी ।
रंग-बिरंगे डैनों वाले
वे पाखीदल
और साँझ का देवदार वन वाला उनका
वह आकुल आरण्यक कूजन,
जैसे आश्रम कन्याओं की गोपन बातें ।
कैसे अंधकार उतरा करता था ।
वन प्रांतर में !
प्रत्येक पेड़ से
कुहरे जैसा आलिंगित हो
अंधकार तब भर उठता था ।
पर इस सबसे असंपृक्त रहता था ।
केवल शब्द, नदी का

परिचय

जन्म : १९२२, शाजापुर (म.प्र.)
मृत्यु : २०००
परिचय : 'दूसरा सप्तक' के प्रमुख कवि के रूप में प्रसिद्ध श्री नरेश मेहता उन रचनाकारों में से हैं जो भारतीयता की अपनी गहरी दृष्टि के लिए जाने जाते हैं । आपकी भाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है । आपके काव्य में रूपक, मानवीकरण, उपमा, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास आदि अलंकारों का प्रयोग हुआ है । आपको ज्ञानपीठ सम्मान प्राप्त हुआ है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'चैत्या', 'अरण्या', 'उत्सवा', 'वनपाखी सुनो'(काव्य संग्रह), 'उत्तर कथा'(दो भाग), 'डूबते मस्तूल', 'दो एकांत (उपन्यास)', 'महाप्रस्थान' (खंडकाव्य), 'कितना अकेला आकाश'(यात्रा संस्मरण) 'शबरी' आदि ।

और हवा का
इस उन्मुक्त हवा में
चीड़ों के वन
झरनों से कलकल करते,
चीड़फूल-सा कैसा सूर्योदय होता था ।
प्रत्येक मोड़ पर
दक्षपुत्रियों-सी मिलने वाली वे उद्दाम
किंतु संकोची नदियाँ,
चट्टानों पर लहर फनों का
धुला-धुला-सा वह कोलाहल,
हर क्षण
घाटी या कि नदी में
गिर सकने वाली वे
पर्वत थामे चली जा रहीं
पगवाटें भी छूट गईं
सब छूट गईं
जैसे सांसारिकताएँ थीं ये भी ।

(खंडकाव्य 'महाप्रस्थान' के यात्रा पर्व से)

—— ० ——

पद्य संबंधी

प्रस्तुत पद्यांश में नरेश मेहता जी ने उस समय का वर्णन किया है जब पांडव अपना राज्यभार राजा परीक्षित को सौंपकर 'स्वर्गारोहण' या 'महाप्रस्थान' के लिए निकल पड़े थे । पांडवों ने महाप्रस्थान हिमालय की ओर किया था । यहाँ कवि ने आरोहण के मार्ग का वर्णन किया है । रास्ते की कठिनाइयाँ, घाटी-चोटी, बर्फ, वन, प्राणी-नदी आदि का मनोरम वर्णन किया है । मेहता जी का मानना है कि हिमालय जड़ भी है और चेतन भी । उसकी नदियाँ, चोटियाँ, वन सब चेतना रूप हैं ।

शब्द संसार

तापस वि. पुं.(सं.) = तप करने वाला
पृथिवी स्त्री.सं.(सं.) = पृथ्वी, धरती
तँबियारे वि.(हिं.) = ताँबे के रंग के
चीड़ पुं.सं.(हिं.) = एक सदाबहार वृक्ष
उपत्यका स्त्री.सं.(सं.) = घाटी, तराई, पताका
डैना पुं.सं.(हिं.) = बड़ा पंख
पाखीदल पुं. सं.(हिं.) = पंखों का समूह
आकुल वि.(सं.) = बेचैन, परेशान
प्रांतर पुं.सं.(सं.) = निर्जन पथ, क्षेत्र
असंपृक्त वि.(सं.) = जो किसी के साथ मिला या जुड़ा न हो, अलग

✲ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(१) एक शब्द में उत्तर लिखिए :

१. पृथिवी चलकर बनती = ____________

२. धुला-धुला-सा = ____________

३. पर्वतों को थामकर चली जाने वाली = ____________

४. आश्रम की कन्याएँ करतीं = ____________

(२) कविता में इस अर्थ के आए हुए शब्द :

शोर	निरंकुश	स्वतंत्र	हित चाहने वाले
--------	--------	--------	--------

(३) कविता में आए प्राकृतिक घटक :

--------	--------	--------	--------

(४) विशेषताएँ लिखिए :

वृक्ष ____________, प्रशांतता ____________, पाखीदल का समूह ____________,
नदियाँ ____________, हवा ____________, झरने ____________ ।

(५) कविता की अंतिम छह पंक्तियों का भावार्थ लिखिए ।

(६) निम्न मुद्दों के आधार पर पद्य विश्लेषण कीजिए :

१. रचनाकार का नाम
२. रचना का प्रकार
३. पसंदीदा पंक्ति
४. पसंद होने का कारण
५. रचना से प्राप्त प्रेरणा

उपयोजित लेखन

अपने परिसर में स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में 'रक्तदान शिविर' का आयोजन करना है, सहायक आयोजक के नाते विज्ञापन बनाइए ।

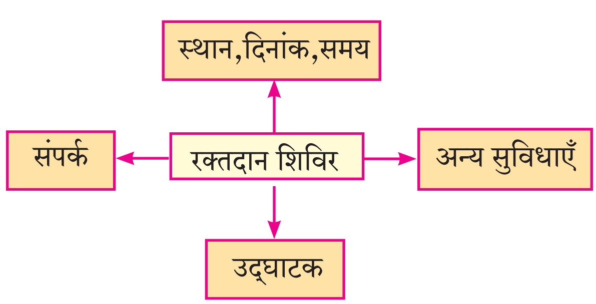

८. प्रण

– *मोहन राकेश*

पात्र

अंबिका : ग्राम की एक वृद्‌धा **(मल्लिका की माँ)**

मल्लिका : अंबिका की बेटी

अंक एक

[परदा उठने से पूर्व हल्का-हल्का मेघ गर्जन और वर्षा का शब्द, जो परदा उठने के अनंतर भी कुछ क्षण चलता रहता है । फिर धीरे-धीरे धीमा पड़कर विलीन हो जाता है ।]

परदा धीरे-धीरे उठता है ।

[एक साधारण प्रकोष्ठ । दीवारें लकड़ी की हैं परंतु निचले भाग में चिकनी मिट्‌टी से पोती गई हैं । बीच-बीच में गेरू से स्वस्तिक चिह्‌न बने हैं ।

प्रकोष्ठ में एक ओर चूल्हा है । आस-पास मिट्‌टी और काँसे के बरतन सहेजकर रखे हैं । दूसरी ओर, झरोखे से कुछ हटकर तीन-चार बड़े-बड़े कुंभ हैं जिनपर कालिख और काई जमी है ।

चूल्हे के निकट दो चौकियाँ हैं । उन्हीं में से एक पर बैठी अंबिका छाज में धान फटक रही है । एक बार झरोखे की ओर देखकर वह लंबी साँस लेती है, फिर व्यस्त हो जाती है ।

सामने का द्‌वार खुलता है और मल्लिका गीले वस्त्रों में काँपती-सिमटती अंदर आती है । अंबिका आँखें झुकाए व्यस्त रहती है । मल्लिका क्षण भर ठिठकती है, फिर अंबिका के पास आ जाती है ।]

मल्लिका : आषाढ़ का पहला दिन और ऐसी वर्षा माँ ! ... ऐसी धारासार वर्षा ! दूर-दूर तक की उपत्यकाएँ भीग गईं ।... और मैं भी तो ! देखो न माँ, कैसी भीग गई हूँ ! **(अंबिका उसपर सिर से पैर तक एक दृष्टि डालकर फिर व्यस्त हो जाती है । मल्लिका घुटनों के बल बैठकर उसके कंधे पर सिर रख देती है ।)** गई थी कि दक्षिण से उड़कर आती बकुल पंक्तियों को देखूँगी, और देखो सब वस्त्र भिगो आई हूँ । **(मल्लिका अपने केशों को चूमकर खड़ी होती हुई ठंड से सिहर जाती है ।)** सूखे वस्त्र कहाँ हैं माँ ? इस तरह खड़ी रही तो जुड़ा जाऊँगी । तुम बोलती क्यों नहीं ? **(अंबिका आक्रोश की दृष्टि से उसे देखती है ।)**

अंबिका : सूखे वस्त्र अंदर तल्प पर हैं ।

मल्लिका : तुमने पहले से ही निकालकर रख दिए ? **(अंदर को चल देती**

परिचय

जन्म : १९२५, अमृतसर (पंजाब)
मृत्यु : १९७२, नई दिल्ली
परिचय : नई कहानी आंदोलन के सशक्त हस्ताक्षर मोहन राकेश जी आधुनिक हिंदी नाटक की विकास यात्रा में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं । आप हिंदी के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न लेखक और उपन्यासकार हैं । आपने हिंदी नाटकों को फिर से नाट्‌य रंगमंच से जोड़ा ।
प्रमुख कृतियाँ : 'अँधेरे बंद कमरे', 'अंतराल', 'न आने वाला कल' (उपन्यास), 'क्वार्टर', 'पहचान', 'वारिस' (कहानी संग्रह), 'आषाढ़ का एक दिन', 'लहरों के राजहंस' 'आधे-अधूरे' (नाटक), 'परिवेश' (निबंध संग्रह) आदि ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत नाट्‌यांश में प्राकृतिक दृश्यों का मनोरम वर्णन किया गया है । यहाँ तत्कालीन देशकाल, परिस्थिति, माँ-पुत्री के संबंध आदि की झलक देखने को मिलती है ।

है ।) तुम्हें पता था । मैं भीग जाऊँगी और मैं जानती थी तुम चिंतित होगी । परंतु माँ... **(द्‌वार के पास मुड़कर अंबिका की ओर देखती है ।)** मुझे भीगने का तनिक खेद नहीं । भीगती नहीं तो आज मैं वंचित रह जाती । **(द्‌वार से टेक लगा लेती है ।)** चारों ओर धुआँरे मेघ घिर आए थे । मैं जानती थी वर्षा होगी । फिर भी मैं घाटी की पगडंडी पर नीचे-नीचे उतरती गई । एक बार मेरा अंशुक भी हवा ने उड़ा दिया । फिर बूँदें पड़ने लगीं । वस्त्र बदल लूँ, फिर आकर तुम्हें बताती हूँ । वह बहुत अद्‌भुत अनुभव था माँ, बहुत अद्‌भुत । **(अंदर चली जाती है । बाहर आ जाती है ।)** माँ, आज के क्षण मैं कभी नहीं भूल सकती । सौंदर्य का ऐसा साक्षात्कार मैंने कभी नहीं किया । मैं उसे छू सकती थी, पी सकती थी । तभी मुझे अनुभव हुआ कि वह क्या है जो भावना को कविता का रूप देता है । मैं जीवन में पहली बार समझ पाई कि क्यों कोई पर्वत शिखरों को सहलाती मेघ मालाओं में खो जाता है, क्यों किसी को अपने तन-मन की अपेक्षा आकाश में बनते-मिटते चित्रों का इतना मोह हो रहता है । क्या बात है माँ ? इस तरह चुप क्यों हो ?

अंबिका : देख रही हो मैं काम कर रही हूँ ।

मल्लिका : काम तो तुम हर समय करती हो परंतु हर समय इस तरह चुप नहीं रहती । **(अंबिका के पास आ बैठती है । अंबिका चुपचाप धान फटकती रहती है । मल्लिका उसके हाथ से छाज ले लेती है ।)** मैं तुम्हें काम नहीं करने दूँगी ।... मुझसे बात करो ।

अंबिका : क्या बात करूँ ?

मल्लिका : कुछ भी कहो । मुझे डाँटो कि भीगकर क्यों आई हूँ । या कहो कि तुम थक गई हो, इसलिए शेष धान मैं फटक दूँ । या कहो कि तुम घर में अकेली थीं, इसलिए तुम्हें अच्छा नहीं लग रहा था ।

अंबिका : मुझे सब अच्छा लगता है और मैं घर में दुकेली कब होती हूँ ? तुम्हारे यहाँ रहते मैं अकेली नहीं होती ?

मल्लिका : मैं तुम्हें काम नहीं करने दूँगी । मेरे घर में रहते भी तुम अकेली होती हो ? कभी तो मेरी भर्त्सना करती हो कि मैं घर में रहकर तुम्हारे सब कामों में बाधा डालती हूँ और कभी कहती हो... **(पीठ के पीछे से उसके गले में बाँहें डाल देती है ।)** मुझे बताओ तुम इतनी गंभीर क्यों हो ?

अंबिका : दूध औटा दिया है । शर्करा मिला लो और पी लो .... ।

पठनीय

कवि कालिदास से संबंधित जानकारी पुस्तकालय से पढ़िए और मुख्य बातें लिखिए ।

मल्लिका : नहीं, तुम पहले बताओ ।

अंबिका : और जाकर थोड़ी देर तल्प पर विश्राम कर लो । मुझे अभी ... ।

मल्लिका : नहीं माँ, मुझे विश्राम नहीं करना है । थकी कहाँ हूँ जो विश्राम करूँ ? मुझे तो अब भी अपने में बरसती बूँदों के पुलक का अनुभव हो रहा है । तुम बताती क्यों नहीं हो ? ऐसे करोगी तो मैं भी तुमसे बात नहीं करूँगी । **(अंबिका कुछ न कहकर आँचल से आँखें पोंछती है और उसे पीछे से हटाकर पास की चौकी पर बैठा देती है । मल्लिका क्षण भर चुपचाप उसकी ओर देखती रहती है ।)** क्या हुआ है, माँ ? तुम रो क्यों रही हो ?

अंबिका : कुछ नहीं मल्लिका ! कभी बैठे-बैठे मन उदास हो जाता है ।

मल्लिका : बैठे-बैठे मन उदास हो जाता है, परंतु बैठे-बैठे रोया तो नहीं जाता । तुम्हें मेरी सौगंध है माँ, जो मुझे नहीं बताओ । **(दूर कुछ कोलाहल और घोड़ों की टापों का शब्द सुनाई देता है । अंबिका उठकर झरोखे के पास चली जाती है । मल्लिका क्षण भर बैठी रहती है, फिर वह भी जाकर झरोखे से देखने लगती है । टापों का शब्द पास आकर दूर चला जाता है ।)**

मल्लिका : ये कौन लोग हैं माँ ?

अंबिका : संभवतः राज्य के कर्मचारी हैं ।

मल्लिका : ये यहाँ क्या कर रहे हैं ?

अंबिका : जाने क्या कर रहे हैं ! कभी वर्षों में ये आकृतियाँ यहाँ दिखाई देती हैं और जब भी दिखाई देती हैं, कोई-न-कोई अनिष्ट होता है । कभी युद्ध की सूचना आती है, जब तुम्हारे पिता की मृत्यु हुई, तब भी मैंने ये आकृतियाँ यहाँ देखी थीं । **(मल्लिका सिर से पैर तक सिहर जाती है ।)**

मल्लिका : परंतु आज ये लोग यहाँ किसलिए आए हैं ?

अंबिका : न जाने किसलिए आए हैं । **(अंबिका फिर छाज उठाने लगती है, परंतु मल्लिका उसे बाँह से पकड़कर रोक लेती है ।)**

मल्लिका : माँ, तुमने बात नहीं बताई । **(अंबिका पल भर उसे स्थिर दृष्टि से देखती रहती है । उसकी आँखें झुक जाती हैं ।)**

अंबिका : अग्निमित्र आज लौट आया है ।

मल्लिका : लौट आया है ? कहाँ से ?

अंबिका : जहाँ मैंने उसे भेजा था ।

मल्लिका : तुमने भेजा था ? किंतु मैंने तुमसे कहा था, अग्निमित्र को कहीं भेजने की आवश्यकता नहीं है । **(क्रमशः स्वर में और उत्तेजना आ जाती है ।)** तुम जानती हो मैं विवाह नहीं करना

कोई नाटक का अंश सुनकर कक्षा में सुनाइए एवं साभिनय प्रस्तुत कीजिए ।

चाहती, फिर उसके लिए प्रयत्न क्यों करती हो ?

अंबिका : मैं देख रही हूँ तुम्हारी बात ही सच होने जा रही है । अग्निमित्र संदेश लाया है कि वे लोग इस संबंध के लिए प्रस्तुत नहीं हैं । कहते हैं ...

मल्लिका : क्या कहते हैं ? क्या अधिकार है उन्हें कुछ भी कहने का ? मल्लिका का जीवन उसकी अपनी संपत्ति है । वह उसे नष्ट करना चाहती है तो किसी को उसपर आलोचना करने का क्या अधिकार है ?

अंबिका : मैं कब कहती हूँ मुझे अधिकार है ?

मल्लिका : मैं तुम्हारे अधिकार की बात नहीं कर रही ।

अंबिका : तुम न कहो, मैं कह रही हूँ । आज तुम्हारा जीवन तुम्हारी संपत्ति है । मेरा तुमपर कोई अधिकार नहीं है।

मल्लिका : ऐसा क्यों कहती हो ? तुम मुझे समझने का प्रयत्न क्यों नहीं करतीं ? **(अंबिका उसका हाथ कंधे से हटा देती है ।)**

अंबिका : मैं जानती हूँ तुमपर आज अपना अधिकार भी नहीं है किंतु इतना बड़ा अपराध मुझसे नहीं सहा जाता है ।

मल्लिका : मैं जानती हूँ माँ, अपराध होता है । तुम्हारे दुख की बात भी जानती हूँ । फिर भी मुझे अपराध का अनुभव नहीं होता । मैंने भावना में एक भावना का वरण किया है । मेरे लिए वह संबंध और सब संबंधों से बड़ा है । मैं वास्तव में अपनी भावना से प्रेम करती हूँ जो पवित्र है, कोमल है, अनश्वर है... ।

अंबिका : और मुझे ऐसी भावना से वितृष्णा होती है । पवित्र, कोमल और अनश्वर ! हँ !

मल्लिका : माँ, तुम मुझपर विश्वास क्यों नहीं करतीं ?

अंबिका : तुम जिसे भावना कहती हो वह केवल छलना और आत्मप्रवंचना है । भावना में भावना का वरण किया है ! मैं पूछती हूँ भावना का वरण क्या है ? उससे जीवन की आवश्यकताएँ किस तरह पूरी होती हैं ?

मल्लिका : जीवन की स्थूल आवश्यकताएँ ही तो सब कुछ नहीं हैं, माँ ! उनके अतिरिक्त भी तो बहुत कुछ हैं ।

('आषाढ़ का एक दिन' से)

—— ० ——

करिअर के क्षेत्र में लघु उद्योग कितने सहयोगी हैं, आज के संदर्भ में चर्चा कीजिए ।

'हर देश की सांस्कृतिक धरोहर ही देश को समृद्ध बनाती है', इसपर अपने विचार लिखिए।

शब्द संसार

विलीन वि.(सं.) = लुप्त हुआ, अदृश्य, ओझल
प्रकोष्ठ वि.(सं.) = बड़ा कमरा
आक्रोश पुं.सं.(सं.) = क्रोध, रोष
धुआँरे वि.(दे.) = धुएँ जैसे
तल्प पुं.सं.(सं.) = बिछौना, अटारी
छाज पुं.(हिं.) = सूप, अनाज फटकने का साधन
अनश्वर वि.(सं.) = जो नष्ट होने वाला न हो
वितृष्णा स्त्री.सं.(सं.) = अरूचि, घृणा

स्वाध्याय

सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

अंबिका के घर का वर्णन

(२) कृति कीजिए :

मल्लिका ने बारिश में किए अनुभव :–

(३) पाठ में प्रयुक्त इस अर्थ में आए शब्द लिखिए :

१. शय्या = ... २. घायल = ... ३. अनाज = ... ४. फटकार = ...

(४) लिखिए :

पर्यायवाची शब्द :

अतिरिक्त → ....,........

अनुभव → ....,........,........

मृत्यु → ....,........

शेष → ....,........,........

अभिव्यक्ति 'बारिश में भीगने के अपने अनुभव' पर पाँच –छह पंक्तियाँ लिखिए ।

उपयोजित लेखन

शब्दों के आधार पर कहानी लिखिए :

थैली, जल, तस्वीर, अँगूठी

भाषा बिंदु

अलंकार पढ़िए और समझिए :

शब्दालंकार

अनुप्रास अलंकार

व्यंजनों की आवृत्ति के कारण काव्य में चमत्कार उत्पन्न

- तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए । (त की आवृत्ति)
- चारु चंद्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल-थल में
  (च और ल की आवृत्ति)

यमक अलंकार

एक शब्द बार-बार आए किंतु उसका अर्थ बदल जाए

- कनक-कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय
  (कनक-कनक = सोना, धतूरा)
- कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर ।।
  (मनका-मनका - मन का, माला की मणि)

श्लेष अलंकार

एक शब्द के एक से अधिक अर्थ निकलें ।

- रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून ।
  (पानी = जल, कांति)
- जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोई ।
  बारे उजियारो करे, बढ़े अँधेरो होई ।
  (बारे - जलाने पर, बचपन में) (बढ़े - बड़ा होने पर, बुझने पर)

अर्थालंकार

उपमा अलंकार

दो वस्तुओं में समान धर्म के प्रतिपादन का उपमेय, उपमान समानधर्म, समानतावाचक

- नवल सुंदर श्याम शरीर की सजल
  नीरद-सी कल कांति थी
  (नीरद - उपमान, सी - समानतावाचक, कल - समानधर्म, कांति - उपमेय)
- सीता का मुख चंद्रमा के समान सुंदर है ।

रूपक अलंकार

जहाँ गुण की अंत्यत समानता दर्शाने के लिए उपमेय और उपमान को एक कर दिया जाए ।

- बीती विभावरी जाग री । अंबर पनघट में डुबो रही,
  (अंबर - उपमेय, पनघट - उपमान)
  तारा घट ऊषा नागरी !
  (तारा - उपमेय, घट - उपमान)
- पायो जी मैंने राम रतन धन पायो ।
  (राम - उपमेय, रतन - उपमान)

उत्प्रेक्षा अलंकार

प्रस्तुत में कल्पित अप्रस्तुत की संभावना । मानो, मनहु आदि का प्रयोग ।

- कहती हुई यों उत्तरा के नेत्र जल से भर गये । उपमेय
  हिम के कणों से पूर्ण मानो हो गए पंकज नये । उपमान
- उस काल मारे क्रोध के तनु काँपने उनका लगा। उपमेय
  मानो हवा के जोर से सोता हुआ सागर जगा । उपमान

77SRUU

९. ब्रजवासी

– भक्त सूरदास

जसोदा बार-बार यौं भाषै ।
हे कोऊ ब्रज हितू हमारौ चलत गुपालहिं राखै ।।
कहा काज मेरे छगन-मगन कौं, नृप मधुपुरी बुलायौ ।
सुफलक सुत मेरे प्रान हरन कौं काल रूप है आयौ ।
बरु यह गोधन हरौ कंस सब मोहिं बंदि लै मेलौ ।
इतनोई सुख कमल-नयन मेरी अँखियान आगे खेलौ ।।
बासर बदन बिलोकत जीवों, निसि निज अंकम लाऊँ ।
तिहिं बिछुरत जो जियौं कर्मबस तौ हँसि काहि बुलाऊँ ।।
कमलनयन गुन टेरत टेरत, दुखित नंद जु की रानी ।।

× × × ×

प्रीति करि काहू सुख न लह्यौ ।
प्रीति पतंग करी पावक सौं, आपै प्रान दह्यौ ।।
अलिसुत प्रीति करी जलसुत सौं, संपुट मांझ गह्यौ ।
सारंग प्रीति करी जु नाद सौं, सन्मुख बान सह्यौ ।।
हम जो प्रीति करी माधव सों, चलत न कछू कह्यौ ।
सूरदास प्रभु बिनु दुख पावत, नैननि नीर बह्यौ ।।

× × × ×

अति मलीन वृषभानु कुमारी ।
हरि श्रम जल भीज्यौ उर अंचल, तिहि लालच न धुवावति सारी ।।
अध मुख रहति, अनत नहिं चितवति, ज्यौ गथ हारे थकित जुवारी ।
छूटे चिकुर बदन कुम्हिलाने, ज्यौं नलिनी हिमकर की मारी ।।

× × × ×

कहाँ लौं कहिए ब्रज की बात ।
सुनह स्याम तुम विन उन लोगनि जैसे दिवस विहात ।।
गोपी, ग्वाल, गाइ गोसुत सब, मलिन वदन कृस गात ।
परम दीन जनु सिसिर हेम हत, अंबुजगन विनु पात ।।
जो कोउ आवत देखि दूरि तें उहि पूछत कुसलात ।
चलन न देत प्रेम आतुर उर कर चरननि लपटात ।।
पिक चातक वन वसत न पावत वायस वलि नहिं खात ।
सूर स्याम संदेसन के डर पथिक न उहिं मग जात ।।

× × × ×

परिचय

जन्म : १४७८, आगरा (उ.प्र.)
मृत्यु : १५८०

परिचय : भक्त सूरदास वात्सल्य रस के मर्मज्ञ कवि माने जाते हैं । आपने शृंगार और शांत रसों का भी बड़ा मर्मस्पर्शी वर्णन किया है । आप हिंदी भाषा के सूर्य कहे जाते हैं । आपका काव्य सृजन ब्रज भाषा में हुआ है । आपके पदों में गेयता है । आपके 'भ्रमरगीत' में सगुण और निर्गुण का उत्तम विवेचन हुआ है । उसमें वियोग एवं प्रकृति सौंदर्य का सूक्ष्म और सजीव वर्णन किया गया है ।

प्रमुख कृतियाँ : 'सूरसागर', 'सूर सारावली', 'साहित्य लहरी', 'नल दमयंती' आदि ।

पद्‌य संबंधी

भक्त सूरदास ने इन पदों में उस समय का वर्णन किया है जब श्रीकृष्ण गोकुल से मथुरा चले गए हैं । गोकुलवासी कृष्ण वियोग से व्यथित हैं । प्रथम तीन पदों में आपने माता यशोदा एवं गोपियों के श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम एवं उनकी अनुपस्थिति में उनके दुख को दर्शाया है ।

ऊधौ मोहिं ब्रज विसरत नाहीं ।
वृंदावन गोकुल वन उपवन, सघन कुंज की छाहीं ।।
प्रात समय माता जसुमति अरु नंद देखि सुख पावत ।
माखन-रोटी दह्यौ सजायौ, अति हित साथ खवावत ।।
गोपी, ग्वाल, वाल संग खेलत, सब दिन हँसत सिरात ।
सूरदास धनि-धनि ब्रजवासी, जिनसौं हितु जदु-तात ।।

('सूरसागर' से)

चौथे पद में उद्धव गोकुल से लौटकर मथुरा में श्रीकृष्ण को गोकुल निवासियों, पशु-पक्षी, प्रकृति का उनके प्रति प्रेम, विरह, कष्ट सुनाते हैं । अंतिम पद में श्रीकृष्ण के ब्रजभूमि एवं वहाँ के निवासियों के लगाव का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया गया है ।

शब्द संसार

हितू पुं.सं.(हिं.) = हितैषी, स्नेही
मधुपुरी स्त्री.सं.(सं.) = मथुरा
बरु अ.(हिं.ब्रज.) = बल्कि
बासर पुं.सं.(हिं.ब्रज.) = दिन
पावक पुं.सं.(सं.) = अग्नि
संपुट पुं. सं.(सं.) = कमल की पंखुडियों का घेरा
अनल पुं.सं.(सं.) = अग्नि
चिकुर पुं. सं.(हिं.ब्रज.) = केश
विहात क्रि.(हिं.ब्रज.) = बीतना

स्वाध्याय

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

यशोदा की कृष्ण वियोग में कही हुई बातें

(२) कृति कीजिए :

असफल प्रीति के लिए पद्य में प्रयुक्त उदाहरण

(३) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

कृष्ण विरह में राधा की स्थिति

(४) संजाल पूर्ण कीजिए :

कृष्ण इन्हें नहीं भूल पाते

(५) दूसरे पद का सरल अर्थ लिखिए ।

उपयोजित लेखन 'मैं प्रकृति बोल रही हूँ' विषय पर निबंध लेखन कीजिए ।

762HHH

१०. गुरुदेव का घर

– *निर्मल वर्मा*

प्रिय जयशंकर जी,

आपके दो पत्र मिले । मैं शीघ्र उत्तर न दे सका । पिछले दिनों मैं कोलकाता गया था । भारतीय भाषा परिषद के निमंत्रण पर । वहाँ कुछ बहुत पुराने मित्रों से मुलाकात हुई । लोगों के अतिथि सत्कार और स्नेह-सद्‌भावना से बहुत अधिक अभिभूत हुआ । इस बार काफी लंबी अवधि बाद कोलकाता जाना हुआ... मैं बहुत उत्सुकता से अपने इस प्रिय शहर को पुनः देखने की प्रतीक्षा कर रहा था ।

कोलकाता से अधिक स्मरणीय और किंचित उदास स्मृति शांतिनिकेतन की है, जहाँ पहली बार जाने का मौका मिला । रवींद्रनाथ का घर... या बहुत से घर, जहाँ वह समय-समय पर रहते थे, देखते हुए लगता रहा, जैसे उनकी आत्मा अभी तक वहाँ कहीं आस-पास भटक रही हो । मैंने बहुत से दिवगंत लेखकों के गृह स्थान यूरोप में देखे थे, लेकिन शांतिनिकेतन का अनुभव कुछ अनूठा था....जैसे किसी की अनुपस्थिति वहाँ हर पेड़, घड़ी, पत्थर पर बिछी हो । मैंने वे सब पेड़ हाथों से छुए जिन्हें गुरुदेव रवि बाबू ने खुद रोपा था और जिनके नामों का उल्लेख कितनी बार उनके गीतों में सुना था । एक दिन हम शांतिनिकेतन से कुछ दूर उस ग्राम्य प्रदेश को देखने भी गए, जहाँ पावा नदी बहती है... संथालों की रम्य झोंपड़ियाँ, शाल के खेत और पेड़ों से घिरे पोखर-सबको देखकर अनायास शरत बाबू के बहुत पुराने उपन्यासों का परिवेश याद हो आया, जिन्हें कभी बचपन में पढ़ा था । पश्चिमी बंगाल का प्राकृतिक सौंदर्य भारत के अन्य प्रदेशों से बहुत अलग है । कहते हैं, मानसून के दिनों में वह और भी अधिक रमणीय हो जाता है । इच्छा होती है, वहाँ एक-दो महीने एक साथ रहा जाए, तभी मन की भूख मिट सकती है ।

वैसे इन दिनों दिल्ली पर भी वसंत की अंतिम गुहार गूँजती सुनाई देती है... दिन भर एक अजीब-सी पगला देने वाली बयार चलती है... दुख यही है कि यह नशीला मौसम ज्यादा दिन नहीं टिकता-गरमी एक बिल्ली की तरह उसे अपने पंजों में दबोचने के लिए छिपी रहती है-कब तक उसकी खूँखार आँखों से अपने को बचा पाएगा ।

× × × × × ×

आज ही आपका दूसरा कार्ड मिला । यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपको 'साहित्य सम्मेलन' में मेरा दिया वक्तव्य ठीक लगा । उसे मैंने धीरे-धीरे बीमारी के दौरान लिखा था, इसलिए उसके बारे में ज्यादा आश्वस्त नहीं था । पिछले तीन-चार वर्षों से हर बार मैं अध्यक्षीय भाषण

परिचय

जन्म : १९२९, शिमला (हिमाचल प्रदेश)

मृत्यु : २००५

परिचय : निर्मल वर्मा जी आधुनिक समय के प्रतिष्ठित लेखक एवं अनुवादक थे । पारंपरिक कहानी को आधुनिकता से जोड़ने का श्रेय आपको जाता है । आपकी कथाओं में भारतीय और पाश्चात्य दोनों परिवेश देखने को मिलते हैं । आपको ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था ।

प्रमुख कृतियाँ : 'परिंदे', 'जलती झड़ी', 'पिछली गर्मियों में', 'कौवे और काला पानी', 'सूखा' (कहानी संग्रह), 'एक दिन, एक चिथड़ा सुख', 'लाल टीन की छत', 'रात का रिपोर्टर', 'अंतिम अरण्य' (उपन्यास) आदि ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत पत्र प्रसिद्‌ध लेखक निर्मल वर्मा जी ने अपने प्रिय मित्र जयशंकर जी को लिखा है । प्रथम पत्र में गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर के मकान, शांतिनिकेतन, पश्चिमी बंगाल के प्राकृतिक सौंदर्य तथा दिल्ली के वसंत की चर्चा की गई है । अगले पत्र में दूसरे पर निर्भर न रहकर, अपने-आप काम करने, अध्ययन एवं लेखन को संबल बनाने की प्रेरणा दी गई है ।

देना टालता रहा था । एक बार तो उस संक्षिप्त सम्मेलन व अधिवेशन का गोवा में आयोजन किया गया था, जहाँ मेरे जाने की उत्कट इच्छा थी पर किन्हीं अनिवार्य कारणों से जाना नहीं हो सका । आपको और कुछ अन्य मित्रों को हिंदी भाषा और साहित्य के बारे में मेरे विचार अच्छे लगे, यह जानकर सचमुच बहुत प्रसन्नता हुई ।

आपके पिछले एक पत्र में उदासी और अकेलेपन का दबा-सा स्वर था, जिसने मुझे काफी परेशान किया । मैं सोचता हूँ, आपको अब बहुत कुछ अपने जीवन का, दूसरे पर निर्भर न रहकर, स्वयं अपने काम, अध्ययन और लेखन का संबल बनाना होगा । भोपाल के मित्र अपने कामों में व्यस्त रहते हैं और यद्‌यपि सब आपसे बहुत स्नेह करते हैं, आपको उनसे नियमित पत्र व्यवहार की आशा नहीं करनी चाहिए । जब कभी मन ऊबे तो छह-आठ महीने में कभी दिल्ली, कभी भोपाल कुछ दिन के लिए चले जाना चाहिए । इससे आपको परिवर्तन का थोड़ा-बहुत आनंद तो मिलेगा ही, यात्रा करने का सुख भी मिलेगा । सौभाग्य से आप अपनी रुचियों में काफी हद तक स्वावलंबी हैं-संगीत, पुस्तकों और कलाओं में आपकी दिलचस्पी बहुत हद तक आपके अनुभवों को एक नये क्षितिज की ओर ले जाती है, जहाँ अपना अकेलापन धुंध की तरह छितर जाता है । यह अपने में बड़ी ब्लेसिंग है, जो हर किसी व्यक्ति के लिए उपलब्ध नहीं है । आपने अपने जीवन को आमला और नागपुर में बाँटकर बहुत अक्लमंदी और दूरदर्शिता का परिचय दिया है – आप जब चाहें अकेले भी रह सकते हैं और जरूरत पड़ने पर परिवार और मित्रों के सान्निध्य का सुख भी उठा सकते हैं । मैं समझता हूँ, यह एक अच्छा उपाय है, जब तक कि उससे कोई बेहतर विकल्प नहीं ढूँढ़ लेते ।

मुझे खुशी है कि आप इन दिनों फ्लॉबेर के पत्र पढ़ रहे हैं । रिल्के के पत्रों की तरह वे मुझे बहुत ही प्रेरणादायक लगे थे-कैसे एक व्यक्ति अपने समूचे जीवन को अपने लेखक के प्रति समर्पित कर देता है । वह सचमुच, सही अर्थों में, एक साधक थे । उनका जीवन ही उनका लेखन और लेखन उनका जीवन था ।

मैं आजकल अलका सरावगी का नया उपन्यास 'कोई बात नहीं' पढ़ रहा हूँ । मुझे यह बहुत अच्छा लग रहा है । आशा है, कभी आप उसे पढ़ पाएँगे । जब विजय शंकर नागपुर जाएँगे, उनके हाथ मैं उस उपन्यास को आपको भिजवा दूँगा ।

आपकी माँ अब कैसी हैं ? नागपुर में आप कब तक रहेंगे ?

सस्नेह

आपका निर्मल

—— ० ——

लेखनीय

'मोबाइल के अति उपयोग से होने वाले दुष्परिणाम' विषय पर अपने विचार लिखिए ।

संभाषणीय

'नदियाँ दिन-ब-दिन प्रदूषित होती जा रही हैं; इसपर चर्चा करके उन्हें स्वच्छ करने के उपाय बताइए ।

पठनीय

शांतिनिकेतन के बारे में जानकारी इकट्‌ठी करके पढ़िए ।

श्रवणीय

ऑनलाईन ऑडियो पुस्तकें सुनिए तथा चर्चा कीजिए ।

शब्द संसार

अनूठा वि.(हिं.) = अद्‌भुत
शाल पुं.(सं.) = एक प्रकार का वृक्ष
गुहार स्त्री.सं.(हिं) = दुहाई
संबल पुं. सं.(हिं.) = सहायक वस्तु, सहारा
दिलचस्पी स्त्री.सं.(फा.) = रुचि
छितर वि.(हिं.) = तितर-बितर

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-**

(१) लिखिए :

१. लेखक का कोलकाता जाने के कारण
  १. ____________
  २. ____________

२. शांतिनिकेतन का अनुभव अनूठा लगने के कारण
  १. ____________
  २. ____________

(२) कृति कीजिए :

शांतिनिकेतन से दूर गाँव में देखा।

(३) उत्तर लिखिए :

१. निर्मल जी इनके पत्र पढ़ रहे हैं ____________
२. लेखक यह उपन्यास पढ़ रहे हैं ____________

(४) कारण लिखिए :

१. निर्मल जी एक पत्र पढ़कर बहुत बेचैन हुए क्योंकि ____________
२. लेखक यह जानकर प्रसन्न हुए क्योंकि ____________

(५) शब्दों के भिन्न अर्थ लिखिए :

१. शाल   २. अर्क   ३. वर्ण

अभिव्यक्ति

'पत्र अपने विचार-भावनाओं को शब्दों द्‌वारा दूसरों तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम है', स्पष्ट कीजिए।

उपयोजित लेखन

'वर्तमान समय में शांति के क्षेत्र में/पर्यावरण संरक्षण में भारत की भूमिका का महत्त्व' विषय पर अस्सी से सौ शब्दों में निबंध लेखन कीजिए।

7BBIYS

भाषा बिंदु

समास पढ़िए, समझिए और अन्य उदाहरण लिखिए :-

समास

- समस्त पद के पूर्वपद में संख्यावाचक विशेषण → द्विगु समास

समस्त पद	विग्रह
१. त्रिदल (संख्यावाचक विशेषण)	तीन दलों का समाहार
२. ________	________
३. ________	________
४. ________	________

- उत्तर पद प्रधान (विशेष्य) और पूर्व पद गौण (विशेषण) → तत्पुरुष

समस्त पद	विग्रह
१. चिड़ियाघर (पूर्व पद गौण, उत्तर पद प्रधान)	चिड़िया का घर
२. ________	________
३. ________	________
४. ________	________

- पहला पद अव्यय हो और वही प्रधान हो → अव्ययीभाव

समस्त पद	विग्रह
१. भरपेट (अव्यय पद प्रधान)	पेट भर के
२. ________	________
३. ________	________
४. ________	________

- पहला पद और दूसरा पद मिलकर तीसरे पद की ओर संकेत → बहुव्रीहि

समस्त पद	विग्रह
१. पीतांबर (पहला पद, दूसरा पद)	पीत है अंबर जिसका
२. ________	________
३. ________	________
४. ________	________

- इसके सामासिक शब्दों में पहला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है अथवा एक पद समान और दूसरा पद उपमेय होता है । → कर्मधारय

समस्त पद	विग्रह
१. महात्मा (समान पद, उपमेय)	महान है जो आत्मा (विशेषण, विशेष्य)
२. ________	________
३. ________	________
४. ________	________

- समस्त पद में दोनों पद समान → द्‌वंद्‌व समास

समस्त पद	विग्रह
१. घर-द्‌वार (समान पद, समान पद)	घर और द्‌वार
२. ________	________
३. ________	________
४. ________	________

११ दो लघुकथाएँ

– *त्रिलोक सिंह ठकुरेला*

मौन

रघुराज सिंह बहुत खुश थे । उनके लड़के से अपनी लड़की का रिश्ता करने की इच्छा से अजमेर से एक संपन्न एवं सुसंस्कृत परिवार आया था । रघुराज सिंह का लड़का सेना में अधिकारी है । उनके दो अन्य लड़के उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं ।

लड़की के पिता ने रघुराज सिंह से कहा – ''हम आपसे एवं आपके परिवार से पूरी तरह संतुष्ट हैं । आप भी हमारी लड़की को देख लें एवं हमारे परिवार के बारे में पूरी जानकारी कर लें ।''

रघुराज सिंह ने कहा – ''जानकारी लेने की कोई जरूरत नहीं है । हम भी आपसे पूरी तरह संतुष्ट हैं ।''

लड़की के पिता ने पूछा – ''आपकी कोई माँग हो तो हमें बताने की कृपा करें ।''

रघुराज सिंह बोले – ''हमारी कोई माँग नहीं है । बस, चाहते हैं, लड़की ऐसी हो जो परिवार में विघटन न कराए । चाहता हूँ, तीनों भाई मिलकर रहें ।''

''इससे बढ़कर क्या बात हो सकती है । जब बच्चों को अच्छे संस्कार मिलते हैं तो पूरा परिवार एक सूत्र में बँधा रहता है ।'' लड़की के पिता ने विनम्रतापूर्वक कहते हुए पूछा – ''साहब, आप कितने भाई हैं ?''

रघुराज सिंह ने कहा – ''तीन भाई, एक बहिन''

लड़की के पिता ने पूछा – ''आपके भाई क्या करते हैं ?''

रघुराज सिंह – ''सबके निजी धंधे हैं ।''

लड़की के पिता ने पूछा – ''आपने अपने किसी भाई को बुलवाया नहीं ?''

रघुराज सिंह झिझकते हुए बोले – ''अजी, हम भाइयों में बोलचाल बंद है ।''

अचानक वहाँ खामोशी छा गई । प्रश्न और उत्तर दोनों ही मौन थे ।

× × × × × × × × ×

असाधारण

मुझे जोधपुर जाना था । बस आने में देरी थी । अतः बस स्टॉप पर बस के इंतजार में बैठा था । वहाँ बहुत से यात्रियों का जमघट लगा हुआ था ।

परिचय

जन्म : १९६६,

परिचय : त्रिलोक सिंह ठकुरेला जी ने कुंडलिया छंद के विकास के लिए अद्‌वितीय कार्य किया है ।

प्रमुख कृतियाँ : 'नया सवेरा' (बाल साहित्य), 'काव्यगंधा' (कुंडलिया संग्रह), 'आधुनिक हिंदी लघुकथाएँ', 'कुंडलिया छंद के सात हस्ताक्षर', 'कुंडलिया कानन', 'कुंडलिया संचयन', 'समसामयिक हिंदी लघुकथाएँ', 'कुंडलिया छंद के नये शिखर' आदि संपादन ।

गद्‌य संबंधी

यहाँ दो लघुकथाएँ दी गई हैं । प्रथम लघुकथा में त्रिलोक सिंह ठकुरेला जी ने लोगों की कथनी और करनी में अंतर पर करारा प्रहार किया है । दूसरी लघुकथा में आपने एक पॉलिश करने वाले बालक के स्वाभिमान को दर्शाया है । इन लघुकथाओं के माध्यम से लेखक ने संदेश दिया है कि हमारी सोच और व्यवहार में समरूपता होनी चाहिए। स्वाभिमान किसी में भी हो सकता है । हमें सभी के स्वाभिमान का आदर करना चाहिए।

सभी बातों में मशगूल थे अतः अच्छा-खासा शोर हो रहा था ।

अचानक एक आवाज ने मेरा ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया । एक दस वर्षीय लड़का फटा-सा बैग लटकाए निवेदन कर रहा था - ''बाबू जी, पॉलिश करा लो ।''

मेरे मना करने पर उसने विनीत मुद्रा में कहा - ''बाबू जी, करा लो । जूते चमका दूँगा । अभी तक मेरी बोहनी नहीं हुई है ।''

मैं घर से जूते पॉलिश करके आया था अतः मैंने उसे स्पष्ट मना कर दिया ।

वह दूसरे यात्री के पास जाकर विनय करने लगा । मैं उसी ओर देखने लगा । वह रह-रहकर यात्रियों से अनुनय-विनय कर रहा था- ''बाबू जी, पॉलिश करा लो । जूते चमका दूँगा । अभी तक मेरी बोहनी नहीं हुई है ।''

मेरे पास ही एक सज्जन बैठे थे । वे भी उस लड़के को बड़े गौर से देख रहे थे । शायद उन्हें उसपर दया आई । उन्होंने उसे पुकारा तो वह प्रसन्न होकर उनके पास आया और वहीं बैठ गया ।

''बाबू जी, उतारो जूते ।''

उन्होंने कहा- ''भाई, पॉलिश नहीं करानी है । ले, यह पाँच रुपये रख ले ।''

''क्यों बाबू जी ?'' उसने बड़े भोलेपन से कहा ।

वे सज्जन बड़े प्यार से बोले - ''रख ले । तेरी बोहनी नहीं हुई है, इसलिए ।''

लड़का झटके से खड़ा हुआ- ''बाबू जी, भिखारी नहीं हूँ । मेहनत करके खाना चाहता हूँ । बिना पॉलिश किए रुपये क्यों लूँ?'' यह कहते हुए वह आगे बढ़ गया ।

पॉलिश करने वाले लड़के के चेहरे पर स्वाभिमान का असाधारण तेज देखकर लोग दंग रह गए ।

('समसामयिक हिंदी लघुकथाएँ' से)

— ० —

लेखनीय

''बाल श्रम'' पर लगा प्रतिबंध कितना सफल सिद्‌ध हुआ है, इसकी जानकारी के लिए अपने परिसर का सर्वेक्षण कीजिए । सर्वेक्षण के आधार पर अपनी रपट/ अनुभव लिखिए ।

संभाषणीय

स्पर्धा के लिए 'अतिथि देवो भव' विषय पर भाषण तैयार करके सुनाइए ।

पठनीय

'संयुक्त परिवार आजकल विघटित होते जा रहे हैं, इसपर जानकारी पढ़कर निबंध लेखन कीजिए ।

श्रवणीय

रेडियो/दूरदर्शन, यू ट्यूब से राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन.सी.सी) की जानकारी सुनिए ।

शब्द संसार

विघटन सं. पुं.(सं.) = अलग करना
जमघट पुं. सं.(हिं) = भीड़
अनुनय पुं. सं.(सं.) = खुशामद, विनय

मुहावरा

दंग रह जाना = आश्चर्यचकित होना

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

लड़के के परिवार की विशेषताएँ

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

लड़के के पिता की बहू से अपेक्षाएँ

(३) कारण लिखिए :

१. अचानक खामोशी छा गई – ------------
२. लड़के के चाचा जी नहीं आए थे – ------------
३. लड़के का चेहरा देखकर लोग आश्चर्य करने लगे – ------------
४. लड़के ने सज्जन के दिए रुपये लौटाए – ------------

(४) लिखिए :

बस स्टॉप का वातावरण

अभिव्यक्ति

'परिश्रम और स्वाभिमान से जिंदगी बिताने में आनंद की प्राप्ति होती है' इसपर अपने विचार लिखिए ।

उपयोजित लेखन

वक्तृत्व प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पाने के उपलक्ष्य में आपके मित्र/सहेली ने आपको बधाई पत्र भेजा है, उसे धन्यवाद देते हुए निम्न प्रारूप में पत्र लिखिए :

दिनांक : ....
संबोधन : ....
अभिवादन : ....
प्रारंभ :

विषय विवेचन :

तुम्हारा/तुम्हारी,
....
नाम : ....
पता : ....
ई–मेल आईडी : ....

7CBASA

भाषा बिंदु

पढ़िए और समझिए :-

छंद

छंद ह्रस्व/लघु (।) और दीर्घ/गुरु (ऽ) इन दो स्वरों से संबंधित होते हैं। ह्रस्व (।) तथा दीर्घ (ऽ) को **'मात्रा चिह्न'** कहते हैं। व्यंजनों का मेल स्वरों के साथ होता है परंतु स्वररहित व्यंजन में मात्राएँ गिनी नहीं जाती हैं।

- संयुक्त वर्ण के पहले आया हुआ लघु वर्ण भी गुरु होता है। जैसे-सत्य में 'स' गुरु होगा।

संयुक्त वर्ण की मात्रा लघु होती है।

लघु (।)

```
ऽ  ।       ऽ                 ।
रक्त – र् + अ + क् + त् + अ
```

- क्, त् और र् मात्रा रहित हैं।
- 'रक्त' में तीन मात्राएँ होंगी।

ध्यान दें

- मात्रा गणना में लघु (।) =१ गिना जाता है।
- अ, इ, उ – इन ह्रस्व स्वरों तथा इससे युक्त एक व्यंजन या संयुक्त व्यंजन को 'लघु' गिना जाता है।
- चंद्रबिंदुवाले ह्रस्व स्वर भी लघु होते हैं। जैसे – 'अँ'।
- कमल = तीनों वर्ण लघु हों तो मात्रा चिह्न हुए ।।। = ३

दीर्घ (ऽ)

```
ऽ ऽ        ऽ          ऽ
राधा = र् + आ + ध् + आ
```

- 'राधा' शब्द में चार मात्राएँ होंगी।

ध्यान दें

- आ, ई, ऊ – दीर्घ स्वर और इनसे युक्त व्यंजन गुरु होते हैं।
- ए, ऐ, ओ, औ – ये संयुक्त स्वर और इनसे मिले व्यंजन गुरु होते हैं।
- अनुस्वारयुक्त वर्ण, विसर्गयुक्त वर्ण भी गुरु होते हैं।
- राजा, दीदी के मात्राचिह्न = ऽऽ, ऽऽ

सोरठा

- **यह अर्धसम मात्रिक छंद है।**
- **इसमें चार चरण होते हैं।**
- **विषम चरणों में ११-११ मात्राएँ और सम चरणों में १३-१३ मात्राएँ होती हैं।**

उदाहरण

```
    ।।  ऽ।।ऽ ऽ।
(१) सुनि केवट के बैन,           } प्रथम चरण = ११ मात्राएँ
    ११  २११ २ २१
    ऽ। ।ऽऽ ।।।ऽ
(२) प्रेम लपेटे अटपटे।          } द्वितीय चरण = १३ मात्राएँ
    २१ १२२ १११२
    ।।ऽ ।।ऽ ।।।
(३) विहँसे करुणा अयन,          } तृतीय चरण = ११ मात्राएँ
    ११२ ११२ १११
    ।।। ऽ।ऽ  ।।। ।।
(४) चितइ जानकी लखन तन ।।     } चतुर्थ चरण = १३ मात्राएँ
    १११ २१२  १११ ११
```

१२. गजलें

(पूरक पठन)

– अदम गोंडवी

दिल के सूरज को, सलीबों पे चढ़ाने वालो ।
रात ढल जाएगी, इक रोज जमाने वालो ।

मैं तो खुशबू हूँ, किसी फूल में बस जाऊँगा,
तुम कहाँ जाओगे काँटों के बिछाने वालो ।

मैं उसूलों के उजालों में रहा करता हूँ,
सोच लो मेरी तरफ लौट के आने वालो ।

उँगलियाँ तुमपे उठाएगी ये दुनिया इक दिन,
अपने 'बेदिल' से नजर फेर के जाने वालो ।

× × × × × ×

जहाँ पर भाईयों में प्यार का सागर नहीं होता ,
वो ईंटों का मकाँ होता है, लेकिन घर नहीं होता ।

जो अपने देश पर कटने का जज्बा ही न रखता हो,
वो चाहे कुछ भी हो सकता है, लेकिन सर नहीं होता ।

जो समझौते की बातें हैं, खुले दिल से ही होती हैं,
जो हम मिलते हैं उनसे, हाथ में खंजर नहीं होता ।

हकीकत और होती है, नजर कुछ और आता है,
जहाँ पर फूल खिलते हैं, वहाँ पत्थर नहीं होता ।

परिचय

जन्म : १९४६, गोंडा (उ.प्र.)
मृत्यु : २०११
परिचय : अदम गोंडवी जी का मूल नाम रामनाथ सिंह है । आप आम आदमी के शायर थे । गाँव-देहात, शोषित आपकी गजलों में दिखाई पड़ते हैं । व्यवस्था पर कटाक्ष आपकी रचनाओं का एक और प्रमुख पक्ष है । आपकी साहित्यिक भाषा सरल और सीधे प्रभावित करने वाली है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'धरती की सतह पर' 'समय से मुठभेड़' (कविता संग्रह) ।

जो एक सीमा में रहकर रोशनी देता है 'बेदिल' को,
वो जुगनू हो तो हो, लेकिन कभी दिनकर नहीं होता ।

× × × × × ×

एक कदम चलते हैं, और चल के ठहर जाते हैं,
हम तो अब वक्त की आहट से भी डर जाते हैं ।

जो भी इस आग के दरिया में उतर जाते हैं,
वही तपते हुए सोने-से निखर जाते हैं ।

भीड़ के साथ चले हैं, वो उधर जाते हैं,
हम तो खुद राह बनाते हैं, इधर जाते हैं ।

मेरी कश्ती का खिवैया है, मुहाफिज तू है,
कितने आते हैं यहाँ, कितने भँवर जाते हैं ।

जब भी आते हैं मेरी आँख में आँसू 'बेदिल',
जख्म सीने के मेरे, और निखर जाते हैं ।

— ० —

पद्‌य संबंधी

यहाँ दी गई दोनों गजलों में गजलकार अदम गोंडवी जी ने अलग-अलग भावों को अभिव्यक्ति दी है । इन गजलों में गजलकार ने आपसी भाईचारा बढ़ाने, देश पर निछावर होने, 'एकला चलो' की भावना आदि को बड़े सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है ।

शब्द संसार

सलीब स्त्री.सं.(अ.) = सूली
उसूल पुं.सं.(अ.) = सिद्‌धांत, नियम
जज्बा पुं.सं.(अ.) = भाव, भावना
मुहाफिज वि.(अ.) = हिफाजत करने वाला, रक्षक

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–**

(१) लिखिए :

१. कवि का बसेरा यहाँ है – ________

२. कवि यहाँ रहता है – ________

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

कवि ने इन्हें सजग किया है

→ [ ] → [ ]

(३) चौखट में दिए शब्दों की उचित जोड़ियाँ मिलाकर लिखिए :

कश्ती
आँख सोना
खिवैया प्यार उँगलियाँ
दुनिया जुगनू
रोशनी आँसू सागर
निखरना जज्बा

अ	आ
----------	----------
----------	----------
----------	----------
----------	----------
----------	----------

(४) वाक्य पूर्ण कीजिए :

१. घर वही होता है ....

२. हम उन्हीं से मिलते हैं ....

३. फूल यहीं खिलते हैं ....

४. जुगनू कभी यह नहीं बन पाता ....

(५) अंतिम दो पंक्तियों का भावार्थ लिखिए ।

(६) निम्न मुद्‌दों के आधार पर पद्‌य विश्लेषण कीजिए :

१. रचना का नाम

२. रचनाकार की विधा

३. पसंदीदा पंक्ति

४. पसंद होने का कारण

५. रचना से प्राप्त संदेश

उपयोजित लेखन

निम्न मुद्‌दों के आधार पर अपने विद्‌यालय में मनाए गए 'शिक्षक दिवस' समारोह का वृत्तांत लिखिए :

स्थान, दिनांक, समय

अध्यक्षता

कार्यक्रम/घटना

अध्यक्षीय विचार

→ शिक्षक दिवस

7GK6TX

भाषा बिंदु

दोहा, चौपाई पढ़िए और समझिए :–

मात्रा की गणना पर आधारित छंद

दोहा

- अर्धसम मात्रिक छंद है ।
- इसमें चार चरण होते हैं ।
- प्रथम–तृतीय चरण में १३ मात्राएँ
- द्वितीय–चतुर्थ चरण में ११ मात्राएँ

उदाहरण

श्री गुरु चरन सरोज रज, निजमन मुकुर सुधार
प्रथम चरण (१) द्वितीय चरण (२)

बरनौं रघुवर विमल जस, जो दायक फल चार ।।
तृतीय चरण (३) चतुर्थ चरण (४)

प्रथम चरण

ऽ । । ।।। ।ऽ। ।।
(१) श्री गुरुचरन सरोज रज } = १३ मात्राएँ
२ ११ १११ १२१ ११

द्वितीय चरण

।। ।। ।।। ।ऽ।
(२) निज मन मुकुर सुधार । } = ११ मात्राएँ
११ ११ १११ १२१

तृतीय चरण

।।ऽ ।।।। ।।। ।।
(३) बरनौं रघुवर विमल जस } = १३ मात्राएँ
११२ ११११ १११ ११

चतुर्थ चरण

ऽ ऽ।। ।। ऽ।
(४) जो दायक फल चार । } = ११ मात्राएँ
२ २११ ११ २१

चौपाई

- यह सम मात्रिक छंद है ।
- इसमें चार चरण होते हैं ।
- प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ होती हैं ।
- पहले और दूसरे चरण तथा तीसरे और चौथे चरण की तुकें मिलती हैं ।

उदाहरण

नित नूतन मंगल पुरमाही । निमिष सरिस दिन–जामिनी जाहीं ।
प्रथम चरण (१) द्वितीय चरण (२)

बड़े भोर भूपति मनिजागे । जाचक गुनगन गावन लागे ।।
तृतीय चरण (३) चतुर्थ चरण (४)

प्रथम चरण

।। ऽ।। ऽ।। ।। ऽऽ
(१) नित नूतन मंगल पुर माही । } = १६ मात्राएँ
११ २११ २११ ११ २२

द्वितीय चरण

।।। ।।। ।। ऽ।। ऽऽ
(२) निमिष सरिस दिन जामिनि जाहीं । } = १६ मात्राएँ
१११ १११ ११ २११ २२

तृतीय चरण

।ऽ ऽ। ऽ।। ।। ऽऽ
(३) बड़े भोर भूपति मनि जागे । } = १६ मात्राएँ
१२ २१ २११ ११ २२

चतुर्थ चरण

ऽ।। ।।।। ऽ।। ऽऽ
(४) जाचक गुनगन गावत लागे । } = १६ मात्राएँ
२११ ११११ २११ २२

१. संध्या सुंदरी

– *सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'*

दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या सुंदरी, परी-सी,
धीरे-धीरे-धीरे,
तिमिरांचल में चंचलता का नहीं कहीं आभास,
मधुर-मधुर हैं दोनों उसके अधर,
किंतु जरा गंभीर, नहीं है उनमें हास-विलास ।
हँसता है तो केवल तारा एक
गुँथा हुआ उन घुँघराले काले-काले बालों से,
हृदय राज्य की रानी का वह करता है अभिषेक ।
अलसता की-सी लता,
किंतु कोमलता की वह कली,
सखी नीरवता के कंधे पर डाले बाँह,
छाँह-सी अंबर पथ से चली ।
नहीं बजती उसके हाथों में कोई वीणा,
नहीं होता कोई अनुराग-राग-आलाप,
नूपुरों में भी रुन-झुन, रुन-झुन नहीं,
सिर्फ एक अव्यक्त शब्द-सा 'चुप-चुप-चुप'
है गूँज रहा सब कहीं
और क्या है , कुछ नहीं
अमृत की वह नदी बहाती आती,
थके हुए जीवों को वह सस्नेह,
चषक एक पिलाती ।
सुलाती उन्हें अंक पर अपने,
दिखलाती फिर विस्मृति के वह अगणित मीठे सपने ।
अद्‌र्धरात्रि की निश्चलता में हो जाती जब लीन,
कवि का बढ़ जाता अनुराग,
विरहाकुल कमनीय कंठ से,
आप निकल पड़ता तब एक विहाग !

— ० —

परिचय

जन्म : १८९६, मेदिनीपुर (पश्चिम बंगाल)
मृत्यु: १९६१, इलाहाबाद (उ.प्र.)
परिचय : सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी एक महान कवि, उपन्यासकार, निबंधकार और कहानीकार थे । आपने कविता में कल्पना का सहारा न लेते हुए यथार्थ को प्रमुखता से चित्रित किया है । आपका व्यक्तित्व अतिशय विद्रोही और क्रांतिकारी तत्त्वों से निर्मित हुआ । यह विद्रोह आपकी रचनाओं में भी मुखर हुआ है । आप हिंदी में 'मुक्त छंद' के प्रवर्तक भी माने जाते हैं । आप छायावादी काव्यधारा के प्रमुख चार स्तंभों में से एक हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'जूही की कली', 'गीतिका', 'अनामिका', 'परिमल', 'कुकुरमुत्ता' (काव्य संग्रह), 'अप्सरा', 'प्रभावती', 'निरुपमा', 'कुल्ली भाट' (उपन्यास), 'लिली', 'सखी' (कहानी संग्रह), 'चाबुक', 'चयन', 'रवींद्र कविता कानन' (निबंध) 'राम की शक्ति पूजा', 'सरोज स्मृति' (लंबी कविता) आदि ।

पद्‌य संबंधी

प्रस्तुत नई कविता में 'निराला' जी ने सायंकाल का बड़ा ही मनोहारी वर्णन किया है । 'संध्या सुंदरी' के वर्णन में यहाँ कवि द्‌वारा प्रयुक्त प्रतीक, बिंब, अलंकार उल्लेखनीय हैं ।

शब्द संसार

तिमिरांचल पुं.सं.(सं) = अंधकारभरा क्षेत्र
अनुराग पुं.सं.(सं.) = प्रीति, प्रेम, अनुरक्ति
आलाप पुं.सं.(सं.) = गाने की तान
नूपुर पुं.सं.(सं.) = पायल
चषक पुं.सं.(सं.) = प्याला, एक पात्र
विहाग पुं.सं.(सं.) = संगीत का एक राग

स्वाध्याय

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

संध्या सुंदरी के आगमन से आया परिवर्तन
↓ [ ]
↓ [ ]
↓ [ ]
↓ [ ]

(२) उचित क्रमांक लिखकर जोड़ियाँ मिलाइए :

अ	उत्तर	आ
नूपुर		अगणित
अधर		कमनीय
मीठे सपने		नीरवता
कंठ		मधुर-मधुर
सखी		मेघमय
आसमान		कोमलता
कली		रुन-झुन, रुन-झुन

(३) कृति पूर्ण कीजिए :

[ ] — संध्या सुंदरी की विशेषताएँ — [ ]

(४) कविता की अंतिम छह पंक्तियों का भावार्थ लिखिए ।

(५) कविता में प्रयुक्त संगीत से संबंधित शब्दों की सूची बनाइए ।

(६) उत्तर लिखिए :
१. अभिषेक करने वाला - [ ]
२. मीठे सपने दिखाने वाली - [ ]

(७) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर पद्य विश्लेषण कीजिए :
१. रचनाकार का नाम
२. रचना की विधा
३. पसंदीदा पंक्ति
४. पसंद होने का कारण
५. रचना से प्राप्त प्रेरणा

उपयोजित लेखन

निम्नलिखित शब्दों के आधार पर कहानी लिखिए और उसे उचित शीर्षक दीजिए : **पथिक, घोड़ा, बादल, पत्र**

7GU2VK

२. चीफ की दावत

– भीष्म साहनी

आज मिस्टर शामनाथ के घर चीफ की दावत थी ।

शामनाथ और उनकी धर्मपत्नी को पसीना पोंछने की फुरसत न थी । पत्नी और पति चीजों की फेहरिस्त हाथ में थामे, एक कमरे से दूसरे कमरे में आ-जा रहे थे ।

आखिर पाँच बजते-बजते तैयारी पूरी होने लगी । कुर्सियाँ, मेज, तिपाइयाँ, नैपकिन,फूल सब बरामदे में पहुँच गए । अब घर का फालतू सामान अलमारियों के पीछे और पलंगों के नीचे छिपाया जाने लगा । तभी शामनाथ के सामने सहसा एक अड़चन खड़ी हो गई, माँ का क्या होगा ?

इस बात की ओर न उनका और न ही उनकी कुशल गृहिणी का ध्यान गया था । मिस्टर शामनाथ श्रीमती की ओर घूमकर अंग्रेजी में बोले-''माँ का क्या होगा ?''

श्रीमती काम करते-करते ठहर गईं और थोड़ी देर तक सोचने के बाद बोलीं, ''इन्हें पिछवाड़े इनकी सहेली के घर भेज दो । रात भर बेशक वहीं रहें । कल आ जाएँ ।''

शामनाथ सिकुड़ी आँखों से श्रीमती के चेहरे की ओर देखते हुए पल भर सोचते रहे, फिर सिर हिलाकर बोले, ''नहीं, मैं नहीं चाहता कि उस बुढ़िया का आना-जाना यहाँ फिर से शुरू हो । पहले ही बड़ी मुश्किल से बंद किया था । माँ से कहें कि जल्दी ही खाना खा के शाम को ही अपनी कोठरी में चली जाएँ । मेहमान कहीं आठ बजे आएँगे । इससे पहले ही अपने काम से निबट लें ।''

सुझाव ठीक था । दोनों को पसंद आया । मगर फिर सहसा श्रीमती बोल उठीं, ''जो वह सो गईं और नींद में खर्राटे लेने लगीं, तो ? साथ ही तो बरामदा है, जहाँ लोग खाना खाएँगे ।''

''तो इन्हें कह देंगे कि अंदर से दरवाजा बंद कर लें । मैं बाहर से ताला लगा दूँगा या माँ को कह देता हूँ कि अंदर जाकर सोएँ नहीं, बैठी रहें, और क्या ?''

''और जो सो गईं, तो ? डिनर का क्या मालूम कब तक चले !''

शामनाथ कुछ खीझ उठे, हाथ झटकते हुए बोले, ''अच्छी-भली यह भाई के पास जा रही थीं । तुमने यूँ ही खुद अच्छा बनने के लिए बीच में टाँग अड़ा दी !''

परिचय

जन्म : १९१५, रावलपिंडी (अविभाजित भारत)

मृत्यु : २००३

परिचय : बहुमुखी प्रतिभा के धनी भीष्म साहनी ने सामाजिक विषमता, संघर्ष, मानवीय करुणा, मानवीय मूल्य, नैतिकता को अपनी लेखनी का आधार बनाया । आपने अपनी रचनाओं में नारी के व्यक्तित्व विकास, आर्थिक स्वतंत्रता, स्त्री शिक्षा और उसकी सम्मानजनक स्थिति का समर्थन किया है । प्रगतिशील दृष्टि के कारण आप मूल्यों पर आधारित ऐसी भावना के पक्षधर हैं जो मानवमात्र के प्रति प्रतिबद्ध है ।

प्रमुख कृतियाँ : 'भाग्यरेखा', 'पहला पाठ', 'भटकती राख', 'निशाचर' (कहानी संग्रह), 'झरोखे', 'तमस', 'कुंतो', 'नीलू, नीलिमा, नीलोफर', 'मय्यादास की माड़ी', (उपन्यास), 'कबिरा खड़ा बाजार में', माधवी (नाटक), 'आज के अतीत' (आत्मकथा) आदि ।

गद्य संबंधी

सामाजिक एवं पारिवारिक संबंधों पर पारखी नजर रखने वाले भीष्म साहनी जी ने इस पाठ में अपने बुजुर्गों को लेकर हीन दृष्टिकोणवालों पर करारा प्रहार किया है । अपनी उन्नति के लिए 'चीफ' की खुशामद करना, उनकी हाँ में हाँ मिलाना, दिखावा करना आदि का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करते हुए लोककला-हस्तकला के समादर पर कहानीकार ने बड़े ही प्रभावी एवं मार्मिक ढंग से कलम चलाई है ।

''वाह ! तुम माँ और बेटे की बातों में मैं क्यों बुरी बनूँ ? तुम जानो और वह जानें ।''

मिस्टर शामनाथ चुप रहे । यह मौका बहस का न था, समस्या का हल ढूँढ़ने का था । उन्होंने घूमकर माँ की कोठरी की ओर देखा । कोठरी का दरवाजा बरामदे में खुलता था । बरामदे की ओर देखते हुए झट-से बोले, ''मैंने सोच लिया है,''और उन्हीं कदमों माँ की कोठरी के बाहर जा खड़े हुए। माँ दीवार के साथ एक चौकी पर बैठी, दुपट्टे में मुँह-सिर लपेटे, माला जप रही थीं । सुबह से तैयारी होती देखते हुए माँ का भी दिल धड़क रहा था । बेटे के दफ्तर का बड़ा साहब घर पर आ रहा है, सारा काम सुभीते से चल जाए ।

''माँ, आज तुम खाना जल्दी खा लेना । मेहमान लोग साढ़े सात बजे आ जाएँगे । जैसे भी हो, अपने काम से जल्दी निबट लेना ।''

''अच्छा बेटा !''

''और माँ, हम लोग पहले बैठक में बैठेंगे । उतनी देर तुम यहाँ बरामदे में बैठना फिर जब हम यहाँ आ जाएँ, तो तुम गुसलखाने के रास्ते बैठक में चली जाना ।''

माँ अवाक, बेटे का चेहरा देखने लगीं । फिर धीरे-से बोलीं, ''अच्छा, बेटा !''

''और माँ, आज जल्दी सो नहीं जाना । तुम्हारे खर्राटों की आवाज दूर तक जाती है ।''

माँ लज्जित-सी आवाज में बोलीं, ''क्या करूँ बेटा, मेरे बस की बात नहीं है । जब से बीमारी से उठी हूँ, नाक से साँस नहीं ले पाती ।''

मिस्टर शामनाथ ने इंतजाम तो कर दिया, फिर भी उनकी उधेड़-बुन खत्म नहीं हुई । जो चीफ अचानक उधर आ निकला, तो ? आठ-दस मेहमान होंगे, देशी अफसर, उनकी स्त्रियाँ होंगी, कोई भी गुसलखाने की तरफ जा सकता है । क्षोभ और क्रोध में वह फिर झुँझलाने लगे । एक कुर्सी को उठाकर बरामदे में कोठरी के बाहर रखते हुए बोले, ''आओ माँ, इसपर जरा बैठो तो ।''

माँ माला सँभालती, पल्ला ठीक करती उठीं और धीरे-से कुर्सी पर आकर बैठ गईं ।

''यूँ नहीं, माँ टाँगें ऊपर चढ़ाकर नहीं बैठते । यह खाट नहीं है ।''

माँ ने टाँगें नीचे उतार लीं ।

''और खुदा के वास्ते नंगे पाँव नहीं घूमना । न ही वह खड़ाऊँ पहनकर सामने आना । किसी दिन तुम्हारी वह खड़ाऊँ उठाकर मैं बाहर फेंक दूँगा ।''

संभाषणीय

विभिन्न शुभ अवसरों पर बनाए जाने वाले पकवानों के बारे में आपस में चर्चा करके सूची बनाइए ।

माँ चुप रही ।

''कपड़े कौन-से पहनोगी, माँ ?''

''जो हैं, वही पहनूँगी, बेटा ! जो कहो, पहन लूँ ।''

मिस्टर शामनाथ अधखुली आँखों से माँ की ओर देखने लगे और माँ के कपड़ों की सोचने लगे । शामनाथ हर बात में तरतीब चाहते थे । घर का सब संचालन उनके अपने हाथ में था । खूँटियाँ कमरों में कहाँ लगाई जाएँ, बिस्तर कहाँ पर बिछें, किस रंग के परदे लगाए जाएँ, श्रीमती कौन-सी साड़ी पहनें, मेज किस साइज की हो... शामनाथ को चिंता थी कि अगर चीफ का साक्षात्कार माँ से हो गया तो कहीं लज्जित नहीं होना पड़े । माँ को सिर से पाँव तक देखते हुए बोले, ''तुम सफेद कमीज और सफेद सलवार पहन लो, माँ । पहन के आओ तो, जरा देखूँ ।''

माँ धीरे-से उठीं और अपनी कोठरी में कपड़े पहनने चली गईं ।

''यह माँ का झमेला ही रहेगा,'' उन्होंने फिर अंग्रेजी में अपनी पत्नी से कहा, ''ढंग की बात भी हो तो कोई ! अगर कहीं कोई उल्टी-सीधी बात हो गई, चीफ को बुरा लगा तो सारा मजा जाता रहेगा ।''

माँ सफेद कमीज और सफेद सलवार पहनकर बाहर निकलीं । छोटा-सा कद, सफेद कपड़ों में लिपटा, छोटा-सा सूखा हुआ शरीर, धुँधली आँखें, केवल सिर के आधे झड़े हुए बाल पल्ले की ओट में छिपा पाए थे । पहले से कुछ ही कम कुरूप नजर आ रही थीं ।

''चलो ठीक है । कोई चूड़ियाँ-वूड़ियाँ हों तो वह भी पहन लो । कोई हर्ज नहीं ।''

''चूड़ियाँ कहाँ से लाऊँ, बेटा ? तुम तो जानते हो, सब गहने तुम्हारी पढ़ाई में बिक गए ।'' यह वाक्य शामनाथ को तीर की तरह लगा । तिनककर बोला, ''यह कौन-सा राग छेड़ दिया, माँ ! सीधा कह दो, नहीं हैं गहने, बस ! इससे पढ़ाई-वढ़ाई का क्या ताल्लुक है ? गहने बिके तो कुछ बनकर ही आया हूँ, निरा लँडूरा तो नहीं लौट आया । जितना दिया था, उससे दुगुना ले लेना ।''

''मेरी जीभ जल जाए, बेटा, तुमसे गहना लूँगी ? मेरे मुँह से यूँ ही निकल गया । जो होते, तो लाख बार पहनती !''

साढ़े पाँच बज चुके थे । अभी मिस्टर शामनाथ को खुद भी नहा-धोकर तैयार होना था । श्रीमती कब की अपने कमरे में जा चुकी थी । शामनाथ जाते हुए एक बार फिर माँ को हिदायत करते गए, ''माँ, रोज की तरह गुमसुम बन के नहीं बैठी रहना । अगर साहब इधर आ निकलें और कोई बात पूछें तो ठीक तरह से बात का जवाब देना ।''

पठनीय

प्रेमचंद जी का कहानी संग्रह 'मानसरोवर' भाग १ से ८ तक के किसी एक भाग से कोई कहानी पढ़कर कक्षा में संक्षेप में उसका आशय सुनाइए ।

"मैं न पढ़ी, न लिखी, बेटा, मैं क्या बात करूँगी। तुम कह देना, माँ अनपढ़ है, कुछ जानती-समझती नहीं। वह नहीं पूछेगा।"

सात बजते-बजते माँ का दिल धक-धक करने लगा। अगर चीफ सामने आ गया और उसने कुछ पूछा, तो वह क्या जवाब देंगी। अंग्रेज को तो दूर से ही देखकर वह घबरा उठती थीं, यह तो अमरीकी है। न मालूम क्या पूछे। मैं क्या कहूँगी। माँ का जी चाहा कि चुपचाप पिछवाड़े विधवा सहेली के घर चली जाएँ। मगर बेटे के आदेश को कैसे टाल सकती थीं। चुपचाप कुर्सी पर से टाँगें लटकाए वहीं बैठी रहीं।

शामनाथ की पार्टी सफलता के शिखर चूमने लगी। कहीं कोई रुकावट न थी, कोई अड़चन न थी। मेम साहब को परदे पसंद आए थे, सोफा कवर का डिजाइन पसंद आया था, कमरे की सजावट पसंद आई थी। इससे बढ़कर क्या चाहिए। साहब तो चुटकुले और कहानियाँ कहने लग गए थे। दफ्तर में जितना रोब रखते थे, यहाँ पर उतने ही दोस्तपरवर हो रहे थे और उनकी स्त्री, काला गाउन पहने, गले में सफेद मोतियों का हार, सेंट और पावडर की महक से ओत-प्रोत, कमरे में बैठी सभी देशी स्त्रियों की आराधना का केंद्र बनी हुई थीं। बात-बात पर हँसतीं, बात-बात पर सिर हिलातीं और शामनाथ की स्त्री से तो ऐसे बातें कर रहीं थीं, जैसे उनकी पुरानी सहेली हो।

इसी रौ में साढ़े दस बज गए। वक्त कब गुजर गया पता ही न चला।

आखिर सब लोग खाना खाने के लिए उठे और बैठक से बाहर निकले। आगे-आगे शामनाथ रास्ता दिखाते हुए, पीछे चीफ और दूसरे मेहमान।

बरामदे में पहुँचते ही शामनाथ सहसा ठिठक गए। जो दृश्य उन्होंने देखा, उससे उनकी टाँगें लड़खड़ा गईं, बरामदे में ऐन कोठरी के बाहर माँ अपनी कुर्सी पर ज्यों-की-त्यों बैठी थीं। मगर दोनों पाँव कुर्सी की सीट पर रखे हुए और सिर दाएँ से बाएँ और बाएँ से दाएँ झूल रहा था। मुँह में से लगातार गहरे खर्राटों की आवाजें आ रही थीं। जब सिर कुछ देर के लिए टेढ़ा होकर एक तरफ को थम जाता, तो खर्राटे और भी गहरे हो उठते और फिर जब झटके से नींद टूटती, तो सिर फिर दाएँ से बाएँ झूलने लगता। पल्ला सिर पर से खिसक आया था, और माँ के झरे हुए बाल, आधे गंजे सिर पर अस्त-व्यस्त बिखर रहे थे।

देखते ही शामनाथ क्रुद्ध हो उठे। जी चाहा कि माँ को धक्का देकर उठा दें और उन्हें कोठरी में धकेल दें, मगर ऐसा करना संभव न था, चीफ और बाकी मेहमान पास खड़े थे।

माँ को देखते ही देशी अफसरों की कुछ स्त्रियाँ हँस दीं कि इतने में

रेडियो से प्रसारित होने वाला कोई 'हिंदी कार्यक्रम' सुनिए।

चीफ ने धीरे-से-कहा- 'अरे ! पूअर डियर' !

माँ हड़बड़ा के उठ बैठीं । सामने खड़े इतने लोगों को देखकर ऐसी घबराईं कि कुछ कहते न बना । झट से पल्ला सिर पर रखती हुई खड़ी हो गईं और जमीन को देखने लगीं । उनके पाँव लड़खड़ाने लगे और हाथों की उँगलियाँ थर-थर काँपने लगीं ।

''माँ, तुम जाके सो जाओ, तुम क्यों इतनी देर तक जाग रही थीं ?'' और खिसियाई हुई नजरों से शामनाथ चीफ के मुँह की ओर देखने लगे ।

चीफ के चेहरे पर मुस्कराहट थी । वह वहीं खड़े-खड़े बोले, ''नमस्ते !''

माँ ने झिझकते, अपने में सिमटते हुए दोनों हाथ जोड़े मगर एक हाथ दुपट्टे के अंदर माला को पकड़े हुए था, दूसरा बाहर । ठीक तरह से नमस्ते भी न कर पाईं । शामनाथ इसपर भी खिन्न हो उठे ।

इतने में चीफ ने अपना दायाँ हाथ, हाथ मिलाने के लिए माँ के आगे किया । माँ और भी घबरा उठीं ।

''माँ, हाथ मिलाओ ।''

पर हाथ कैसे मिलातीं ? दायें हाथ में तो माला थी । घबराहट में माँ ने बायाँ हाथ ही साहब के दायें हाथ में रख दिया । शामनाथ दिल-ही-दिल में जल उठे । देशी अफसरों की स्त्रियाँ खिलखिलाकर हँस पड़ीं ।

''यूँ नहीं माँ ! तुम तो जानती हो, दायाँ हाथ मिलाया जाता है । दायाँ हाथ मिलाओ ।''

मगर तब तक चीफ माँ का बायाँ हाथ ही बार-बार हिलाकर कह रहे थे-''हौ डू यू डू ?''

''कहो माँ, मैं ठीक हूँ, खैरियत से हूँ ।''

माँ कुछ बड़बड़ाईं ।

''माँ कहती हैं, मैं ठीक हूँ ।

कहो माँ, हौ डू यू डू ।''

माँ धीरे-से सकुचाते हुए बोलीं -''हौ डू डू...''

एक बार फिर कहकहा उठा ।

वातावरण हलका होने लगा । साहब ने स्थिति सँभाल ली थी । लोग हँसने-चहकने लगे थे । शामनाथ के मन का क्षोभ भी कुछ-कुछ कम होने लगा था ।

साहब अपने हाथ में माँ का हाथ अब भी पकड़े हुए थे और माँ सिकुड़ी जा रही थीं ।

शामनाथ अंग्रेजी में बोले, ''मेरी माँ गाँव की रहने वाली हैं । उम्र भर गाँव में रही हैं । माँ आपसे लजा रही होगी ।''

साहब इसपर खुश नजर आए । बोले, ''सच ? मुझे गाँव के लोग बहुत

'स्वार्थ के अंधेपन से व्यक्ति अपनों से दूर हो जाता है' इस संदर्भ में अपने विचार लिखिए ।

पसंद हैं, तब तो तुम्हारी माँ गाँव के गीत और नाच भी जानती होंगी ?'' चीफ खुशी से सिर हिलाते हुए माँ को टक-टकी बाँधे देखने लगे।

माँ धीरे से बोलीं, ''मैं क्या गाऊँगी, बेटा ! मैंने कब गाया है ?''

''वाह, माँ ! मेहमान का कहा भी कोई टालता है ?'' शामनाथ बोल पड़े ।

''साहब ने इतनी रीझ से कहा है, नहीं गाओगी, तो साहब बुरा मानेंगे।''

''मैं क्या गाऊँ बेटा, मुझे क्या आता है ?''

''वाह ! कोई बढ़िया टप्पे सुना दो। पत्तर अनाराँ दे ...''

देशी अफसर और उनकी स्त्रियों ने इस सुझाव पर तालियाँ पीटीं। माँ कभी दीन दृष्टि से बेटे के चेहरे को देखतीं, कभी पास खड़ी बहू के चेहरे को।

इतने में बेटे ने गंभीर आदेश भरे लहजे में कहा, ''माँ !''

इसके बाद हाँ या ना का सवाल ही न उठता था। माँ बैठ गईं और क्षीण दुर्बल, लरजती आवाज में एक पुराना विवाह का गीत गाने लगीं-

'हरिया नी माये, हरिया नी भैणे
हरिया ते भागी भरिया है !'

देशी स्त्रियाँ खिलखिलाकर हँस उठीं। तीन पंक्तियाँ गा के माँ चुप हो गईं।

बरामदा तालियों से गूँज उठा। साहब तालियाँ पीटना बंद ही न करते थे। शामनाथ की खीझ प्रसन्नता और गर्व में बदल उठी थी। वृद्ध माँ ने पार्टी में नया रंग भर दिया था।

तालियाँ थमने पर साहब बोले, ''पंजाब के गाँवों की दस्तकारी क्या है ?'' शामनाथ खुशी में झूम रहे थे। बोले, ''ओ, बहुत कुछ साहब ! मैं आपको एक सेट उन चीजों का भेंट करूँगा। आप उन्हें देखकर खुश होंगे।''

मगर साहब ने सिर हिलाकर अंग्रेजी में फिर पूछा, ''नहीं, मैं दूकानों की चीज नहीं माँगता। पंजाबियों के घरों में क्या बनता है, औरतें खुद क्या बनाती हैं ?''

शामनाथ कुछ सोचते हुए बोले, ''लड़कियाँ गुड़ियाँ बनाती हैं, औरतें फुलकारियाँ बनाती हैं।''

''फुलकारी क्या है ?''

शामनाथ फुलकारी का मतलब समझाने की असफल चेष्टा करने के बाद माँ से बोले, ''क्यों, माँ, कोई पुरानी फुलकारी घर में है ?''

माँ चुपचाप अंदर गईं और अपनी पुरानी फुलकारी उठा लाईं।

✲ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) कारण लिखिए :

अ. माँ ने गीत सुनाया -

आ. देशी स्त्रियाँ खुश हो गईं -

(२) लिखिए :

१.
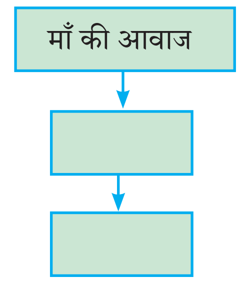

२.
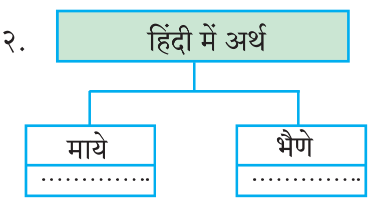

(३) सूचना के अनुसार परिवर्तन करके पुनः लिखिए :

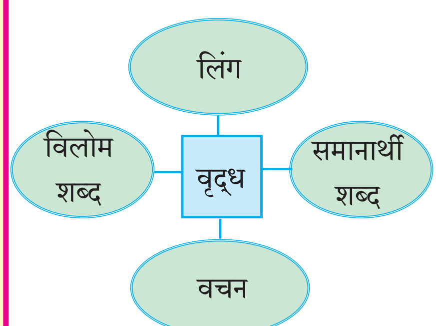

(४) 'वृद्‌धों को दया नहीं स्नेहभरा व्यवहार चाहिए', इसपर अपने विचार लिखिए।

साहब बड़ी रुचि से फुलकारी देखने लगे । पुरानी फुलकारी थी, जगह-जगह से उसके धागे टूट रहे थे और कपड़ा फटने लगा था । साहब की रुचि को देखकर शामनाथ बोले, ''यह फटी हुई है, साहब, मैं आपको नई बनवा दूँगा । माँ बना देंगी । क्यों, माँ, साहब को फुलकारी बहुत पसंद है, इन्हें ऐसी ही फुलकारी बना दोगी न ?''

माँ चुप रहीं । फिर डरते-डरते धीरे-से बोलीं, ''अब मेरी नजर कहाँ है, बेटा ? बूढ़ी आँखें क्या देखेंगी ?''

मगर माँ का वाक्य बीच ही में तोड़ते हुए शामनाथ साहब को बोले, ''माँ फुलकारी जरूर बनाएँगी । आप उसे देखकर खुश होंगे ।''

साहब ने सिर हिलाया, धन्यवाद किया और खाने की मेज की ओर बढ़ गए । बाकी मेहमान भी उनके पीछे-पीछे हो लिए ।

जब मेहमान बैठ गए और माँ पर से सबकी आँखें हट गईं, तो माँ धीरे-से कुर्सी पर से उठीं और सबसे नजरें बचाती हुई अपनी कोठरी में चली गईं ।

मगर कोठरी में बैठने की देर थी कि आँखों से छल-छल आँसू बहने लगे । वह दुपट्टे से बार-बार उन्हें पोंछतीं पर वह बार-बार उमड़ आते, जैसे बरसों का बाँध तोड़कर उमड़ आए हों । माँ ने दिल को बहुतेरा समझाया, हाथ जोड़े भगवान का नाम लिया, बेटे के चिरायु होने की प्रार्थना की, बार-बार आँखें बंद कीं, मगर आँसू बरसात के पानी की तरह जैसे थमने में ही न आते थे ।

आधी रात का वक्त होगा । मेहमान भरपेट खाना खाकर एक-एक करके जा चुके थे । माँ दीवार से सटकर बैठी आँखें फाड़े दीवार को देखे जा रही थीं। घर के वातावरण में तनाव ढीला पड़ चुका था । मुहल्ले की निस्तब्धता शामनाथ के घर पर भी छा चुकी थी, केवल रसोई में प्लेटों के खनकने की आवाज आ रही थी । तभी सहसा माँ की कोठरी का दरवाजा जोर से खटकने लगा ।

''माँ, दरवाजा खोलो ।''

माँ का दिल बैठ गया । हड़बड़ाकर उठ बैठीं । क्या मुझसे फिर कोई भूल हो गई ? माँ कितनी देर से अपने-आपको कोस रही थीं कि क्यों उसे नींद आ गई, क्यों वह ऊँघने लगी । क्या बेटे ने अभी तक क्षमा नहीं किया ? माँ उठीं और काँपते हाथों से दरवाजा खोल दिया ।

दरवाजा खुलते ही शामनाथ आगे बढ़ आए और माँ को आलिंगन में भर लिया ।

''ओ माँ ! तुमने तो आज रंग ला दिया ! साहब तुमसे इतना खुश हुए कि क्या कहूँ । ओ माँ ! माँ !''

माँ की छोटी-सी काया सिमटकर बेटे के आलिंगन में छिप गई । माँ की आँखों में फिर आँसू आ गए । उन्हें पोंछती हुई धीरे-से बोलीं, ''बेटा, तुम मुझे हरिद्‌वार भेज दो । मैं कबसे कह रही हूँ ।''

शामनाथ के माथे पर फिर तनाव के बल पड़ने लगे । उनकी बाँहें माँ के शरीर पर से हट आईं ।

''क्या कहा, माँ ? यह कौन-सा राग तुमने फिर छेड़ दिया ?''

शामनाथ का क्रोध बढ़ने लगा था, बोलते गए-''तुम मुझे बदनाम करना चाहती हो, ताकि दुनिया कहे कि बेटा माँ को अपने पास नहीं रख सकता ।''

''नहीं बेटा, अब तुम अपनी बहू के साथ जैसा मन चाहे रहो । मैंने अपना खा-पहन लिया । अब यहाँ क्या करूँगी । जो थोड़े दिन जिंदगानी के बाकी हैं, भगवान का नाम लूँगी । तुम मुझे हरिद्‌वार भेज दो !''

''तुम चली जाओगी, तो फुलकारी कौन बनाएगा ? साहब से तुम्हारे सामने ही फुलकारी देने का इकरार किया है ।''

''मेरी आँखें अब नहीं हैं बेटा, जो फुलकारी बना सकूँ । तुम कहीं और से बनवा लो । बनी-बनाई ले लो ।''

''माँ, तुम मुझे धोखा देके यूँ चली जाओगी । मेरा बनता काम बिगाड़ोगी ? जानती नहीं, साहब खुश होगें, तो मुझे तरक्की मिलेगी !''

माँ चुप हो गईं । फिर बेटे के मुँह की ओर देखती हुई बोलीं-''क्या तेरी तरक्की होगी ? क्या साहब तेरी तरक्की कर देगें ? क्या उन्होंने कुछ कहा है ?''

''कहा नहीं, मगर देखती नहीं, कितना खुश हो गए हैं । कहते थे, जब तुम्हारी माँ फुलकारी बनाना शुरू करेंगी, तो मैं देखने आऊँगा कि कैसे बनाती हैं । जो साहब खुश हो गए, तो मुझे इससे बड़ी नौकरी भी मिल सकती है, मैं बड़ा अधिकारी बन सकता हूँ ।''

माँ के चेहरे का रंग बदलने लगा, धीरे-धीरे उसका झुर्रियों भरा मुँह खिलने लगा, आँखों में हलकी-हलकी चमक आने लगी ।

''तो तेरी तरक्की होगी, बेटा ?''

''तरक्की क्या यूँ ही हो जाएगी ? साहब को खुश रखूँगा, तो कुछ करेंगे, वरना उनकी खिदमत करने वाले कम थोड़े हैं ?''

''तो मैं बना दूँगी बेटा, जैसे बन पड़ेगा बना दूँगी ।''

और माँ दिल-ही-दिल में फिर बेटे के उज्ज्वल भविष्य की कामनाएँ करने लगीं और मिस्टर शामनाथ, ''अब सो जाओ, माँ'' कहते हुए अपने कमरे की ओर घूम गए ।

—— ० ——

शब्द संसार

फेहरिस्त स्त्री.सं.(अ.) = सूची
सुभीता पुं.सं.(दे.) = सुगमता, सहूलियत, सुविधा
ताल्लुक पुं.सं.(अ.) = संबंध
हिदायत स्त्री.सं.(अ.) = निर्देश, सूचना
लरजती क्रि.(फा.) = काँपती, थरथराती
इकरार पुं.सं.(अ.) = स्वीकार
उधेड़बुन स्त्री.सं.(हिं.) = सोच-विचार, ऊहापोह

मुहावरे

टाँग अड़ाना = व्यर्थ में हस्तक्षेप करना, बाधा डालना
दिल धड़कना = चिंता या भय से व्याकुल होना
टक-टकी बाँधना = एकटक देखना
दिल बैठना = निराश होना
माथे पर बल पड़ना = गुस्सा आना, चिंतित होना
मुँह खिलना = प्रसन्न होना

स्वाध्याय

✻ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

कोठरी के बाहर से शामनाथ ने देखा

(२) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

पार्टी के लिए की गईं तैयारियाँ

(३) कृतियाँ पूर्ण कीजिए :

१. मेम साहब को पसंद आईं चीजें

२. मेम साहब की पोशाक

(४) कारण लिखिए :

१. माँ चूड़ियाँ नहीं पहन सकतीं -------
२. माँ को उनकी सहेली के घर भेजना पसंद न था -------
३. शामनाथ क्रोधित हो उठे -------
४. माँ ने फुलकारी बनाने के लिए हाँ कर दी -------

(५) बरामदे में पहुँचते ही शामनाथ ने देखी माँ की स्थिति

(६) भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ लिखिए :

१. ग्रहण
२. पद
३. अंबर
४. वार

अभिव्यक्ति 'वृद्धाश्रमों की बढ़ती संख्या' पर अपने विचार लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) वाक्य शुद्धीकरण :

१. उसका साफ सफाई, सुरक्षा को पक्की कर लिया ।

----

२. पाल कितनी उँचा होगा इसका भी अन्दाज ले लीया गए हैं ।

----

३. भीख में पाई हुई आटा गीला और बहती हुई देखकर वह रो पड़ता हैं ।

----

४. बरामदा तालीया से गूँज उठी।

----

५. मानव व्यक्तीत्व के सामन ही उसका वाणी का निर्माण दोहरा होता है ।

----

६. वही उड़ने का रफतार और दीशा तय करती है ।

----

७. मैं पिताजी से कहुँगा की आप आराम करो ।

----

८. उनकी बेटीयाँ मेरी बहने बन गयी ।

----

९. एक बार झरोका का और देखकर वह लंबा सास लेती है ।

----

१०. लडकि के पिताने रघुराज सिंह को कहा ।

उपयोजित लेखन

नीचे दिए विषय पर वृत्तांत लेखन कीजिए :

(वृत्तांत में स्थल, काल, घटना का होना आवश्यक है)

वाचन प्रेरणा दिवस
- स्थान, समय, दिनांक
- घटना
- मुख्य कार्यक्रम
- अतिथि मनोगत

३. जानता हूँ मैं

– महात्मा गांधी

मैं मार्ग जानता हूँ । वह सीधा और सँकरा है । वह तलवार की धार की तरह है । मुझे उसपर चलने में आनंद आता है । जब मैं उससे फिसल जाता हूँ तो रोता हूँ । ईश्वर का वचन है–''जो प्रयास करता है, वह कभी नष्ट नहीं होता ।'' मुझे इस वचन में पूरी आस्था है । इसलिए अपनी कमजोरी की वजह से मैं चाहे हजार बार नाकामयाब रहूँ पर मेरी आस्था कभी नहीं डिगेगी । बल्कि यह आशा कायम रहेगी कि जिस दिन यह शरीर पूरी तरह नियंत्रण में आ जाएगा, उस दिन मुझे ईश्वर की अलौकिक आभा के दर्शन हो जाएँगे और ऐसा होगा जरूर ।

मेरी आत्मा जब तक एक भी अन्याय अथवा एक भी विपत्ति की विवश साक्षी है तब तक वह संतोष का अनुभव नहीं कर सकती । लेकिन मेरे जैसे दुर्बल, भंगुर और दीन व्यक्ति के लिए हर दोष को दूर करना या जो भी दोष मैं देखता हूँ, उन सबसे स्वयं को मुक्त मानना संभव नहीं है ।

मेरी अंतश्चेतना मुझे एक दिशा में ले जाती है और शरीर विपरीत दिशा की ओर जाना चाहता है । इन दोनों विरोधी दलों के कार्यों से मुक्ति पाई जा सकती है पर वह मुक्ति कई धीमे और पीड़ाप्रद चरणों से गुजरते हुए ही प्राप्य है ।

मैं यह मुक्ति कर्म का यंत्रवत त्याग करके नहीं पा सकता । यह तो अनासक्त भाव से प्रबुद्‌ध कर्म करके ही पाई जा सकती है । इस संघर्ष में देह को निरंतर तपाना पड़ता है तब जाकर अंतश्चेतना पूरी तरह स्वतंत्र हो पाती है ।

मैं मात्र एक सत्यशोधक हूँ । मेरा मानना है कि मैंने सत्य तक पहुँचने का मार्ग ढूँढ़ लिया है । मैं उसे पाने का निरंतर प्रयास कर रहा हूँ लेकिन मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं अभी तक अपने ध्येय में सफल नहीं हो सका हूँ । सत्य को पूर्ण रूप से पाना अपना और अपनी नियति का पूरी तरह साक्षात्कार करना अर्थात पूर्ण हो जाना है । मुझे अपनी अपूर्णताओं का पीड़ादायक बोध है और इसी बोध में मेरी समस्त शक्ति सन्निहित है; क्योंकि यह बड़ी दुर्लभ बात है कि आदमी को अपनी सीमाओं का बोध हो जाए ।

मैं इस संसार में 'परिव्याप्त अंधकार के बीच से' निकलकर आलोक तक पहुँचने का प्रयास कर रहा हूँ । मुझसे अकसर गलतियाँ हो जाती हैं या मिथ्या अनुमान लगा बैठता हूँ.. मेरा भरोसा केवल भगवान में हैं और मैं इनसानों का भी भरोसा इसलिए करता हूँ । यदि मुझे भगवान में भरोसा न

परिचय

जन्म : १८६९,पोरबंदर (गुजरात)
मृत्यु : १९४८ (दिल्ली)
परिचय : गांधीजी का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था । आप भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख राजनीतिक एवं आध्यात्मिक नेता थे । पूरा देश आपको राष्ट्रपिता कहकर संबोधित करता है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'सत्य के प्रयोग' (आत्मकथा), 'हिंद स्वराज्य या इंडियन होमरूल', इनके अतिरिक्त लगभग प्रत्येक दिन अनेक व्यक्तियों और समाचार पत्रों के लिए लेखन करते थे ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत पाठ महात्मा गांधीजी के विचारों पर आधारित है । यहाँ ईश्वर, कर्म, सत्य, अंतरात्मा की आवाज, आशा, विश्वास, वचन बद्‌धता आदि के बारे में गांधीजी का चिंतन विचारणीय है । ये सभी विचार आज भी समाज के लिए प्रकाश स्तंभ के समान मार्ग बताने में सक्षम हैं ।

होता तो मैं इनसानों की तरह अपनी मानव प्रजाति से घृणा करने वाला होता ।

मैं सारी दुनिया को प्रसन्न करने के लिए भगवान से विश्वासघात नहीं करूँगा ।

मैंने अपने जीवन में जो भी उल्लेखनीय कार्य किया है, तर्कबुद्‌धि से प्रेरित होकर नहीं किया अपितु अपनी सहजवृत्ति, बल्कि कहूँ कि भगवान से प्रेरित होकर किया है ।

मैं आस्थावान व्यक्ति हूँ । मुझे केवल भगवान का आसरा है, मेरे लिए एक ही कदम पर्याप्त है । अगला कदम, समय आने पर भगवान स्वयं मुझे सुझा देगा ।

मेरी कोई गोपनीय विधियाँ नहीं हैं । सत्य के अलावा और कोई कूटनीति मैं नहीं जानता । अहिंसा के अलावा मेरे पास और कोई हथियार नहीं है । मैं अनजाने में कुछ समय के लिए भले ही भटक जाऊँ लेकिन सदा के लिए नहीं भटक सकता ।

मेरा जीवन एक खुली किताब रहा है । मेरे न कोई रहस्य हैं और न मैं रहस्यों को प्रश्रय देता हूँ ।

मैं पूरी तरह भला बनने के लिए संघर्षरत एक अदना-सा इनसान हूँ। मैं मन, वाणी और कर्म से पूरी तरह सच्चा और पूरी तरह अहिंसक बनने के लिए संघर्षरत हूँ । यह लक्ष्य सच्चा है, यह मैं जानता हूँ पर उसे पाने में बार-बार असफल हो जाता हूँ । मैं मानता हूँ कि इस लक्ष्य तक पहुँचना कष्टकर है पर यह कष्ट मुझे निश्चित आनंद देने वाला लगता है । इस तक पहुँचने की प्रत्येक सीढ़ी मुझे अगली सीढ़ी तक पहुँचने के लिए शक्ति तथा सामर्थ्य देती है ।

जब मैं एक ओर अपनी लघुता और अपनी सीमाओं के बारे में सोचता हूँ और दूसरी ओर मुझसे लोगों की जो अपेक्षाएँ हो गई हैं, उनकी बात सोचता हूँ तो एक क्षण के लिए तो मैं स्तब्ध रह जाता हूँ । फिर यह समझकर प्रकृतिस्थ हो जाता हूँ कि ये अपेक्षाएँ मुझसे नहीं हैं । ये सत्य और अहिंसा के दो अमूल्य गुणों के मुझमें अवतरण हैं । यह अवतरण कितना ही अपूर्ण हो पर मुझमें अपेक्षाकृत अधिक द्रष्टव्य है । इसलिए पश्चिम के अपने सहशोधकों की मुझसे जो कुछ सहायता बन पड़े, उसकी जिम्मेदारी से मुझे विमुख नहीं होना चाहिए ।

मैं अचूक मार्गदर्शक अथवा प्रेरणा प्राप्त होने का दावा नहीं करता। जहाँ तक मेरा अनुभव है, किसी भी मनुष्य के लिए अचूकता का दावा करना अनुचित है क्योंकि प्रेरणा भी उसी को मिलती है जो विरोधी तत्त्वों की क्रिया से मुक्त हो और किसी अवसर विशेष के संबंध में यह निर्णय

'व्यक्तित्व विकास' संबंधी किसी प्रसिद्‌ध वक्ता के विचार सुनिए ।

करना मुश्किल होगा कि विरोधी युग्मों से मुक्ति का दावा सही है या नहीं । इसलिए अचूकता का दावा करना बड़ा खतरनाक है । लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं कि हमें कोई मार्गदर्शन उपलब्ध ही नहीं है । विश्व के मनीषियों का समग्र अनुभव हमें उपलब्ध है और सदा उपलब्ध रहेगा ।

इसके अलावा, मौलिक सत्य अनेक नहीं हैं बल्कि एक ही है जो सत्य स्वयं है जिसे अहिंसा भी कहा जाता है । सीमा में बँधा मनुष्य सत्य और प्रेम के संपूर्ण स्वरूप को, जो अनंत है, कभी नहीं पहचान पाएगा। लेकिन जितना हमारे मार्गदर्शन के लिए आवश्यक है उतना तो हम जानते ही हैं । हम उसपर आचरण करते समय त्रुटि कर सकते हैं और कभी-कभी वह भयंकर भी हो सकती है । लेकिन मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो अपने को नियंत्रित कर सकता है और नियंत्रण की इस शक्ति में जिस प्रकार त्रुटि करने की शक्ति समाहित है, उसी प्रकार त्रुटि का पता चलने पर उसका सुधार करने की शक्ति भी है ।

मैं दिव्यद्रष्टा नहीं हूँ । मैं संत होने के दावे से भी इनकार करता हूँ। मैं तो पार्थिव शरीरधारी हूँ – मैं भी आपकी तरह अनेक दुर्बलताओं का शिकार हो सकता हूँ । लेकिन मैंने दुनिया देखी है । मैं आँखें खोलकर जिया हूँ । मनुष्य को जिन-जिन अग्निपरीक्षाओं से होकर गुजरना पड़ सकता है, उनमें से अधिकांश से मैं गुजरा हूँ ।

मेरी अंतरात्मा की आवाज मुझसे कहती है-''तुम्हें सारी दुनिया के विरोध में खड़ा होना है, भले ही तुम अकेले खड़े हो, दुनिया तुम्हें आग्नेय दृष्टि से देखे पर तुम्हें उनसे आँख मिलाकर खड़े रहना है । डरो मत । अपनी अंतरात्मा की आवाज का भरोसा करो ।''

पराजय मुझे हतोत्साहित नहीं कर सकती । यह मुझे केवल सुधार सकती है । मैं जानता हूँ कि ईश्वर मेरा मार्गदर्शन करेगा । सत्य मानवीय बुद्धिमत्ता से श्रेष्ठतर है ।

मैंने कभी अपने आशावाद का त्याग नहीं किया है । प्रत्यक्षतः घोर विपत्ति के कालों में भी मेरे अंदर आशा की प्रखर ज्योति जलती रही है । मैं स्वयं आशा को नहीं मार सकता । मैं आशा के औचित्य का प्रत्यक्ष प्रदर्शन नहीं कर सकता पर मुझमें पराजय की भावना नहीं है ।

यह सही है कि लोगों ने मुझे प्रायः निराश किया है। बहुतों ने मुझे धोखा दिया है और बहुतों ने अपने कर्तव्य का निर्वाह नहीं किया है, लेकिन मुझे उनके साथ काम करने का कोई पछतावा नहीं है । कारण कि मैं जिस तरह सहयोग करना जानता हूँ, उसी तरह असहयोग करना भी जानता हूँ । दुनिया में काम करने का सबसे व्यावहारिक और गरिमामय तरीका यही है कि जब तक किसी व्यक्ति के बारे में निश्चित रूप से कोई विरोधी साक्ष्य

महात्मा गांधी के जयंती समारोह में भाषण देने हेतु गुट चर्चा में अपने विचार व्यक्त कीजिए ।

'देश की उन्नति में युवाओं का योगदान', विषय पर अपने विचार लिखिए।

सामने न आए, उसकी बात का भरोसा किया जाए ।

मुझे भरोसा करने के सद्‌धर्म में विश्वास है । भरोसा करने से भरोसा मिलता है । संदेह दुर्गंधमय है और इससे सिर्फ सड़न पैदा होती है । जिसने भरोसा किया है, वह दुनिया में आज तक हारा नहीं है ।

वचन भंग मेरी आत्मा को झकझोर देता है, विशेष कर तब जबकि वचन भंग करने वाले से मेरा कोई संबंध रहा है । सत्तर वर्ष की अवस्था में मेरे जीवन का कोई बीमा मूल्य शेष नहीं है, इसलिए यदि किसी पवित्र और गंभीर वचन का विधिवत पालन कराने के लिए मुझे अपने जीवन की आहुति भी देनी पड़े तो इसके लिए मुझे सहर्ष तत्पर रहना चाहिए ।

जीवन में ऐसे क्षण आते हैं जब कुछ चीजों के लिए हमें बाह्‌य प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती । हमारे अंदर से एक हलकी-सी आवाज हमें बताती है-''तुम सही रास्ते पर हो, दाएँ-बाएँ मुड़ने की जरूरत नहीं है, सीधे और सँकरे रास्ते पर आगे बढ़ते जाओ ।''

तुम्हारे जीवन में ऐसे क्षण आएँगे जब तुम्हें कदम उठाना होगा-चाहे तुम अपने घनिष्ठ-से-घनिष्ठ मित्रों को भी अपना साथ देने के लिए सहमत न कर सको । जब कर्तव्यविमूढ़ हो जाओ तो सदैव 'अंतःकरण की आवाज' को ही अपना अंतिम निर्णायक मानो ।

जिस क्षण मैं अंतःकरण की छोटी-सी आवाज को अवरुद्‌ध कर दूँगा, मेरी उपयोगिता ही समाप्त हो जाएगी।

('महात्मा गांधीजी के विचार' से संकलित)

—— ० ——

पठनीय

स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन के प्रेरक प्रसंग पढ़कर कक्षा में सुनाइए ।

शब्द संसार

सँकरा वि.पुं.(दे.) = तंग, संकीर्ण
अलौकिक वि.(सं.) = असाधारण, अद्‌भुत, विरल
भंगुर वि.(सं.) = अधिक दिन न टिकने वाला
अंतश्चेतना स्त्री.सं.(सं.) = आत्मज्ञान
अनासक्त वि.(सं.) = निर्लिप्त, जो आसक्त न हो
सन्निहित वि.(सं.) = साथ या पास रखा हुआ
द्रष्टव्य वि.(सं.) = दिखाई पड़ने वाला
आग्नेय वि.(सं.) = क्रोधपूर्ण
हतोत्साहित वि.(सं.) = जिसका उत्साह भंग हुआ हो
औचित्य सं.पुं.(सं) = उचित होने की अवस्था

मुहावरे

आँख मिलाकर खड़े रहना = सामना करना
कर्तव्यविमूढ़ हो जाना = असमंजस की स्थिति, दुविधा

स्वाध्याय

✻ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

महात्मा गांधी के स्वयं के बारे में विचार

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

महात्मा गांधी के बताए मार्ग की विशेषताएँ

१. -------
२. -------

महात्मा गांधी की स्वभावगत विशेषताएँ

१. -------
२. -------

(३) उचित शब्द चुनकर वाक्य फिर से लिखिए :

१. उस दिन मुझे ईश्वर की अद्‌भुत/अलौकिक आभा के दर्शन हो जाएँगे ।
२. सत्य के अलावा और कोई राजनीति/कूटनीति मैं नहीं जानता ।
३. मैं आस्थावान/अनास्थावान व्यक्ति हूँ ।
४. मैं मात्र एक सत्यशोधक/ सत्यप्रेमी हूँ ।

(४) उत्तर लिखिए :

१. महात्मा गांधी का इनपर भरोसा है
   १) ________
   २) ________

२. महात्मा गांधी की अंतरात्मा की बातें
   १) ________
   २) ________

(५) सूचना के अनुसार लिखिए :

१. विलोम शब्द ← → वचन परिवर्तन
   आशा
   सफलता

२. लिंग परिवर्तन ← → पर्यायवाची
   महिला

(६) 'देश की उन्नति में युवाओं का योगदान' विषय पर अपने विचारों की मौखिक तथा लिखित अभिव्यक्ति कीजिए ।

अभिव्यक्ति 'गांधीजी एक प्रेरणादायी व्यक्तित्व', विषय पर अपना मत लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) निम्न वाक्यों में अधोरेखांकित शब्द समूह के लिए कोष्ठक में दिए गए मुहावरों में से उचित मुहावरे का चयनकर वाक्य फिर से लिखिए :

[राह तकना, झेंप जाना, दंग रह जाना, दिल धड़कना, टकटकी बाँधकर देखना, उड़ जाना, पसीना-पसीना हो जाना]

१. चाँदनी रात में ताजमहल की सुंदरता एक टक देखने का मजा कुछ और ही है ।
वाक्य = --

२. रात में अचानक टेलीफोन की घंटी बजी तो वृद्‌ध पिता जी घबरा गए ।
वाक्य = --

३. विदेश में रहने वाले बच्चों के माता-पिता उनके लौटने का इंतजार करते हैं ।
वाक्य = --

४. कल ही उमेश ने वेतन पाया और आज सारे रुपये गायब हुए ।
वाक्य = --

५. रात में अचानक किसी ने दरवाजा खटखटाया तो माँ बहुत घबरा गई ।
वाक्य = --

६. बच्चे सैर करने गए थे । वहाँ का नजारा देखकर आश्चर्य चकित हो गए ।
वाक्य = --

(२) निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर कॉपी में उनका अर्थपूर्ण वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

१. भौचक्का रह जाना : अर्थ = -------, वाक्य =----------------------------
३. पत्थर की लकीर होना : अर्थ = -------, वाक्य =----------------------------
२. अभिभूत होना : अर्थ = -------, वाक्य =----------------------------
४. मुँह खिलना : अर्थ = -------, वाक्य =----------------------------
५. टाँग अड़ाना : अर्थ = -------, वाक्य =----------------------------
६. आँख मिलाकर खड़े रहना : अर्थ = -------, वाक्य =----------------------------
७. उड़न छू होना : अर्थ = -------, वाक्य =----------------------------
८. सिहर उठना : अर्थ = -------, वाक्य =----------------------------
९. चक्कर काटना : अर्थ = -------, वाक्य =----------------------------
१०. चुप्पी में बँध जाना : अर्थ = -------, वाक्य =----------------------------

उपयोजित लेखन

अपने प्रिय लेखक/कवि को पत्र लिखकर उनकी किसी रचना के बारे में अपना मत व्यक्त कीजिए ।

7HCTYV

४. बटोहिया

(पूरक पठन)

– *रघुवीर नारायण*

सुंदर सुभूमि भैया भारत के देसवा से
मोरे प्राण बसे हिम खोह रे बटोहिया
एक द्‌वार घेरे रामा हिम कोतवलवा से
तीन द्‌वार सिंधु घहरावे रे बटोहिया ।

जाहु–जाहु भैया रे बटोही हिंद देखी आउ
जहवाँ कुहुँकि कोइल बोले रे बटोहिया
पवन सुगंध–मंद अगर, चंदनवां से
कामिनी बिरह राग गावे रे बटोहिया ।

गंगा रे जमुनवा के झिलमिल पनियाँ से
सरजू झमकि लहरावे रे बटोहिया
ब्रह्मपुत्र–पंचनद घहरत निसि–दिन
सोनभद्र मीठे स्वर गावे रे बटोहिया ।

ऊपर अनेक नदी उमड़ि–घुमड़ि नाचे
जुगन के जदुआ जगावे रे बटोहिया
आगरा, प्रयाग, काशी, दिल्ली, कलकतवा से
मोरे प्राण बसे सरजू तीर रे बटोहिया ।

जाउ–जाउ भैया रे बटोही हिंद देखि आउ
जहाँ ऋषि चारों बेद गावें रे बटोहिया
सीता के बिमल जस, राम जस, कृष्ण जस
मोरे बाप–दादा के कहानी रे बटोहिया ।

परिचय

जन्म : १८८४ (बिहार)
मृत्यु : १९५५
परिचय : रघुवीर नारायण जी प्रतिभाशाली, मृदुभाषी, हिंदी साहित्यकार तथा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी थे । जन–जागरण गीत की तरह गाया जाने वाला यह गीत पूरबी लोकधुन में लिखा गया है । आप भोजपुरी की इस कविता से अमर कवियों में शामिल हो गए ।
प्रमुख कृतियाँ : 'रघुवीर पत्र–पुष्प', 'रघुवीर रसरंग', 'रंभा' (अप्रकाशित खंडकाव्य) आदि ।

पद्‌य संबंधी

लोकभाषा में लिखे प्रस्तुत गीत में रघुवीर नारायण जी ने भारत देश का गौरवगान किया है । इस गीत में कवि ने भारत भूमि की प्रकृति, नदी, पहाड़, महापुरुष, कवि–लेखक, वेद–पुराण, तीर्थस्थलों आदि की चर्चा की है । आपका कहना है कि यह देश पूरी दुनिया का 'निचोड़' है । अतः सभी को इस देश की यात्रा अवश्य करनी चाहिए ।

ब्यास, बाल्मीकि, ऋषि गौतम, कपिलमुनि
सूतल अमर के जगावे रे बटोहिया
रामानुज-रामानंद न्यारी-प्यारी रूपकला
ब्रह्म सुख बन के भँवर रे बटोहिया ।

नानक, कबीर, गौर-संकर, श्रीराम-कृष्ण
अलख के बतिया बतावे रे बटोहिया
बिद्यापति, कालीदास, सूर, जयदेव कवि
तुलसी के सरल कहानी रे बटोहिया ।

जाउ-जाउ भैया रे बटोही हिंद देखि आउ
जहाँ सुख झूले धान खेत रे बटोहिया
बुद्धदेव, पृथु, बिक्रमारजुन, सिवाजी के
फिरि-फिरि हिय सुध आवे रे बटोहिया ।

अपर प्रदेस, देस, सुभग-सुघर बेस
मोरे हिंद जग के निचोड़ रे बटोहिया
सुंदर सुभूमि भैया भारत के भूमि जेही
जन रघुबीर सिर नावे रे बटोहिया ।

— ० —

शब्द संसार

देसवा पुं. सं.(दे.) = देश
कोइल स्त्री.सं.(दे.) = कोयल
बटोहिया पुं.सं.(दे.) = पथिक, राही
सोनभद्र स्त्री.सं.(सं.) = नदी विशेष का नाम
घहरना क्रि.(हिं.) = ऊँची आवाज में गर्जना करना
हिम खोह स्त्री.सं.(सं) = हिम की गुफा
सुभग वि.(सं) = मनोहर, सुखद
झमकना क्रि.(हिं.) = झनकार होना

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–**

(१) सही विकल्प चुनकर लिखिए :

१. 'बटोहिया' शब्द से तात्पर्य है ------ [ ]
(यात्री) (नाविक) (कहार)

२. तीन द्वारों से गर्जना कर रहा है ------ [ ]
(हिमालय) (भारत) (समुद्र)

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

१. कविता में आए संत कवियों के नाम – [ ] [ ]

२. कविता में आई वनस्पतियों के नाम – [ ] [ ]

(३) कविता में इस अर्थ में प्रयुक्त शब्द लिखिए :

१. समुद्र = -----------
२. किनारा = -----------
३. सुंदर स्त्री = -----------
४. हृदय = -----------

(४) गीत से अपनी पसंद की किन्हीं चार पंक्तियों का भावार्थ लिखिए ।

उपयोजित लेखन

अपने विद्‌यालय के प्राचार्य को ग्रंथालय में हिंदी पूरक पठन के लिए आवश्यक पुस्तकों की सूची देते हुए, उन्हें उपलब्ध कराने हेतु विद्‌यार्थी प्रतिनिधि के नाते निम्न प्रारूप में अनुरोध पत्र लिखिए :

दिनांक :
प्रति,
....
....
अभिवादन .....
विषय ....
महोदय,
विषय विवेचन
....
....
....
....
....
आपका/आपकी आज्ञाकारी,
....
(विद्‌यार्थी प्रतिनिधि)
कक्षा : ....

7HLQ1I

५. अथातो घुमक्कड़ -जिज्ञासा

-पं. राहुल सांकृत्यायन

शास्त्रों में जिज्ञासा ऐसी चीज के लिए होनी बतलाई है जो कि श्रेष्ठ तथा व्यक्ति और समाज सबके लिए परम हितकारी हो । दुनिया दुख में हो चाहे सुख में, सभी समय यदि सहारा पाती है तो घुमक्कड़ों की ही ओर से । प्राकृतिक आदिम मनुष्य परम घुमक्कड़ था । खेती, बागवानी तथा घर-द्‍वार से मुक्त आकाश के पक्षियों की भाँति पृथ्वी पर सदा विचरण करता था । जाड़े में यदि इस जगह था, तो गर्मियों में वहाँ से दो सौ कोस दूर ।

आधुनिक काल में घुमक्कड़ों के काम की बात कहने की आवश्यकता है क्योंकि लोगों ने घुमक्कड़ों की कृतियों को चुराके उन्हें गला फाड़-फाड़ अपने नाम से प्रकाशित किया, जिससे दुनिया जानने लगी कि वस्तुतः कोल्हू के बैल ही दुनिया में सब कुछ करते हैं। आधुनिक विज्ञान में चार्ल्स डार्विन के प्रकाश में दिशा बदलनी पड़ी। लेकिन क्या डार्विन अपने महान आविष्कारों को कर सकता था, यदि उसने घुमक्कड़ी का व्रत नहीं लिया होता ?

मैं जानता हूँ, पुस्तकें भी कुछ-कुछ घुमक्कड़ी का रस प्रदान करती हैं, लेकिन जिस तरह फोटो देखकर आप हिमालय के देवदार के गहन वनों और श्वेत हिम मुकुटित शिखरों के सौंदर्य, उनके रूप, उनके गंध का अनुभव नहीं कर सकते उसी तरह यात्रा कथाओं से आपको उस बूँद से भेंट नहीं हो सकती जो कि एक घुमक्कड़ को प्राप्त होती है । आदिम घुमक्कड़ों में से आर्यों, शकों, हूणों ने क्या-क्या किया, अपने खूनी पथों द्‍वारा मानवता के पथ को किस तरह प्रशस्त किया, इसे इतिहास में हम उतना स्पष्ट वर्णित नहीं पाते, किंतु मंगोल घुमक्कड़ों की करामतों को तो हम अच्छी तरह जानते हैं । बारूद, तोप, कागज, छापखाना, दिग्दर्शक, चश्मा यही चीजें थीं, जिन्होंने पश्चिम में विज्ञानयुग का आरंभ कराया और इन चीजों को वहाँ ले जाने वाले मंगोल घुमक्कड़ थे ।

कोलंबस और वास्को-द-गामा दो घुमक्कड़ ही थे, जिन्होंने पश्चिमी देशों के आगे बढ़ने का रास्ता खोला। अमेरिका अधिकतर निर्जन-सा पड़ा था। एशिया के कूपमंडूकों को घुमक्कड़ धर्म की महिमा भूल गई, इसलिए उन्होंने अमेरिका पर अपने झंडे नहीं गाड़े । दो शताब्दियों पहले तक आस्ट्रेलिया खाली पड़ा था । चीन और भारत को सभ्यता का बड़ा गर्व है। इनको इतनी समझ नहीं आई कि जाकर वहाँ अपना झंडा गाड़ आते। आज

परिचय

जन्म : १८९३, आजमगढ़ (उ.प्र.)
मृत्यु: १९६३
परिचय : छत्तीस भाषाओं के ज्ञाता राहुल सांकृत्यायन जी ने उपन्यास, निबंध, कहानी, आत्मकथा, संस्मरण व जीवनी आदि विधाओं में साहित्य सृजन किया है । घुमक्कड़ी यानी गतिशीलता आपके जीवन का मूलमंत्र रही है । आधुनिक हिंदी साहित्य में आप एक यात्राकार, इतिहासविद्, तत्वान्वेषी युगपरिवर्तनकार, साहित्यकार के रूप में जाने जाते हैं।
प्रमुख कृतियाँ : 'सतमी के बच्चे', 'वोल्गा से गंगा' (कहानी संग्रह), 'सिंह सेनापति', 'भोगा नहीं', 'दुनिया को बदलो' (उपन्यास), 'मेरी जीवन यात्रा' (आत्मकथा), 'महामानव बुद्‌ध', 'घुमक्कड़ स्वामी', 'लेनिन' (जीवनी), 'किन्नर देश की ओर' 'मेरी लद्दाख यात्रा', 'मेरी तिब्बत यात्रा', 'रूस में पच्चीस मास' (यात्रा वर्णन) आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत वैचारिक निबंध में राहुल सांकृत्यायन जी ने 'घुमक्कड़ी' अर्थात यात्रा करने की उपयोगिता पर विशद रूप से प्रकाश डाला है ।

आपका मानना है कि यात्रा करने या देश-विदेश घूमने से ज्ञान में अभिवृद्धि होती है । किसी विषय वस्तु की जानकारी, पढ़कर प्राप्त करने की तुलना में प्रत्यक्ष जाकर देखना अधिक प्रभावी होता है ।

अपने अरबों की जनसंख्या के भार से भारत और चीन की भूमि दबी जा रही है और आस्ट्रेलिया में एक करोड़ भी आदमी नहीं हैं । आज एशियाइयों के लिए आस्ट्रेलिया का द्‌वार बंद है लेकिन दो सदी पहले वह हमारे हाथ की चीज थी। क्यों भारत और चीन आस्ट्रेलिया की अपार संपत्ति और अमित भूमि से वंचित रह गए? इसीलिए कि वह घुमक्कड़ धर्म से विमुख थे, उसे भूल चुके थे ।

हाँ, मैं इसे भूलना ही कहूँगा क्योंकि किसी समय भारत और चीन ने बड़े-बड़े नामी घुमक्कड़ पैदा किए । वे भारतीय घुमक्कड़ ही थे, जिन्होंने दक्षिण-पूरब में लंका, बर्मा, मलाया, यवद्‌वीप, स्याम, कंबोज, चंपा, बोर्नियो और सेलीबीज ही नहीं, फिलीपीन तक का धावा मारा था, और एक समय तो जान पड़ा कि न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया भी बृहत्तर भारत का अंग बनने वाले हैं; लेकिन कूपमंडूकता तेरा सत्यानाश हो! देश के बुद्‌धिमानों ने उपदेश करना शुरू किया कि समुंदर के खारे पानी और धर्म में बड़ा बैर है, उसके छूने मात्र से वह नमक की पुतली की तरह गल जाएगा। इतना बतला देने पर क्या कहने की आवश्यकता है कि समाज के कल्याण के लिए घुमक्कड़ धर्म को भूलने के कारण ही हम सात शताब्दियों तक धक्का खाते रहे, ऐरे-गैरे जो भी आए, हमें चार लात लगा गए ।

कोई-कोई महिलाएँ पूछती हैं-क्या स्त्रियाँ भी घुमक्कड़ी कर सकती हैं, क्या उनको भी इस महाव्रत की दीक्षा लेनी चाहिए ? इसके बारे में यहाँ इतना कह देना है कि घुमक्कड़ धर्म संकुचित धर्म नहीं है, जिसमें स्त्रियों के लिए स्थान नहीं हो । स्त्रियाँ इसमें उतना ही अधिकार रखती हैं, जितना पुरुष। यदि वह जन्म सफल करके व्यक्ति और समाज के लिए कुछ करना चाहती हैं, तो उन्हें भी दोनों हाथों इस धर्म को स्वीकार करना चाहिए। बुद्‌ध ने सिर्फ पुरुषों के लिए घुमक्कड़ी करने का आदेश नहीं दिया, बल्कि स्त्रियों के लिए भी उनका वही उपदेश था ।

भारत के प्राचीन धर्मों में जैन धर्म भी है। जैन धर्म के प्रतिष्ठापक श्रमण महावीर कौन थे ? वह भी घुमक्कड़ी के राजा थे। घुमक्कड़ धर्म के आचरण में छोटी-से-बड़ी तक, सभी बाधाओं और उपाधियों को उन्होंने त्याग दिया था। घर-द्‌वार और नारी-संतान ही नहीं, वस्त्र का भी वर्जन कर दिया था। ''करतल भिक्षा, तरुतल वास'' तथा दिगंबर को उन्होंने इसीलिए अपनाया था कि निर्द्‌वंद्‌व विचरण में कोई बाधा न रहे। मर्मज्ञ सहमत हैं कि भगवान् महावीर दूसरी-तीसरी नहीं, प्रथम श्रेणी के घुमक्कड़ थे। वह आजीवन घूमते ही रहे । वैशाली में जन्म लेकर विचरण करते हुए पावा में उन्होंने अपना शरीर छोड़ा। आज-कल कुटिया या आश्रम बनाकर बैल की तरह कोल्हू से बँधे कितने ही लोग अपने को अद्‌वितीय महात्मा कहते हैं या

श्रवणीय

अपने बुजुर्गों द्‌वारा की हुई किसी यात्रा का वर्णन सुनिए ।

पठनीय

भारत की घुमंतू जातियों के जीवन की जानकारी अंतरजाल से पढ़िए तथा कक्षा में चर्चा कीजिए ।

चेलों से कहलवाते हैं; लेकिन मैं तो कहूँगा कि वे ऐसे मुलम्मेवाले महात्माओं और महापुरुषों के फेर से बचे रहें ।

इनकारी महापुरुषों की बात से यह नहीं मान लेना होगा कि दूसरे लोग ईश्वर के भरोसे गुफा या कोठरी में बैठकर सारी सिद्धियाँ पा गए या पा जाते हैं । यदि ऐसा होता तो शंकराचार्य जो साक्षात ब्रह्मस्वरूप थे क्यों भारत के चारों कोनों की खाक छानते फिरे ? शंकर को शंकराचार्य किसी ब्रह्म ने नहीं बनाया, उन्हें बड़ा बनाने वाला था यही घुमक्कड़ी धर्म । आचार्य शंकराचार्य बराबर घूमते रहे –आज केरल में थे, दो ही महीने बाद मिथिला में और अगले साल कश्मीर या हिमालय के किसी दूसरे भाग में । आचार्य शंकर तरुणाई में ही शिवलोक सिधार गए किंतु थोड़े से जीवन में उन्होंने सिर्फ तीन भाष्य ही नहीं लिखे; बल्कि अपने आचरण से अनुयायियों को वह घुमक्कड़ी का पाठ पढ़ा गए कि आज भी उसके पालन करने वाले सैकड़ों मिलते हैं । वास्को-द-गामा के भारत पहुँचने से बहुत पहले शंकराचार्य के शिष्य मास्को और यूरोप तक पहुँचे थे । उनके साहसी शिष्य सिर्फ भारत के चार धामों से ही संतुष्ट नहीं थे, बल्कि उनमें से कितनों ने जाकर बाकू (रूस) में धूनी रमाई । एक ने पर्यटन करते हुए वोल्गा तट पर निज्नीनोवोग्राद के महामेले को देखा । फिर क्या था, कुछ समय के लिए वहीं डट गया और उसने रूसियों के भीतर कितने ही अनुयायी पैदा कर लिए, जिनकी संख्या भीतर-ही-भीतर बढ़ती हुई इस शताब्दी के आरंभ में कुछ लाख तक पहुँच गई थी ।

भला हो, रामानंद और चैतन्य का, जिन्होंने पंक से पंकज बनकर आदिकाल से चले आए महान घुमक्कड़ धर्म की फिर से प्रतिष्ठापना की, जिसके फलस्वरूप प्रथम श्रेणी के तो नहीं, किंतु द्वितीय श्रेणी के बहुत से घुमक्कड़ पैदा हुए ।

दूर शताब्दियों की बात छोड़िए, अभी शताब्दी भी नहीं बीती, इस देश से स्वामी दयानंद को विदा हुए । स्वामी दयानंद को ऋषि दयानंद किसने बनाया ? घुमक्कड़ी धर्म ने । उन्होंने भारत के अधिक भागों का भ्रमण किया; पुस्तक लिखते, शास्त्रार्थ करते वह बराबर भ्रमण करते रहे ।

बीसवीं शताब्दी के भारतीय घुमक्कड़ों की चर्चा करने की आवश्यकता नहीं । इतना लिखने से मालूम हो गया होगा कि संसार में यदि कोई अनादि सनातन धर्म है, तो वह घुमक्कड़ धर्म है । लेकिन वह संकुचित संप्रदाय नहीं है, वह आकाश की तरह महान है, समुद्र की तरह विशाल है । जिन धर्मों ने अधिक यश और महिमा प्राप्त की है, वह केवल घुमक्कड़ थे, उनके अनुयायी भी ऐसे घुमक्कड़ थे जिन्होंने धर्म के संदेश को दुनिया के कोने-कोने में पहुँचाया ।

संभाषणीय

अपनी सैर में घटी कोई हास्य घटना मित्रों/सहेलियों को बताइए ।

इतना कहने से अब कोई संदेह नहीं रह गया कि घुमक्कड़ धर्म से बढ़कर दुनिया में धर्म नहीं है । घुमक्कड़ी वही कर सकता है जो निश्चिंत है। किन साधनों से संपन्न होकर आदमी घुमक्कड़ बनने का अधिकारी हो सकता है, यह आगे बतलाया जाएगा; किंतु घुमक्कड़ी के लिए चिंताहीन होना आवश्यक है, और चिंताहीन होने के लिए घुमक्कड़ी भी आवश्यक है। दोनों का अन्योन्याश्रय होना दूषण नहीं, भूषण है । घुमक्कड़ी से बढ़कर सुख कहाँ मिल सकता है ? आखिर चिंताहीनता तो सुख का स्पष्ट रूप है । घुमक्कड़ी में कष्ट भी होते हैं, लेकिन उसी तरह समझिए जैसे भोजन में मिर्च। मिर्च में यदि कड़वाहट न हो, तो क्या कोई मिर्चप्रेमी उसमें हाथ भी लगाएगा ? वस्तुतः घुमक्कड़ी में कभी-कभी होने वाले कड़वे अनुभव उसके रस को और बढ़ा देते हैं, उसी तरह जैसे काली पृष्ठभूमि में चित्र अधिक खिल उठता है ।

व्यक्ति के लिए घुमक्कड़ी से बढ़कर कोई नकद धर्म नहीं है । मानव जाति का भविष्य घुमक्कड़ी पर निर्भर करता है इसलिए मैं कहूँगा कि हरेक तरुण और तरुणी को घुमक्कड़ व्रत ग्रहण करना चाहिए । इसके विरुद्ध दिए जाने वाले सारे प्रमाणों को झूठ और व्यर्थ समझना चाहिए । हजारों बार के तजुर्बे की हुई बात है कि महानदी के वेग की तरह घुमक्कड़ की गति को रोकने वाला दुनिया में कोई पैदा नहीं हुआ ।

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं, यदि तरुण-तरुणी घुमक्कड़ी धर्म की दीक्षा लेते हैं तो-यह मैं अवश्य कहूँगा कि यह दीक्षा वही ले सकता है, जिसमें बहुत भारी मात्रा में हर तरह का साहस है ।

— ० —

लेखनीय

अपनी कक्षा द्‌वारा की गई किसी क्षेत्रभेंट का वर्णन लिखिए ।

शब्द संसार

जिज्ञासा स्त्री.सं.(सं.) = जानने की इच्छा, ज्ञान की चाह

घुमक्कड़ वि.(हिं.) = बहुत घूमने वाला

मर्मज्ञ वि.(सं.) = भेद, रहस्य समझने वाला

मुलम्मा वि.(अ.) = चमकाया हुआ, चाँदी या सोने का पानी चढ़ाया हुआ परत

भाष्य पुं. सं.(सं.) = सूत्र या मूल ग्रंथ की व्याख्या

दूषण पुं.सं.(सं.) = दोष, खराबी

तजुर्बा पुं. सं.(फा.) = अनुभव

स्वाध्याय

✻ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

यहूदियों को प्राप्त अवसर के क्षेत्र

------ ------ ------ ------

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

१. जिज्ञासा इनके लिए परम हितकारी –

----

२. आदिम मनुष्य इनसे मुक्त था–

----

(३) कृति पूर्ण कीजिए :

१. पश्चिमी देशों को आगे बढ़ाने वाले

२. अत्यधिक जनसंख्या के भार से दबे जा रहे देश

----

(४) इन चीजों ने विज्ञान युग का प्रारंभ किया

(५) लिखिए :

१. आकृति में दिए शब्दों से कृदंत तथा तद्धित बनाइए :

व्यक्ति, बात, पथ, घूमना, बदलना, स्थान, देना, चाहना

कृदंत	तद्धित
------	------
------	------
------	------
------	------

२. शब्द समूह के लिए एक शब्द लिखिए :

(अ) पथ को दर्शाने वाला – ....

(आ) संकुचित वृत्तिवाला – ....

(इ) सदैव घूमने वाला – ....

(ई) सौ वर्षों का काल – ....

अभिव्यक्ति पर्यटन से होने वाले विभिन्न लाभों के बारे में अपने विचार लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) निम्न वाक्यों में अलंकार पहचानकर बताइए :

१. लट लटकनि मनो मत्त मधुप गन मादक मधुहि पियें। (..................)

२. मधुबन की छाती को देखो।
सूखी कितनी इसकी कलियाँ। (..................)

३. कंकन किंकिन नूपुर धुनि सुनि। (..................)

४. मेरी भव-बाधा हरौ राधा नागरि सोई।
जा तन की झाईं परै, स्यामु हरित दुति होई ।। (..................)

५. कहै कवि बेनी बेनी ब्याल की चुराई लीनी। (..................)

६. तीन बेर खाती थीं वे तीन बेर खाती हैं। (..................)

७. जेते तुम तारे तेते नभ में न तारे हैं। (..................)

८. हाय फूल-सी कोमल बच्ची।
हुई राख की थी ढेरी ।। (..................)

९. प्रातः नभ था बहुत नीला शंख जैसे (..................)

१०. संसार की समरस्थली में धीरता। (..................)

११. सुख चपला-सा, दुख घन में
उलझा है चंचल मन कुरंग। (..................)

१२. चमचमात चंचल नयन बिच घूँघट पर झीन
मानहु सुरसरिता विमल जल बिछुरत जुग मीन ।। (..................)

१३. मानो घर-घर न हो, जैसे कोई चिड़ियाघर हो।
जिसमें खूँखार जानवर आबाद हों। (..................)

(२) निम्नलिखित पद्यांशों में मात्राओं की गणना करके छंदों के नाम लिखिए :

१. कबिरा संगत साधु की, ज्यों गंधी की बास।
जो गंधी कुछ दे नहीं, तो भी बास सुवास ।।

प्रथम चरण = ________ मात्राएँ	द्वितीय चरण = ________ मात्राएँ

तृतीय चरण= ________ मात्राएँ	चतुर्थ चरण = ________ मात्राएँ

छंद : ________

२. भोजन करत बुलावत राजा। नहिं आवत तजि बाल समाजा।
कौसल्या जब बोलन जाई। ठुमकु-ठुमकु प्रभु चलहि पराई ।।

प्रथम चरण = ________ मात्राएँ	द्वितीय चरण = ________ मात्राएँ

तृतीय चरण = ________ मात्राएँ	चतुर्थ चरण = ________ मात्राएँ

छंद : ________

उपयोजित लेखन

'मेरी अविस्मरणीय सैर' विषय पर अस्सी से सौ शब्दों में निबंध लिखिए।

7HVL36

६. मानस का हंस

– *अमृतलाल नागर*

मनपटल पर बीते दृश्य सजीव हो उठे। चार-पाँच वर्ष का नन्हा-सा बालक कंधे पर झोली लटकाए आँधी-पानी में बढ़ा चला जा रहा है। भागने का प्रयत्न करे तो फिसलने का भय लगता है और धीरे चले तो आँधी-पानी के तेज झोंके उसे डगमगा देते हैं । सहसा देर से कड़कड़ा रही बिजली बच्चे से दो-तीन सौ कदम दूर एक पेड़ पर गिरी । बच्चा भय के मारे दौड़ने लगता है और चार-पाँच कदम के बाद ही फिसलकर गिर पड़ता है । झोली का अन्न बिखर जाता है । बच्चा उठता है । हवा, पानी और कीचड़ उसे उठने नहीं दे रहे हैं । झोली की टोह लेता है, वह कुछ दूर पर छितरी पड़ी है । उसकी कड़ी मेहनत की कमाई, दिन भर की भूख का सहारा पानी में बहा जा रहा है। वह उठने की कोशिश में बार-बार फिसलता है । भीख में पाया हुआ आटा गीला और बहता हुआ देखकर वह रो पड़ता है । 'हाय-हाय-हाय' बिलखता हुआ फिर सरक-सरककर तेजी से अपनी झोली के पास जाता है और उसे उठाकर झटपट कंधे पर टाँगता है । कीचड़ सनी थैली से आटे का पानी चू-चूकर उसकी पसली पर बह रहा है । आकाश फिर गरजता है । सहमा बच्चा उठकर चलने के लिए खड़ा होने का प्रयत्न सावधानी से करता है और अपने-आपको घर की ओर बढ़ाने में सफल भी हो जाता है । घर बहुत दूर नहीं पर घर है कहाँ?

झोंपड़ियों के मानदंड से भी हीनतम आठ-दस छोटी-छोटी झोंपड़ियों की बस्ती के लिए यह तूफान प्रलय बनकर आया था । अधिकांश झोंपड़ियाँ या तो उड़ गई थीं या फिर ढही पड़ी थीं । भिखारियों के टोले में सभी अपने-अपने राजमहलों की रक्षा करने के लिए जूझ रहे थे । उन्हीं में से एक कोने पर बना पार्वती अम्मा का घास-फूस और ढाक के पत्तों का राजमहल भी ढह पड़ा था । बहुत से ढाक के पत्ते और गली हुई फूस टट्टर में से निकल चुकी थी । उसके बचे-खुचे भाग के नीचे पार्वती अम्मा कराह रही थीं । उनकी गृहस्थी के मटके, कुल्हड़ फूटे पड़े थे ।

बच्चा 'अम्मा' कहकर झपटता है । टट्टर के नीचे दबी पड़ी हुई बुढ़िया का आगे निकला हुआ हाथ पकड़कर खींचने का निष्फल प्रयत्न करता हुआ रो उठता है । बुढ़िया ने कराहकर आँखें खोलीं, बुझे स्वर में कहा- ''किसी को बुलाय लाओ, तुमसे न उठेगी ।''

बच्चा बस्ती भर में दौड़ता फिरा-''ए मंगलू काका, तनी हमारी अम्मा को निकाल देव । उनके ऊपर छप्पर गिर पड़ा है-ए भैंसिया की बहू,

परिचय

जन्म : १९१६, आगरा (उ.प्र.)
मृत्यु : १९९०
परिचय : अमृतलाल नागर जी ने सहज, सरल, दृश्य के अनुकूल भाषा में लेखन कार्य किया है । आपने मुहावरों, लोकोक्तियों, विदेशी भाषा तथा देशज शब्दों का आवश्यकतानुसार प्रयोग भी अपनी रचनाओं में किया है । अतीत को वर्तमान से जोड़ने और प्रेरणा के स्रोत के रूप में प्रस्तुत करने का कार्य आपने बखूबी किया है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'मानस का हंस', 'बूँद और समुद्र', 'अमृत और विष', 'खंजन नयन' (उपन्यास), 'एटम बम', 'वाटिका' (कहानी संग्रह),'युगावतार', 'नुक्कड पर' (नाटक), 'गदर के फूल' 'जिनके साथ जिया' (संस्मरण) 'नटखट चाची', 'बाल महाभारत' (बाल साहित्य), 'सेठ बाँकेमल', 'कृपया दायें चलिए' (व्यंग्य) आदि ।

गद्‍य संबंधी

प्रस्तुत अंश में अमृतलाल नागर जी ने रामबोला तुलसी दास के बचपन, गरीबी, मातृप्रेम, उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति का बड़ा ही सजीव वर्णन किया है । एक पुत्र का अपनी माँ के प्रति समर्पण की भावना अनुरणीय है ।

ए सलौनी काकी, ए झबुआ की आजी, ए फेंकवा भैया...'' परंतु न काका ने सुना, न भैया ने, न आजी ने । पूरी बस्ती इस प्रलय प्रकोप के कारण त्रस्त है। गोदी के बच्चे और अंधे-लँगड़े-लूले असहाय जन हर जगह रिरिया रहे हैं । बहुत-से भिखारी इस समय आसपास के गाँवों में अपनी कमाई करने गए हुए हैं । अत्यंत अशक्त जन ही पीछे छूट गए हैं । जैसे-तैसे करके वे अपने ही ऊपर पड़ी विपत्ति से निबट रहे हैं, फिर कौन-किसकी सुने ।

मूसलाधार पानी में भीगता, निराशा में डूबा हुआ रामबोला कुछ क्षणों तक स्तब्ध खड़ा रहा, फिर धीरे-धीरे अपनी गिरी हुई झोंपड़ी के पास आया। देखा, पार्वती अम्मा का हाथ वैसे ही बाहर निकला भीग रहा था । उनके मुँह और शरीर पर भीगते छप्पर का बोझ भी यथावत ही था । रामबोला की मनोपीड़ा कुछ कर गुजरने के लिए चंचल हो उठी । इधर-उधर सिर घुमाकर काम की वस्तु की खोज की । छप्पर का जो भाग फूस-पत्तेविहीन होकर पड़ा था, उसके एक सिरे पर बाँस का एक छोटा टुकड़ा बड़े बाँस से जुड़ा हुआ बँधा था । बालक को लगा कि यही काम का है... बाँस के इस टुकड़े को खींच लिया जाए फिर इससे अम्मा की देह पर पड़े हुए छप्पर को ऊँचा उठा दिया जाए जिससे कि अम्मा उसके नीचे सरककर पौढ़ें । उपाय सूझते ही काम चल पड़ा । बाँस का टुकड़ा खींचना शुरू किया तो टट्टर की पुरानी सुतली ही टूट गई । टूटने दो, अभी तो इस सिरे का छप्पर उठाना है । छप्पर के एक सिरे के नीचे बाँस का टुकड़ा अड़ाकर उसे उठाना आरंभ किया । छप्पर का कोना तो तनिक-सा ही उठ पाया पर जोर इतना लगा कि कीचड़ में पाँव फिसल गया । गिरा, फिर उठा,

अबकी बार घुटने टेककर बैठा और फिर बाँस अड़ाया । छप्पर कुछ उठा सही पर नन्हे हाथ बोझ न सँभाल पाए। बालक को अपनी पराजय तो खली ही पर अम्मा ऊपर का बोझ तनिक-सा उठकर फिर मुँह पर गिरने से जब कराहीं, तब उसे अनचाहे अपराध की तरह और भी खल गया । ताव में आकर, 'जै हनुमान स्वामी, जोर लगाओ' ललकारकर दूसरी बार छप्पर उठाने में रामबोला ने अपनी पूरी शक्ति लगा दी । छप्पर लड़खड़ाया, पर उसे गिरने न दिया, और भी जोशीले हुंकारे भर-भरकर वह अंत में एक कोना उठाने में सफल हो ही गया । फिर दूसरे कोने को उठाने की चिंता पड़ी। 'इसे काहे से उठाएँ?' कोई मतलब की चीज दिखलाई न पड़ी । पड़ोसी के यहाँ कुछ खपच्चियाँ पड़ी थीं, एक बार मन हुआ कि उठा लाए पर कुछ ही देर में गाली, मार के भय से वह उत्साह उड़न छू हो गया । टहनी काम के योग्य सिद्‌ध न हुई । छप्पर के नीचे अम्मा की लठिया झाँकती नजर आई । उसे लपककर खींच लिया और उसके सहारे से किसी प्रकार दूसरा सिरा भी ऊँचा उठा ही लिया । दो-क्षणों तक अपने श्रम की सफलता को

बाढ़ के प्रकोप का परिणाम दर्शाने वाले समाचार सुनिए ।

साहसी बालकों के प्रेरक प्रसंगों का वाचन कीजिए ।

विजय पुलक भरे संतोष से निहारता रहा, फिर पार्वती अम्मा के सिरहाने की तरफ बढ़ा ।

भीगते हुए भी अम्मा निर्विकार मुद्रा में काठ-सी पड़ी थीं । उनके कान से मुँह सटाकर रामबोला ने जोर से कहा-''अम्मा, वैसी सरक जाओ तो भीजोगी नहीं ।''

''मोरि देह तो पाथर हुई गई है रे, कैसे सरकी ?'' सुनकर रामबोला हताश हो गया । एक बार शिकायत भरा सिर उठाकर बरसते आकाश को देखा, फिर और कुछ न सूझा तो अम्मा से लिपटकर लेट गया । स्वयं भीगते हुए भी उसे यह संतोष था कि वह अपनी पालनहारी को वर्षा से बचा रहा है पर यह संतोष भी अधिक देर तक टिक न पाया । पार्वती अम्मा तब भी पानी से भीग रही थी ।

आकाश में बिजली की कौंधें बीच-बीच में लपक उठती थीं । बादलों की गड़गड़ाहट सुनकर रामबोला को लगा कि मानो चैनसिंह ठाकुर अपने हलवाहा को डाँट रहे हैं । रामबोला अनायास ही ताव में आ गया । उठा और फिर नये श्रम की साधना में लग गया । दूसरे छप्पर के ढीले पड़ गए अंजर-पंजर को कसने के लिए पास ही खलार में उगी लंबी घास-पतवार उखाड़ लाया । रामबोला ने भिखारी बस्ती के और लोगों को जैसे घास बँटकर रस्सी बनाते देखा था; वैसे ही बँटने लगा । जैसे-तैसे रस्सियाँ बँटी, जस-तस टट्टर बाँधा । अब जो उसकी आधी से अधिक उधड़ी हुई छावन पर ध्यान गया तो नन्हे मन के उत्साह को फिर काठ मार गया । घास-फूस, ज्यौनारों में जूठन के साथ-साथ बाहर फेंकी गई पत्तलों और चिथड़े-गुदड़ों से बनाई गई वह छोटी-सी छपरिया फिर से छाने के लिए वह सामान कहाँ से जुटाए ? हवा द्‌वारा उड़ाए हुए माल वह इस बरसात में कहाँ-कहाँ ढूँढ़ेगा । दैव आज प्रलय की बरखा करके ही दम लेंगे । हवा के मारे औरों के छप्पर भी पेंगें ले रहे हैं । अभी तक अपनी-अपनी छावनों को बचाने के लिए सभी तो तूफान से जूझ रहे हैं... 'तब हम अब का करी ? हमरौ पेट भुखान है । हम नान्हें से तो हैं हनुमान स्वामी ! अब तक थक गए भाई ! अब हम अपनी पार्वती अम्मा के लगे जायके पौढ़ैंगे । दैउ बरसै तो बरसा करै । हम क्या करै बजरंगबली, तुम्हीं बताओ । तुमसे बने भाई तो राम जी के दरबार में हमारी गुहार लगाय आओ, औ न बने तो तुमहूं अपनी अम्मा के लगे जायके पौढ़ौ ।'

रामबोला खिसियाना-सा होकर रेंगते हुए अपनी छपरिया में घुसा । उसने खींचकर पार्वती अम्मा का हाथ सीधा किया तो वे पीड़ा से कराह उठीं पर बड़ी देर से एक ही मुद्रा में पड़ी हुई जड़ बाँह सीधी हो गई । स्नायु कंपन हुआ, जिससे उनके शरीर का आधा भाग थोड़ी देर तक काँपता रहा ।

संभाषणीय

'विनाश और निर्माण प्रकृति के नियम हैं', विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए ।

बालक के लिए यह आश्चर्यजनक, भयदायक दृश्य तो अवश्य था पर उसे यह कंपित देह पहले की मृतवत देह की स्थिति से कहीं अधिक अच्छी भी लगी । बोल पड़ा ...

''पार्वती अम्मा ! पार्वती अम्मा !!''

''हाँ, बचवा ।'' पार्वती अम्मा का वेदना में बुझा स्वर सुनाई दिया ।

''हम तुमको आगे ढकेलेंगे । तुम एक बार जोर से कराहोगी तो जरूर, पर तुम्हारी ये जकड़ी देह खुल जाएगी । बरखा से तुम्हारा बचाव भी हुइ जायगा ।''

बुढ़िया माई 'ना-ना' कहती ही रहीं पर रामबोला ने उनकी बगल में लेटकर कोहनी से ढकेलना आरंभ कर दिया । 'जय हनुमान स्वामी' का नारा लगाकर दाँत भींच और सिर झटकाकर रामबोला ने अपनी पूरी-पूरी शक्ति लगा दी । पार्वती अम्मा कराहती हुई पीछे गई । बालक अपनी जीत से खुश हुआ । गौर से देखा पर इस बार पार्वती अम्मा के किसी भी अंग में कंपन न हुआ । उन्हें खाँसी अवश्य आई और वे देर तक 'राम-राम' शब्द में कराहती रहीं, बस । परंतु अब वे भीग तो नहीं रही हैं । बरसात झेलने के लिए रामबोला की पीठ है । खाँसती-कराहती अम्मा की पीठ सहलाते हुए, विजयी पूत ने इठलाते स्वर में ऐसे चुमकार भरे अंदाज से पूछा कि मानो बड़ा छोटे-से पूछ रहा हो- ''पार्वती अम्मा, बहुत पिराता है ?''

''चुपाय रहौ बच्चा, राम-राम जपौ ।''

''राम-राम...''

—— o ——

लेखनीय

बढ़ता हुआ प्रदूषण और उसकी रोकथाम के लिए किए जाने वाले उपाय लिखिए ।

शब्द संसार

मानदंड पुं. सं.(सं.) = मूल्यांकन की विधि
निष्फल वि.(सं.) = जिसका कुछ फल न हो
रिरियाना क्रि.(दे.) = गिड़गिड़ाना
निर्विकार वि.(सं.) = विकाररहित
कौंध स्त्री.सं.(हिं.) = बिजली की चमक
खलार वि. पुं. (दे.) = नीचा, गहरा, नीची
ज्यौनार स्त्री.सं.(सं.)=भोज, दावत
खिसियाना क्रि.(हिं.) = नाराज होना
अंजर-पंजर पुं.सं.(सं.) = ढाँचे के जोड़

मुहावरे

ताव आना = क्रोध आना ।
उड़न छू हो जाना = भाग जाना ।
उड़ जाना = गायब होना ।

स्वाध्याय

✻ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(१) कृति पूर्ण कीजिए :

१. पार्वती अम्मा के लिए मूल्यवान चीजें
- ______
- ______

२. पानी में ये बहे जा रहे थे
- ______
- ______

(२) रामबोला ने सहायता के लिए इन्हें पुकारा
- ______
- ______
- ______
- ______

(३) उदासीनता की अवस्था में रामबोला को दिखाई दिया :

१. --------------------------
२. --------------------------
३. --------------------------
४. --------------------------

(४) झोंपड़ी के पुनर्निर्माण के लिए बटोरी गई सामग्री
- ______
- ______
- ______
- ______

(५) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

बारिश के कारण बेहाल रामबोला की स्थिति → ______ → ______ → ______ → ______

(६) ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्न शब्द हों।

प्रलय, श्रम की साधना, खपच्चियाँ, बाँस का टुकड़ा

(७) पाठ में आए इन शब्दों के विलोमार्थक शब्द ढूँढ़कर लिखिए :

निर्जीव	×	______	असंतोष	×	______
जय	×	______	टेढ़ा–मेढ़ा	×	______
सफल	×	______	अंत	×	______
आशा	×	______	सूखा	×	______

(८) सूचना के अनुसार परिवर्तन कीजिए :

बच्चा
- वचन परिवर्तन
- समानार्थक
- विलोमार्थक
- लिंग परिवर्तन

अभिव्यक्ति

'विरोधी स्थितियों में मेहनत ही हमारी सहायक बनती है', विषय पर अपने विचार लिखिए।

भाषा बिंदु

(१) निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर प्रयुक्त कारकों को अधोरेखांकित करके उनकी भेद सहित सूची बनाइए :

बरामदे में पहुँचते ही शामनाथ सहसा ठिठक गए । जो दृश्य उन्होंने देखा, उससे उनकी टाँगें लड़खड़ा गईं, बरामदे में ऐन कोठरी के बाहर माँ अपनी कुर्सी पर ज्यों-की-त्यों बैठी थीं । मगर दोनों पाँव कुर्सी की सीट पर रखे हुए और सिर दायें से बायें और बायें से दायें झूल रहा था । मुँह में से लगातार गहरे खर्राटों की आवाजें आ रही थीं । जब सिर कुछ देर के लिए टेढ़ा होकर एक तरफ को थम जाता, तो खर्राटे और भी गहरे हो उठते और फिर जब झटके से नींद टूटती तो सिर फिर दायें से बायें झूलने लगता । पल्ला सिर पर से खिसक आया था, और माँ के झरे हुए बाल, आधे गंजे सिर पर अस्त-व्यस्त बिखर रहे थे । देखते ही शामनाथ क्रुद्ध हो उठे । जी चाहा कि माँ को धक्का देकर उठा दें और उन्हें कोठरी में धकेल दें, मगर ऐसा करना संभव न था, चीफ और बाकी मेहमान पास खड़े थे ।

माँ को देखते ही देशी अफसरों की कुछ स्त्रियाँ हँस दीं कि इतने में चीफ ने धीरे-से-कहा-'अरे ! पूअर डियर !'

कारक	भेद	कारक	भेद
------------	------------	------------	------------
------------	------------	------------	------------
------------	------------	------------	------------
------------	------------	------------	------------
------------	------------	------------	------------
------------	------------	------------	------------

(२) निम्नलिखित वाक्यों में कोष्ठक में से उचित कारक का प्रयोग करके वाक्य फिर से लिखिए :

१. आसमान --- काले दूधिया बादलों में खामोश घमासान मचा हुआ था । (की, में, से)

....

२. वो फुटपाथ --- लगी रेलिंग पर पीठ टिकाकर खड़ी हो गई । (ने, को, से)

....

३. वह झुँझलाते हुए ऑटो --- सड़क के किनारे तक खींच लाया । (के लिए, की, को)

....

४. बच्चों के नाम पर बूढ़े --- एक बार नजर उठाकर जरूर देखा । (में, ने, से)

....

५. --- भई ! शास्त्री नगर में हूँ । (हाँ, अरे, जी)

....

६. उसने जल्दी --- डोंगे का ढक्कन हटाया । (की, पर, से)

....

७. वह लगभग पैरों --- घसीट रही थी । (में, से, को)

....

उपयोजित लेखन

'संगणक की आत्मकथा' इस विषय पर अस्सी से सौ शब्दों में निबंध लिखिए ।

7I5H4T

७. अकथ कथ्यौ न जाइ

– संत नामदेव

राम नाम षेती राम नाम बारी ।।
हमारै धन बाबा बनवारी ।।टेक।।
या धन की देषहु अधिकाई ।
तसकर हरै न लागै काई ।।१।।
दहदिसि राम रह्या भरपूरि ।
संतनि नीयरै साकत दूरि ।।२।।
नामदेव कहै मेरे क्रिसन सोई ।
कूंत मसाहति करै न कोई ।।३।।

राम सो नामा नाम सो रामा ।
तुम साहिब मैं सेवग स्वामा ।।टेक।।
हरि सरवर जन तरंग कहावै ।
सेवग हरि तजि कहुं कत जावे ।।१।।
हरि तरवर जन पंषी छाया ।
सेवग हरिभजि आप गवाया ।।२।।

जन नामदेव पायो नांव हरी ।
जम आय कहा करिहै बौरे ।
अब मोरी छूटि परी ।।टेक।।
भाव भगति नाना बिधि कीन्ही ।
फल का कौन करी ।
केवल ब्रह्म निकटि ल्यौ लागी ।
मुक्ति कहा बपुरी ।।१।।
नांव लेत सनकादिक तारे ।
पार न पायो तास हरी ।
नामदेव कहै सुनौ रे संतौ ।
अब मोहिं समझि परी ।।२।।

परिचय

जन्म : १२७०, सातारा (महाराष्ट्र)

मृत्यु : १३५०, पंढरपुर (महाराष्ट्र)

परिचय : संत नामदेव का महाराष्ट्र में वही स्थान है जो संत कबीर अथवा संत सूरदास का उत्तर भारत में है । विठ्ठल भक्ति आपको विरासत में मिली । आपका संपूर्ण जीवन मानव कल्याण में समर्पित रहा । आप अपनी उच्चकोटि की आध्यात्मिक उपलब्धियों के लिए विख्यात हुए । विश्व में आपकी पहचान 'संत शिरोमणि' के रूप में है । आपने पंजाबी, मराठी और हिंदी में रचनाएँ की हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : संत नामदेव की 'अभंग गाथा' (लगभग २५०० अभंग) प्रसिद्ध हैं । आपने हिंदी भाषा में भी कुछ अभंगों की रचना (लगभग १२५) की है ।

पद्य संबंधी

प्रस्तुत पदों में संत नामदेव ने 'राम नाम' की महिमा का गुणगान किया है । संत नामदेव का कहना है कि 'राम नाम' का जाप ही खेती-बारी है । 'राम नाम' ही जीवन का आधार है । इसी 'राम नाम' का जाप ऋषि-मुनि करते रहते हैं । इसी नाम का जप और श्रवण द्‌वारा जीवन-मरण से मुक्ति मिल सकती है ।

रामनाम जपिबौ श्रवननि सुनिबौ ।
सलिल मोह मैं बहि नहीं जाईबौ ।।टेक।।
अकथ कथ्यौ न जाइ ।
कागद लिख्यौ न माइ ।
सकल भुवनपति मिल्यौ है सहज भाइ ।।१।।
राम माता, राम पिता, राम सबै जीव दाता ।
भणत नामईयौ छीपै ।
कहै रे पुकारि गीता ।।२।।

— ० —

शब्द संसार

षेती स्त्री. सं.(दे.) = खेती, कृषि
देषहु क्रि.(दे.) = देखना
सेवग पुं.सं.(दे.) = सेवक
सरवर पुं.सं.(दे.) = तालाब, सरोवर
पंषी पुं.सं.(दे.) = पंछी, पक्षी
जम पुं.सं.(दे.) = यमराज
बौरे पुं.सं.(दे.) = नादान
बपुरी वि.(दे.) = तुच्छ, बेचारी

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–**

(१) संत नामदेव का ईश्वर के साथ रिश्ता इन उदाहरणों द्वारा व्यक्त हुआ है :

(२) पद्य में इस अर्थ में आए शब्द :

१. जल = ...
२. कान = ...
३. वृक्ष = ...
४. दिशा = ...

(३) लिखिए :

१. पद्य में प्रयुक्त कृष्ण के नाम

२. नामदेव जी द्‌वारा दी गई सीख

(४) पद की प्रथम दो पंक्तियों का सरल अर्थ लिखिए :

उपयोजित लेखन

निम्नलिखित सुवचन पर आधारित कहानी लिखिए :
'स्वास्थ्य ही संपदा है ।'

८. बातचीत

(पूरक पठन)

– *दुर्गाप्रसाद नौटियाल*

[प्रसिद्ध साहित्यकार शिवानी जी से दुर्गाप्रसाद नौटियाल की बातचीत]

दुर्गा प्र. नौटियाल: शिवानी जी, आपके बहुत पाठक आपका असली नाम नहीं जानते हैं । आपका असली नाम क्या है और आपने साहित्यिक उपनाम कब और क्यों रखा ?

शिवानी : मेरा नाम वैसे गौरा है । मैंने धर्मयुग में १९५१ में एक छोटी कहानी–'मैं मुर्गा हूँ' लिखी थी । उसमें शिवानी नाम दिया था । मुझे शांतिनिकेतन में गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर के सान्निध्य में नौ वर्ष तक शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्य मिला है । बाँग्ला में 'गौरा' नाम तो लड़कों का होता है । बाँग्ला की एक पत्रिका थी–'सोनार बाँग्ला' । उसमें भी मैंने 'मारीचिका' नामक एक कहानी लिखी थी । उसमें भी गौरा नाम ही छपा था । 'गौरा' नाम छोड़कर साहित्यिक नाम 'शिवानी' रखने के पीछे कोई विशेष कारण नहीं है ।

दुर्गा प्र. नौटियाल: साहित्य में आप किस–किससे प्रभावित रही हैं और किसने आपको सर्वाधिक प्रभावित किया ? यानी आपके लेखन पर किसकी सर्वाधिक छाप पड़ी है ?

शिवानी : मैंने बाँग्ला माध्यम से पढ़ा है । बाँग्ला के प्रायः सभी स्वनामधन्य लेखकों को मैंने पढ़ा है । अतएव उनका प्रभाव मेरी भाषा पर पड़ा है । भाषा की दृष्टि से बंकिम ने मुझे विशेष प्रभावित किया । मेरा जन्म गुजरात में हुआ था । मेरी माँ गुजराती एवं संस्कृत की विदुषी थीं । गुजराती साहित्य भी मैंने पढ़ा । उसका भी प्रभाव मेरे लेखन पर पड़ा । गुजरात में हमारा घर साहित्यिक गतिविधियों का केंद्र था । मेरे पिता जी अंग्रेजी के विद्‌वान थे । 'एशिया' नामक अंग्रेजी मैगजीन में उनके लेख छपते थे । घर–परिवार में पठन–पाठन का वातावरण था । सच बात तो यह है कि बचपन से पढ़ने–लिखने के अलावा हमारा ध्यान किसी और बात की तरफ गया ही नहीं । बदलते हुए फैशन ने भी हमें आकृष्ट नहीं किया ।

परिचय

जन्म : १९४२, पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखंड)
मृत्यु : २००३, देहरादून (उत्तराखंड)
परिचय : दुर्गाप्रसाद नौटियाल जी सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी एवं वरिष्ठ पत्रकार के रूप में प्रसिद्ध हैं । राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ छपती रही हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'नीली छत्री', 'मेरे जीवन की सफलता के रहस्य', 'स्वर्ण भूमि की लोक कथाएँ', आदि । इनके अतिरिक्त विविध अनुवाद ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत साक्षात्कार में शिवानी जी के जन्म, शिक्षा, घर-परिवार आदि पर चर्चा की गई है । बातचीत के माध्यम से शिवानी जी के लेखन को प्रभावित करने वाली बातें, अर्थार्जन, लेखक एवं पाठक के बीच के संबंधों आदि का विशद विवेचन किया गया है ।

दुर्गा प्र. नौटियाल : साहित्यकार भोगे हुए सत्य के कंकाल पर कल्पना का हाड़-मांस चढ़ाकर उसमें शब्दों और शैली की साँस फूँककर पाठकों के समक्ष रोबोट नहीं, बल्कि एक जीवंत चरित्र पेश करने की कोशिश करता है । आपका इस संबंध में क्या कहना है ?

शिवानी : बिना यथार्थ के कोई भी रचना प्रभाव उत्पन्न करने वाली नहीं हो सकती । वह युग चला गया जब केवल काल्पनिक सुख का दृश्य दिखाकर आकृष्ट किया जाता रहा । आज यथार्थ इतना कठिन और संघर्षपूर्ण है कि यदि उसे कल्पना चित्रित करने की कोशिश करेंगे तो पाठक स्वीकार नहीं करेंगे । फिर जरूरी नहीं है कि आप हर यथार्थ को भोगें ही । सुनकर और देखकर भी आप उसे ज्यों-का-त्यों चित्रित कर सकते हैं ।

दुर्गा प्र. नौटियाल : आप अपनी सर्वोत्तम कृति या रचना किसे मानती हैं ? क्या लेखक और पाठक की इस संबंध में अलग-अलग धारणाएँ हो सकती हैं ? आपकी क्या राय है ?

शिवानी : मेरे लिए यह कहना कठिन है कि मेरी कौन-सी रचना सर्वोत्तम है । जिस तरह किसी माँ के लिए उसके बच्चे समान रूप से प्रिय होते हैं; उसी प्रकार मुझे अपनी सभी कृतियाँ एक-सी प्रिय हैं । वैसे पाठकों ने अभी तक जिस कृति को सर्वाधिक सराहा है, वह है-'कृष्णकली' । फिर भी यदि आप प्रिय रचना कहकर मुझसे जानना चाहते हैं तो मैं यात्रा वृत्तांत 'चरैवेति' का नाम लूँगी । इसमें भारत से मास्को तक की यात्रा का विवरण है । मेरी प्रिय रचना यही है क्योंकि मैंने इसे अत्यधिक परिश्रम और ईमानदारी से लिखा है ।

दुर्गा प्र. नौटियाल : आपने किस अवस्था से लिखना शुरू किया ? पहली रचना कब और कहाँ छपी थी ? तब कैसा लगा था ? और अब ढेर सारा छपने पर कैसा लग रहा है ?

शिवानी : मेरी पहली रचना तब छपी जब मैं मात्र बारह वर्ष की थी । अल्मोड़ा से 'नटखट' नामक एक पत्रिका में पहली रचना छपी थी । उसके पश्चात मैं शांतिनिकेतन

मीरा बाई के भजन यू ट्यूब से सुनकर कक्षा में सुनाइए ।

चली गई । वहाँ हस्तलिखित पत्रिका निकलती थी । उसमें मेरी रचनाएँ नियमित रूप से छपती थीं । तब रचना छपने पर बहुत आनंद आता था। आज भी जब कोई रचना छपती है तो खुशी तो होती है । सच कहूँ मैं बिना लिखे रह नहीं सकती । फिर भले ही एक पंक्ति ही क्यों न लिखूँ, लेकिन प्रतिदिन लिखती अवश्य हूँ।

दुर्गा प्र. नौटियाल: आपके साहित्य सृजन का क्या उद्‌देश्य रहा है-लोक कल्याण, आत्मसुख जिसके अंतर्गत धन की प्राप्ति का लक्ष्य भी शामिल है या कुछ और ?

शिवानी : मैंने धनसंग्रह को कभी जीवन में प्रश्रय नहीं दिया। वैसे पैसा किसे अच्छा नहीं लगता, किंतु केवल पैसे के लिए ही मैंने साहित्य सृजन नहीं किया । मैं पेशेवर लेखिका हूँ। अपनी रचना का मूल्य चाहती हूँ। फिर एक बात साफ है कि कोई भी लेखक-लेखिका स्वांतः सुखाय ही नहीं लिखता। जो रचना जनसाधारण को ऊँचा नहीं उठाती, उसे सोचने-समझने के लिए विवश नहीं करती, मैं उसे साहित्य नहीं मानती । जो साहित्यकार समाज में व्याप्त विकृतियों पर प्रहार नहीं करता, उसका साहित्य सृजन किस काम का ? अस्तु, मैंने दोनों ही दृष्टियों से लिखा है । लेकिन एक बात जोर देकर कहना चाहूँगी कि मैंने साहित्य सृजन किया है, शब्दों का व्यापार नहीं किया और लेखन के बदले जो कुछ सहजता से मिल गया, उसे स्वीकार कर लिया।

दुर्गा प्र. नौटियाल: आपके पाठकों और खास तौर से समालोचकों का कहना है कि आपकी भाषा क्लिष्ट, संस्कृतनिष्ठ और सामाजिक होती है । वाक्यविन्यास इतने बड़े और जटिल होते हैं कि अर्धविरामों की भरमार के कारण अर्थ समझने के लिए मस्तिष्क पर काफी जोर डालना पड़ता है । इससे साहित्य रसानुभूति के आनंद में व्यवधान पड़ता है। क्या आप भी ऐसा महसूस करती हैं ?

शिवानी : आलोचकों ने मेरे साथ कभी न्याय नहीं किया । मैंने बचपन में 'अमरकोश' पढ़ा। संस्कृत पढ़ी। घर में माँ संस्कृत की विदुषी थीं और दादा जी संस्कृत के प्रकांड

पठनीय

दैनिक हिंदी अखबार में आने वाली पुस्तक समीक्षा आदि को पढ़िए तथा टिप्पणी तैयार कीजिए।

पंडित । दोनों का मुझपर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था । मैं शब्दकोश खोलकर नहीं लिखती। जो भाषा बोलती हूँ, वैसा ही लिखती हूँ। उसे बदल नहीं सकती । फिर जब कठिन शब्द भावों को संप्रेषित करने में सक्षम होते हैं और रचना का रसास्वादन करने में आनंद की अनुभूति होती है, तब मैं नहीं समझती कि जान-बूझकर सरल और अपेक्षाकृत कम प्रभावोत्पादक शब्दों को रखना कोई बुद्‌धिमत्ता है ।

दुर्गा प्र. नौटियाल: आपने अब तक काफी साहित्य रचा है । क्या आप इससे संतुष्ट हैं ?

शिवानी : जहाँ तक संतुष्ट होने का संबंध है, मैं समझती हूँ कि किसी को भी अपने लेखन से संतुष्ट नहीं होना चाहिए । मैं चाहती हूँ कि ऐसे लक्ष्य को सामने रखकर कुछ ऐसा लिखूँ कि जिस परिवेश को पाठक ने स्वयं भोगा है, उसे जीवंत कर दूँ । मुझे तब बहुत ही अच्छा लगता है जब कोई पाठक मुझे लिख भेजता है कि आपने अमुक-अमुक चरित्र का वास्तविक वर्णन किया है अथवा फलाँ-फलाँ चरित्र, लगता है, हमारे ही बीच है । लेकिन साथ ही मैं यह मानती हूँ कि लोकप्रिय होना न इतना आसान है और न ही उसे बनाए रखना आसान है । मैं गत पचास वर्षों से बराबर लिखती आ रही हूँ । पाठक मेरे लेखन को खूब सराह रहे हैं । मेरे असली आलोचक तो मेरे पाठक हैं, जिनसे मुझे प्रशंसा और स्नेह भरपूर मात्रा में मिलता रहा है । शायद यही कारण है कि मैं अब तक बराबर लिखती आई हूँ ।

दुर्गा प्र. नौटियाल: क्या कभी आपको फिल्मों के लिए काम करने का ऑफर आया है ? आप उस दुनिया की तरफ क्यों नहीं गईं जबकि वहाँ पैसा भी काफी अच्छा है ?

शिवानी : बहुत आया । मेरी एक कहानी का तो फिल्म वालों ने सर्वनाश ही कर दिया । इसके अतिरिक्त 'सुरंगमा', 'रति विलाप', 'मेरा बेटा', 'तीसरा बेटा' पर भी सीरियल बन रहे हैं । इसके बाद मैंने फिल्मों के लिए रचना देना बंद कर दिया और भविष्य में भी फिल्मों

संभाषणीय

'लेखक विद्‌यालय के आँगन में' इस उपक्रम के अंतर्गत किसी परिचित रचनाकार का साक्षात्कार लीजिए ।

और दूरदर्शन के सीरियलों के लिए कहानी देने का मेरा कोई इरादा नहीं है । जो चीज को ही नष्ट कर दे, उस पैसे का क्या करना ?

दुर्गा प्र. नौटियाल : आपकी राय में साहित्यकार का समाज और अपने पाठकवर्ग के प्रति क्या दायित्व है ? आपने कैसे इस दायित्व का निर्वाह किया है ?

शिवानी : मैंने साहित्यकार के रूप में अपना दायित्व कहाँ तक निभाया, यह तो कहना कठिन है, लेकिन जहाँ तक साहित्यकार का संबंध है, मैं उसे राजनीतिज्ञ से अधिक महत्त्व देती हूँ क्योंकि कलम में वह ताकत है जो राजदंड में भी नहीं है ।

दुर्गा प्र. नौटियाल : आप लेखन कार्य कब करती हैं ? लिखने के लिए विशेष मूड बनाती हैं या किसी भी स्थिति में लिख सकती हैं ?

शिवानी : ईमानदारी से कहूँ तो मैं किसी भी स्थिति और परिस्थिति में लिख सकती हूँ । सब्जी छौंकते हुए भी लिख सकती हूँ और चाय की चुस्की लेते हुए भी लिख सकती हूँ । रात को ज्यादा लिखती हूँ, क्योंकि तब वातावरण शांत होता है, लेकिन यदि काम का भार पड़ जाता है तो दिन-रात किसी भी वक्त लिख लेती हूँ । 'कालिंदी' को मैंने रात में भी लिखा और दिन में भी । एकांत में लिखना मुझे अच्छा लगता है ।

दुर्गा प्र. नौटियाल : एक कहानी को आप कितनी बैठकों या सीटिंग में पूरा कर लेती हैं और लगातार कितनी देर तक लिखती हैं ?

शिवानी : पहले मैं मन में एक खाका बनाती हूँ । फिर उसे कागज पर उतारती हूँ । खाका बनाकर रफ लिखती हूँ । हमेशा हाथ से लिखती हूँ । यहाँ तक कि अंतिम आलेख तक भी हाथ से ही लिखकर छपने भेजती हूँ । एक कहानी लिखने में मुझे पंद्रह-बीस दिन लग जाते हैं । लिखास लगती है तो लिखती हूँ । मैंने दस-बारह सदस्यों के परिवार में भी लिखा है और जब बच्चे छोटे थे तब भी खूब लिखा ।

दुर्गा प्र. नौटियाल : हिंदी का लेखक हमारे यहाँ अपेक्षाकृत अर्थाभाव का शिकार होता है । केवल लेखन के बल पर समाज में सम्मानजनक ढंग से जीवनयापन करना कल्पनातीत

लेखनीय

आपके द्‌वारा आँखों देखी किसी घटना/दुर्घटना का विवरण अपने शब्दों में लिखिए ।

है । यदि आप शुरू से केवल लेखन से जीविका अर्जित करतीं तो क्या अपने वर्तमान स्तर को बनाए रख सकती थीं ?

शिवानी : मैं अपने लेखन के बल पर ही जीवित हूँ और एकदम स्वावलंबी हूँ । मैं मानती हूँ कि कोई भी लेखक अपने लेखन के बल पर ही जीविका चलाकर सम्मानजनक ढंग से समाज में जीवनयापन कर सकता है बशर्ते उसकी कलम में दम हो ।

दुर्गा प्र. नौटियाल : क्या आप एक समय एक ही रचना पर कार्य करती हैं या एकाधिक विषयों पर काम करती रहती हैं ?

शिवानी : मैं जब एक चीज पर लिखना शुरू करती हूँ तो उसे समाप्त करने के पश्चात ही दूसरी चीज लिखना शुरू करती हूँ । एक चीज समाप्त करने के बाद कुछ दिन तक कहानी उपन्यास नहीं, बल्कि निबंध अथवा लेख-आलेख आदि लिखती हूँ । मैं समझती हूँ कि एक समय में एक से अधिक रचनाओं पर काम करने से ध्यान बँट जाता है और रचना में वह खूबसूरती नहीं आ पाती जो कि आनी चाहिए ।

दुर्गा प्र. नौटियाल : अक्सर व्यक्ति किसी घटना विशेष के कारण लेखक, कवि या साहित्य सर्जक बन जाते हैं । आपके लेखिका बनने के पीछे क्या कारण रहा है ?

शिवानी : जैसा कि मैं पहले कहती हूँ कि हमारे परिवार का वातावरण मेरे लेखिका बनने के सर्वथा उपयुक्त था । फिर मैं नौ वर्ष शांतिनिकेतन में गुरुदेव के संरक्षण में रही, इसका भी मुझपर प्रभाव पड़ा । लिखने के प्रति मेरा रुझान बचपन से ही था । यों कह सकते हैं कि मेरे अंदर लेखिका बनने का बीज मौजूद था और उपयुक्त वातावरण मिलने पर मैं लेखिका बन गई । मैं नहीं मानती कि कोई घटना से प्रभावित होकर लेखक बन सकता है । उदाहरण के लिए किसी प्रियजन की मृत्यु से दुखी होकर कोई संन्यासी तो बन सकता है, किंतु लेखक नहीं बन सकता ।

('एक थी रामरति' संग्रह से)

—— ० ——

शब्द संसार

प्रश्रय पुं.सं.(सं.) = सहारा, आश्रय
व्यवधान पुं.सं.(सं.) = रूकावट, बाधा
चुस्की स्त्री. सं.(हिं.) = सुरकने की क्रिया
रुझान पुं. सं.(हिं.) = झुकाव

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-**

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

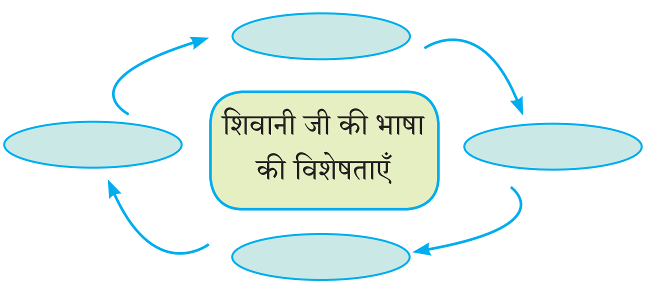

(२) आकृति पूर्ण कीजिए :

शिवानी के लेखन को प्रभावित करने वाली भाषाएँ
- -------
- -------

(३) एक-दो शब्दों में उत्तर लिखिए :

१. शिवानी का वास्तविक नाम →
२. शिवानी की प्रिय रचना →
३. शिवानी की माता जी इन भाषाओं की विदुषी थीं →
४. पाठकों द्वारा शिवानी की सराहनीय कृति →

(४) जोड़ियाँ मिलाइए :

अ	उत्तर	आ
धर्मयुग	______	मारिचिका
सोनार बाँग्ला	______	अंग्रेजी लेख
एशिया	______	पहली रचना
नटखट	______	मैं मुर्गा हूँ

(५) कारण लिखिए :

१. शिवानी जी लेखिका बन गईं ------
२. शिवानी जी को पाठकों से प्रशंसा प्राप्त हुई है ------

(६) लिखिए :

लेखिका ऐसे साहित्य को साहित्य नहीं मानती
- -------
- -------

(७) पाठ में प्रयुक्त शिवानी की रचनाओं के नामों की सूची तैयार कीजिए ।

(८) 'परिवेश का प्रभाव व्यक्तित्व पर होता है' आपके विचार लिखिए ।

उपयोजित लेखन 'जल है तो कल है' विषय पर अस्सी से सौ शब्दों में निबंध लिखिए ।

हम अनेकता में भी तो हैं एक ही
हर संकट में जीता सदा विवेक ही
कृति-आकृति-संस्कृति, भाषा के वास्ते
बने हुए हैं मिलते-जुलते रास्ते
आस्थाओं की टकराहट से लाभ क्या
मंजिल को हम देंगे भला जवाब क्या
हम टूटे तो टूटेगा यह देश भी
मैला होगा वैचारिक परिवेश भी
सर्जनरत हो आजादी के दिन जियो
श्रमकर्माओ ! रचनाकारो ! साथियो
शांति और संस्कृति की जो बहती स्वाधीना जाह्नवी
कोई रोके बलिदानी रंग घोल दो
रक्त चरित्रो ! भारत की जय बोल दो !

वीरेंद्र मिश्र

—— ० ——

दोस्त एक भी नहीं जहाँ पर, सौ-सौ दुश्मन जान के,
उस दुनिया में बड़ा कठिन है चलना सीना तान के ।
उखड़े-उखड़े आज दिख रहे हैं तुमको जो यार हम,
यह न समझ लेना जीवन का दाँव गए हैं हार हम !
वही स्वप्न नयनों में, मन में वही अडिग विश्वास है,
खो बैठे हैं किंतु अचानक अपना ही आधार हम !
इस दुनिया में जहाँ लोग हैं बड़े आन के बान के,
हम तो देख रहे हैं तेवर दो दिन के मेहमान के ।
डगमग अपने चरण स्वयं ही, इतना हमको ज्ञान है,
निज मस्तक की सीमा से भी अपनी कुछ पहचान है,

भगवतीचरण वर्मा

—— ० ——

नीलांबर परिधान हरित पट पर सुंदर हैं,
सूर्य चंद्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकार हैं ।
नदियाँ प्रेम-प्रवाह, फूल तारे मंडल हैं,
बंदीजन खग-वृंद शेष-फन सिंहासन हैं ।
करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेष की,
हे मातृभूमि, तू सत्य ही सगुण मूर्ति सर्वेश की ।
जिसकी रज में लोट-लोटकर बड़े हुए हैं,
घुटनों के बल सरक-सरक कर खड़े हुए हैं ।
परमहंस-सम बाल्यकाल में सब सुख पाए,
जिसके कारण 'धूलि भरे हीरे' कहलाए ।

मैथिलीशरण गुप्त

—— ० ——

7IN984

९. चिंता

– *जयशंकर प्रसाद*

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर, बैठ शिला की शीतल छाँह,
एक पुरुष, भीगे नयनों से देख रहा था प्रलय प्रवाह ।
नीचे जल था ऊपर हिम था, एक तरल था एक सघन,
एक तत्व की ही प्रधानता-कहो उसे जड़ या चेतन ।
दूर-दूर एक विस्तृत था हिम स्तब्ध उसी के हृदयसमान,
नीरवता-सी शिला चरण से टकराता फिरता पवमान ।
तरुण तपस्वी-सा वह बैठा साधन करता सुर स्मशान,
नीचे प्रलयसिंधु लहरों का होता था सकरुण अवसान ।
उसी तपस्वी-से लंबे थे देवदारु दो चार खड़े,
हुए हिम धवल, जैसे पत्थर बनकर ठिठुरे रहे अड़े ।
अवयव की दृढ़ मांस पेशियाँ, ऊर्जस्वित था वीर्य अपार,
स्फीत शिरायें, स्वस्थ रक्त का होता था जिनमें संचार ।
चिंता कातर वदन हो रहा पौरुष जिसमें ओत-प्रोत,
उधर उपेक्षामय यौवन का बहता भीतर मधुमय स्रोत ।
बंधी महावट से नौका थी सूखे में अब पड़ी रही,
उतर चला था वह जल प्लावन और निकलने लगी मही ।
निकल रही थी मर्म वेदना करुणा विकल कहानी-सी,
वहाँ अकेली प्रकृति सुन रही, हँसती-सी पहचानी-सी ।
"ओ चिंता की पहली रेखा, अरी विश्व वन की व्याली,
ज्वालामुखी स्फोट के भीषण प्रथम कंप-सी मतवाली ।
हे अभाव की चपल बालिके, री ललाट की खललेखा,
हरी-भरी-सी दौड़-धूप, ओ जल माया की चल रेखा ।

परिचय

जन्म : १८८९, वाराणसी (उ.प्र.)
मृत्यु : १९३७, वाराणसी (उ.प्र.)
परिचय : जयशंकर प्रसाद जी हिंदी साहित्य के छायावादी कवियों के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं । बहुमुखी प्रतिभा के धनी प्रसाद जी कवि, नाटककार, कथाकार, उपन्यासकार तथा निबंधकार के रूप में प्रसिद्‌ध हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'आँसू', 'लहर' (काव्य) 'कामायनी' (महाकाव्य), 'स्कंदगुप्त', 'चंद्रगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी' (ऐतिहासिक नाटक), 'प्रतिध्वनि', 'आकाशदीप', 'इंद्रजाल' (कहानी संग्रह), 'कंकाल', 'तितली', 'इरावती' (उपन्यास) आदि ।

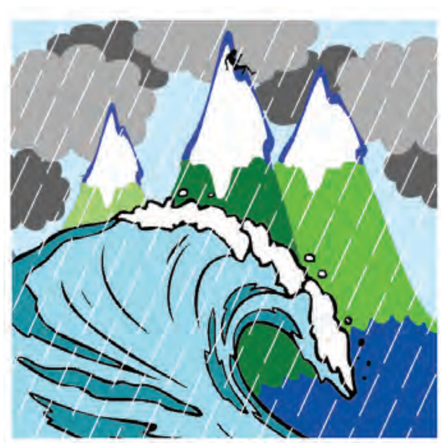

आह! घिरेगी हृदय लहलहे खेतों पर करका घन-सी,
छिपी रहेगी अंतरतम में सबके तू निगूढ़ धन-सी ।
बुद्धि, मनीषा, मति, आशा, चिंता तेरे हैं कितने नाम !
अरी पाप है तू, जा, चल जा यहाँ नहीं कुछ तेरा काम ।
विस्मृत आ, अवसाद घेर ले, नीरवते ! बस चुप कर दे,
चेतनता चल जा, जड़ता से आज शून्य मेरा भर दे ।''
''चिंता करता हूँ मैं जितनी उस अतीत की, उस सुख की,
उतनी ही अनंत में बनती जातीं रेखाएँ दुख की ।
अरे अमरता के चमकीले पुतलो! तेरे वे जयनाद
काँप रहे हैं आज प्रतिध्वनि बनकर मानो दीन; विषाद ।
प्रकृति रही दुर्जेय, पराजित हम सब थे भूले मद में,
भोले थे, हाँ तिरते केवल सब विलासिता के नद में ।
वे सब डूबे, डूबा उनका विभव, बन गया पारावर
उमड़ रहा था देव सुखों पर दुख जलधि का नाद अपार''

('कामायनी' महाकाव्य से)

— ० —

पद्य संबंधी

प्रस्तुत पद्यांश कामायनी महाकाव्य से लिया गया है । 'जल प्रलय' समाप्त हो गया है । पानी धीरे-धीरे उतर रहा है । महाराज मनु हिमालय की ऊँची चोटी पर बैठे हैं । उनके माथे पर चिंता की रेखाएँ उभर आई हैं । जयशंकर प्रसाद जी ने उसी समय की स्थिति, मनु की मनोदशा, उनकी चिंता आदि का वर्णन इस पद्यांश में किया है । यहाँ कवि द्वारा किया गया वर्णन, प्रतीक-बिंब, रूपक विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं ।

शब्द संसार

उत्तुंग वि.(सं.) = बहुत ऊँचा
ऊर्जस्वित वि.(सं.) = बलवान, तेजवान
स्फीत वि.(सं.) = समृद्‌ध, संपन्न, बढ़ा हुआ
मर्म पुं.(सं.) = स्वरूप, रहस्य
व्याली स्त्री.सं. (सं.) = वन की रानी बाघिन
करका पुं.सं.(सं.) = ओला, पत्थर

स्वाध्याय

✻ सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

चिंता के नाम

(२) लिखिए :

१. जल के दो रूप

२. देवदार वृक्ष की विशेषताएँ

(३) जोड़ियाँ मिलाइए :

अ	उत्तर	आ
जलधि	....	दुख
पुतले	....	उपेक्षाएँ
रेखाएँ	....	नाद
यौवन	....	चमकीले

(४) ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्न शब्द हों–

१. सकरुण अवसान   २. दीन–विषाद

३. दुर्जेय   ४. नद

(५) कविता में इन अर्थों में आए शब्द ढूँढ़िए :

१. अत्यंत गुप्त –

२. वर्षा –

३. वायु –

४. पृथ्वी/नदी –

(६) कविता ही अंतिम चार पंक्तियों का भावार्थ लिखिए।

(७) निम्न मुद्दों के आधार पर पद्य विश्लेषण कीजिए :

१. रचनाकार का नाम
२. रचना की विधा
३. पसंदीदा पंक्ति
४. पसंद होने का कारण
५. रचना से प्राप्त संदेश/प्रेरणा

उपयोजित लेखन

निम्नलिखित जानकारी के आधार पर विज्ञापन तैयार कीजिए :

दैनिक जीवन में अपनी पसंद की कोई उपयोगी वस्तु

- नाम
- उपयोगिता
- विशेषताएँ
- संपर्क

7IX59R

१०. टॉल्स्टॉय के घर के दर्शन

– डॉ. रामकुमार वर्मा

बचपन में मैंने टॉल्स्टॉय की डायरी कई बार पढ़ी थी । उसमें उन्होंने जो बातें लिखी थीं, उनके अनुसार आचरण करने का भी मैंने प्रयत्न किया था । मुझे स्वप्न में भी यह भान न हुआ था कि कभी इस महान लेखक की मातृभूमि पर जाने का सौभाग्य प्राप्त होगा । मास्को में आने के पहले दिन से सबसे प्रबल इच्छा यह थी कि मैं 'यास्नाया पोल्याना' जाऊँ ।

'यास्नाया पोल्याना' मास्को के दक्षिण में कोई २०० किलोमीटर पर है । जब हम मास्को से रवाना हुए तो चारों ओर मंत्रमुग्ध करने वाली दृश्यावलि दिखाई पड़ी । देवदार और भोज वृक्षों के झुरमुट पंक्ति बाँधे सैनिकों की भाँति खड़े थे । हम यह दृश्यावलि देखते, कभी बातें करते, कभी इस सुषमा का मूकपान करते चले जा रहे थे । हमारी गाड़ी सुंदर सड़क पर पक्षी की भाँति उड़ी जा रही थी । रास्ते में छोटे-छोटे परंतु सुंदर मकान मिले, कुछ काठ के बने थे, कुछ कंक्रीट के चमकदार हरे और लाल रंग के थे । ऐसा लगता था मानो कोई जादूगर अपने खिलौने छोड़ गया हो ।

मुझे यह देखकर विस्मय हुआ कि एक गाँव का नाम 'चेखोव' था । 'चेखोव' यहाँ लंबे समय तक रहे थे । यह कितनी अच्छी बात है कि इस महान लेखक की स्मृति को सोवियत संघ में सँजोकर रखा गया है ।

रात में हम 'तुला' नामक छोटे किंतु बहुत पुराने शहर में रुके । तुला हमारे यहाँ के प्राचीन नगरों जैसा है । सवेरे हम 'यास्नाया पोल्याना'पहुँचे । 'यास्नाया पोल्याना' का स्वागत करने के लिए हम अपनी गाड़ी से उतर पड़े । यही वह स्थान है जहाँ की मिट्टी ने विराट प्रतिभासंपन्न मनीषी टॉल्स्टॉय को जन्म दिया था ।

प्रवेशद्‌वार पर महान लेखक की ग्रेनाइट की मूर्ति थी, जिसके चारों ओर सुंदर कटघरा था । उनकी आकृति पर गंभीर चिंतन और आत्मा की उदात्त भावना झलक रही थी । मैंने कई दिशाओं से मूर्ति के फोटो उतारे और इसके बाद जब हम चले, तो हम उस मूर्ति की ही बात सोच रहे थे । लंबे-लंबे देवदार वृक्षों के बीच से होकर एक स्पष्ट मार्ग गया था । इसपर ''यास्नाया'' लिखा था । दृश्यावलि देखने और मनचाहे फोटो लेने के बाद हम इस सुखद मार्ग से आगे बढ़े ।

चलते-चलते हम उस प्रासाद में पहुँचे जहाँ टॉल्स्टॉय रहा करते थे । यह प्रासाद पिछली शती के पहले चरण में बना था । इसके पास ही कभी वह मकान था जहाँ १८२८ में टॉल्स्टॉय पैदा हुए थे । अब इस मकान का

परिचय

जन्म : १९०५, सागर (म.प्र.)
मृत्युः १९९०
परिचय : डॉ. रामकुमार वर्मा जी आधुनिक हिंदी साहित्य में प्रमुख एकांकीकार के रूप में जाने जाते हैं । आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे । आप एकांकीकार, उपन्यासकार, आलोचक एवं कवि के रूप में प्रसिद्‌ध हैं। आप हास्य और व्यंग्य दोनों विधाओं में समान रूप से पकड़ रखते थे । आपने नाटकों के माध्यम से देशवासियों में भारतीयता, देशप्रेम और सामाजिक चेतना जगाने का कार्य किया ।
प्रमुख कृतियाँ : 'चित्ररेखा' (उपन्यास), 'एकलव्य', 'उत्तरायण', 'अहिल्या' (महाकाव्य), 'बादल की मृत्यु', 'दस मिनट', 'पृथ्वीराज की आँखें', 'रेशमी टाई', 'दीपदान', 'रूपरंग' (एकांकी), 'विजय पर्व', 'सत्य का स्वप्न'(नाटक) आदि ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत पाठ में रामुकमार वर्मा जी ने प्रसिद्‌ध रूसी लेखक टॉल्स्टॉय जी के जीवन का विवरण दिया है । यहाँ टॉल्स्टॉय जी के जीवन, परिवार, भवन, ग्रंथालय, उनकी कृतियाँ, समाधि आदि के बारे में विशद जानकारी प्राप्त होती है ।

अस्तित्व नहीं है क्योंकि जब यह पुराना और जीर्ण-शीर्ण हो गया तो एक जमींदार के हाथ बेच दिया गया । उसने इसके मसाले से नया मकान बनवाया। दो पेड़ों के बीच जहाँ पहले वह मकान था, उस जगह लिखा है-यहाँ वह मकान था; जिसमें टॉल्स्टॉय का जन्म हुआ था ।

जिस मकान में टॉल्स्टॉय रहते थे, वह बड़ा और सुंदर है । यहीं उन्होंने अपनी महान रचनाएँ लिखीं और अपने युग के प्रसिद्‌ध लेखकों से मिले ।

'यास्नाया पोल्याना' टॉल्स्टॉय के नाना का था । टॉल्स्टॉय की माँ अपने पिता की इकलौती बेटी थीं । टॉल्स्टॉय के पिता रूसी सेना में अधिकारी थे । उनके पास कोई विशेष संपत्ति न थी । वे 'यास्नाया पोल्याना' में रहते थे । वौल्कोन्स्की ने जब अपनी बेटी की शादी फौजी अफसर से की तो यह प्रासाद दहेज में दिया ।

टॉल्स्टॉय जब केवल डेढ़ साल के थे तभी उनकी माँ नहीं रही और पितृवियोग का सामना उन्हें नौ साल की उम्र में करना पड़ा । उनका लालन-पालन उनकी फूफी पेल्लागेया इलिनित्विना युश्कोवा ने किया । जब टॉल्स्टॉय बड़े हुए, तब वोल्गा नदी के तटवर्ती कजान नगर चले गए । कजान विश्वविद्‌यालय में उन्होंने अरबी और तुर्की भाषाएँ, दर्शन तथा कानून का अध्ययन किया परंतु 'यास्नाया पोल्याना' के लिए वे बराबर ललकते रहे । उनके मन में यह बात पैठी हुई थी कि किसानों के बीच रहने से बढ़कर कोई चीज नहीं । टॉल्स्टॉय किसानों की तरह खेती करते थे फिर भी विज्ञान और यात्रा में उनकी रुचि रही । इसीलिए वे क्राकेशिया चले गए और रूसी सेना में भर्ती हो गए ।

रूसी सेना उस समय पहाड़ी कबीलों से लड़ रही थी । काकेशिया के जीवन के अनुभवों के आधार पर उन्होंने ''कोस्साक'' की रचना की । इसमें उनके जीवन की बहुत सी बातें हैं ।

१८६२ में टॉल्स्टॉय ने २४ वर्ष की आयु में एक चिकित्सक की अठारह वर्षीय पुत्री सोफिया आंद्रएवा से शादी की ।

उसके बाद हम संग्रहालय के निर्देशक के साथ संग्रहालय प्रासाद में गए । सबसे पहले हमने टॉल्स्टॉय का बहुत ही भरा-पूरा पुस्तकालय देखा। पुस्तकालय की २८ अलमारियों में लगभग २२००० पुस्तकें हैं, जिनमें अंग्रेजी, जर्मन, फ्रांसीसी, लातिन, यूनानी, स्पेनी, इटालियन तथा तातार भाषाओं की पुस्तकें थीं । टॉल्स्टॉय तेरह भाषाएँ जानते थे और वृद्‌धावस्था में भी हिब्रू भाषाएँ इसलिए सीखी थीं ताकि वे उन भाषाओं के साहित्य की महान कृतियों को मूल रूप में पढ़ सकें । उनकी कुछ कृतियाँ फ्रांसीसी भाषा में भी हैं । वे बहुत ही प्रभावी हैं ।

पुस्तकालय के बाद हम बैठकखाने में गए जो अनेक तैलचित्रों से सजा

अपनी मातृभाषा में उपलब्ध लोकगीत सुनिए तथा उसका भावार्थ अपने शब्दों में सुनाइए ।

किसी संग्रहालय में जाकर संग्रहालय की सचित्र जानकारी अपनी कॉपी में लिखिए ।

हुआ है । इसी कमरे में टॉल्स्टॉय अपने समानधर्मा लेखकों से मिलते थे । दीवारों पर अनेक चित्र लगे थे । एक चित्र टॉल्स्टॉय की पुत्री मारिया ल्वोला का था जिसे वे बहुत प्यार करते थे । ल्वोला ने जन-कल्याण के कार्यों को अपना जीवन अर्पित कर दिया था । अपंगों और निर्धनों की सेवा में वे बराबर लगी रहती थीं । उनकी मृत्यु १६६० में ३५ वर्ष की आयु में हो गई । टॉल्स्टॉय को उनकी मृत्यु से अतीव दुख हुआ ।

कमरे के बीचोंबीच एक बड़ी मेज थी । उसके पीछे दीवार से सटी हुई एक छोटी मेज शतरंज खेलने की थी और उसके बाद कोने में एक अंडाकार मेज थी, जिसके इर्द-गिर्द गोल पीठवाली कुर्सियाँ थीं । एक बार यहीं बैठकर टॉल्स्टॉय ने अपनी रचनाएँ गोर्की तथा अन्य लेखकों और अपने परिवार वालों को सुनाई थीं ।

दूसरे कोने में टॉल्स्टॉय की संगमरमर की मूर्ति थी । चित्रों के नीचे दीवार के सहारे बहुत बड़ा पियानो रखा था । टॉल्स्टॉय यह पियानो बजाया करते थे। उन्हें संगीत का बहुत शौक था । कभी-कभी संगीत सुनते-सुनते या स्वयं गान-वाद्‌य करते-करते उनकी आँखें सजल हो जातीं । लोकगीत उन्हें विशेष रूप से प्रिय थे । लोकगीतों को वे शास्त्रीय संगीत से अधिक मूल्यवान मानते थे । उनका मत था कि इनकी शक्ति प्रेरणा में निहित रहती है जो जनता की आत्मा से अपने आप निकल पड़ती है ।

ज्यों ही हम टॉल्स्टॉय के अध्ययन कक्ष में घुसे, हमने एक बड़ी मेज देखी जिसपर लिखने की विविध चीजें रखी थीं । मेज पर पुस्तकें ठीक उसी तरह रखी थीं जिस तरह लेखक ने उन्हें रखा था । मोमबत्ती भी जिस तरह उन्होंने बुझा दी थी, उसी तरह रखी थी । वह न कभी जलाई गई और न उसे कभी किसी ने छुआ ।

एक तरफ पुस्तकों का शेल्फ था जिसमें अनेक पुस्तकें थीं । मेरे साथी ने शेल्फ से एक पुस्तक निकाल ली और कहा, ''देखिए इसका कुछ संबंध गांधीजी से है ।''

यह महात्मा गांधीजी की पुस्तक 'दक्षिण अफ्रीका में एक भारतीय देशभक्त' थी । यह पुस्तक महात्मा गांधीजी ने टॉल्स्टॉय के पास भेजी थी । टॉल्स्टॉय ने इस पुस्तक के किनारे-किनारे अनेक टिप्पणियाँ लिखी थीं ।

इस कमरे की सबसे उल्लेखनीय वस्तु वह तख्तपोश था जिसपर टॉल्स्टॉय का जन्म हुआ था । मैंने स्मारक के रूप में उसका फोटो लिया ।

इसके बाद हमने टॉल्स्टॉय का शयनागार देखा । वहाँ उनकी पत्नी के कई चित्र थे । हमने वहाँ एक घंटी, एक मोमबत्ती और कुछ दूसरी चीजें बिस्तर के पास मेज पर देखीं । एक आराम कुर्सी पर ऊनी कमीज टँगी हुई

पठनीय

राहुल सांकृत्यायन जी की डायरी अंतरजाल की सहायता से पढ़िए तथा उसके प्रमुख मुद्‌दे लिखिए ।

थी । एक कोने में सिंगार की अनेक चीजें रखी थीं । टॉल्स्टॉय सदा स्वच्छ पानी स्वयं लाते थे और गंदा पानी साफ करते थे । वे अपने कमरे को ठीक रखने में किसी और की सहायता नहीं लेते थे । दीवार पर एक बेंत, एक चाबुक तथा कुछ और चीजें टँगी हुई थीं । टॉल्स्टॉय अच्छे घुड़सवार थे । एक बार घुड़सवारी में उनकी टाँग में चोट आ गई थी, उस समय बैसाखी का उपयोग करना पड़ा था । वह भी कमरे में रखी है । हमने एक जोड़ा न बजने वाली घंटियाँ और एक संदूक देखा जिसमें अब भी टॉल्स्टॉय के कपड़े थे । उसकी बगल में एक बंद अलमारी थी जिसमें वे अपने लेखों के मसविदे और पांडुलिपियाँ रखते थे ।

इससे मिला हुआ शयनागार उनकी पत्नी का था । उस कमरे की दीवारों पर अनेक चित्र लगे थे । सबसे अधिक उल्लेखनीय चित्र उनके सबसे छोटे पुत्र वालिया का था जो सात वर्ष की उम्र में परलोकवासी हो गया था । वह बालक बहुत ही प्रतिभा संपन्न था और टॉल्स्टॉय को यह आशा थी कि एक दिन वह साहित्य में उनका अनुसरण करेगा । बालक की मृत्यु ने उन्हें मर्माहत कर दिया ।

द्‌वितीय विश्वयुद्‌ध के अवसर पर जर्मन फासिस्ट सेनाओं ने यास्नाया पोल्याना पर अधिकार कर लिया था, परंतु सौभाग्यवश स्थानीय अधिकारियों ने नात्सियों के आने के पहले ही समस्त मूल्यवान चीजें साइबेरिया भेज दी थीं । अगर ऐसा न हुआ होता तो यह सारा अमूल्य भंडार सभ्य जगत के लिए सदा के लिए नष्ट हो गया होता । नात्सी सैनिकों ने कई बार प्रासाद को जला देने का प्रयत्न किया लेकिन स्थानीय निवासियों ने बड़े साहस के साथ हर बार आग बुझा दी ।

युद्‌ध समाप्त होने के बाद सारी चीजें फिर ले आई गईं ।

ऊपर के कमरे देखने के बाद हम टॉल्स्टॉय के काम करने के कमरे में आए । जो इमारत के नीचे के हिस्से में है । गोर्की और चेखोव यहाँ कई बार आए थे । इसी कमरे में ''अन्ना कारेनिना'', ''युद्‌ध और शांति''तथा अन्य महान कृतियों की रचना की गई थी । इस कमरे के सुखद, शांत वातावरण पर दृष्टि गए बिना नहीं रह सकती ।

अब हम टॉल्स्टॉय की समाधि देखने गए । देवदार और सरों के लंबे-लंबे पेड़ मनीषी टॉल्स्टॉय के इस चिर विश्रामागार के पास संतरी जैसे खड़े हैं । भोज वृक्षों की छाया में हरियाली से ढँकी यह समाधि है ।

ऐसे महान लेखक की कितनी सादी-सी समाधि ! इस महामानव की स्मृति में, जिसने सारे जीवन सीधे-सादे जनों की सेवा की, हम नतमस्तक हो गए ।

―― ० ――

संभाषणीय

शतरंज के खिलाड़ी आनंद विश्वनाथन के अनुभव पढ़कर चर्चा कीजिए ।

शब्द संसार

मनीषी पुं.सं.(सं.) = विद्वान
अस्तित्व पुं.सं.(सं.) = विद्यमानता, मौजूदगी
सिंगार पुं.सं.(दे.) = सजावट, सजधज
मसविदा पुं.सं.(दे.) = मसौदा
मर्माहत पुं.वि.(सं.) = मर्म पर चोट पहुँचा हुआ

स्वाध्याय

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

टॉल्स्टॉय के शयनकक्ष में देखी गई वस्तुएँ

(२) लिखिए :

अ. बंद अलमारी में ये चीजें थीं ______, ______

आ. पहरेदार के रूप में खड़े वृक्ष : ______, ______

(३) कृति पूर्ण कीजिए :

टॉल्स्टॉय के अन्य शौक

(४) कृति पूर्ण कीजिए :

पुस्तकालय में इन भाषाओं की पुस्तकें हैं

(५) कोष्ठक के उचित शब्द का प्रयोग कीजिए :

१. कमरे के बीचोंबीच एक .... मेज थी ।
(गोलाकार, अंडाकार, बड़ी)

२. तुला हमारे यहाँ के प्राचीन .... जैसा है ।
(शहरों, गाँवों, नगरों)

३. प्रवेश द्वार पर महान लेखक की .... मूर्ति थी ।
(संगमरमर, ग्रैनाइट, सफेद पत्थर)

४. उनकी कुछ कृतियाँ .... भाषा में हैं ।
(फ्रांसीसी, रूसी, अंग्रेजी)

(६) रिश्ते लिखिए :

टॉल्स्टॉय
वालिया ....
मरिया ल्वोला ....
पेल्लागेया इलिनित्विना युश्कोवा ....
सोफिया आंद्रेएवा ....

(७) शब्दसमूह के लिए शब्द लिखिए :

१. जहाँ अध्ययन किया जाता है = ______
२. जहाँ आराम किया जाता है = ______
३. जहाँ पुस्तकें ही संगृहीत की जाती हैं = ______
४. जिस दरवाजे से प्रवेश किया जाता है = ______

अभिव्यक्ति 'संग्रहालय संस्कृति और इतिहास के परिचायक होते हैं' विषय पर अपने विचार लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) अर्थ के आधार पर निम्न वाक्यों के भेद लिखिए :

१. क्या पैसा कमाने के लिए गलत रास्ता चुनना उचित है ? [ ]
२. इस वर्ष भीषण गरमी पड़ रही थी । [ ]
३. आप उन गहनों की चिंता न करें । [ ]
४. सुनील, जरा ड्राइवर को बुलाओ । [ ]
५. अपने समय के लेखकों में आप किन्हें पसंद करते हैं ? [ ]
६. सैकड़ों मनुष्यों ने भोजन किया । [ ]
७. हाय ! कितनी निर्दयी हूँ मैं । [ ]
८. काकी उठो, भोजन कर लो । [ ]
९. वाह ! कैसी सुगंध है । [ ]
१०. तुम्हारी बात मुझे अच्छी नहीं लगी । [ ]

(२) कोष्ठक की सूचना के अनुसार निम्न वाक्यों में अर्थ के आधार पर परिवर्तन कीजिए :

१. थोड़ी बातें हुईं । (निषेधार्थक वाक्य)
२. मानू इतना ही बोल सकी । (प्रश्नार्थक वाक्य)
३. मैं आज रात का खाना नहीं खाऊँगा । (विधानार्थक वाक्य)
४. गाय ने दूध देना बंद कर दिया । (विस्मयार्थक वाक्य)
५. तुम्हें अपना ख्याल रखना चाहिए । (आज्ञार्थक वाक्य)

(३) प्रथम इकाई के पाठों में से अर्थ के आधार पर विभिन्न प्रकार के पाँच-पाँच वाक्य ढूँढ़कर लिखिए ।

(४) रचना के आधार पर वाक्यों के भेद पहचानकर कोष्ठक में लिखिए :

१. अधिकारियों के चेहरे पर हल्की-सी मुसकान और उत्सुकता छा गई । [-------]
२. हर ओर से अब वह निराश हो गया था । [-------]
३. उसे देख-देख बड़ा जी करता कि मौका मिलते ही उसे चलाऊँ । [-------]
४. वह बूढ़ी काकी पर झपटी और उन्हें दोनों हाथों से झटककर बोली । [-------]
५. मोटे तौर पर दो वर्ग किए जा सकते हैं । [-------]
६. अभी समाज में यह चल रहा है क्योंकि लोग अपनी आजीविका शरीर श्रम से चलाते हैं [-------]

(५) रचना के आधार पर विभिन्न प्रकार के तीन-तीन वाक्य पाठों से ढूँढ़कर लिखिए ।

उपयोजित लेखन

निबंध लेखन : 'युवापीढ़ी का उत्तरदायित्व' विषय पर लगभग सौ शब्दों में निबंध लिखिए ।

7J718E

११. दुख

(पूरक पठन)

– *यशपाल*

जिसे मनुष्य अपना समझ भरोसा करता है जब उसी से अपमान और तिरस्कार प्राप्त हो तो मन वितृष्णा से भर जाता है, एकदम मर जाने की इच्छा होने लगती है, उसे शब्दों में बता सकना संभव नहीं ।

दिलीप ने अपनी पत्नी हेमा को पूर्ण स्वतंत्रता दी थी । वह उसका बहुत आदर करता था, बहुत आंतरिकता से वह उसके प्रति अनुरक्त था। बहुत से लोग इसे 'अति' कहेंगे । इसपर भी वह हेमा को संतुष्ट न कर सका । जब हेमा, केवल दिलीप के मित्र के साथ सिनेमा देख आने के कारण रात भर रूठी रहकर सुबह उठते ही माँ के घर चली गई तब दिलीप के मन में क्षोभ का अंत न रहा ।

सितंबर का अंतिम सप्ताह था । दिलीप बैठक की खिड़की और दरवाजों पर परदा डाले बैठा था । वितृष्णा और ग्लानि में, समय स्वयं यातना बन जाता है । एक मिनट गुजारना मुश्किल हो जाता है । उसी समय सीढ़ियों पर से छोटे भाई के धम-धम कर उतरते चले आने का शब्द सुनाई दिया ।

छोटे भाई ने परदे को हटाकर पूछा था, ''भाई जी, आपको कहीं जाना न हो तो मैं मोटरसाइकिल ले जाऊँ?''

इस विघ्न से शीघ्र छुटकारा पाने के लिए दिलीप ने हाथ के इशारे से उसे इजाजत दे, आँखें बंद कर लीं ।

दीवार पर टँगी घड़ी ने कमरे को गुँजाते हुए छह बज जाने की सूचना दी । दिलीप ने सोचा- 'क्या, वह यों ही कैद में पड़ा रहेगा ?' उठकर खिड़की का परदा हटाकर देखा, बारिश थम गई थी । अब उसे दूसरा भय हुआ कि कोई आ बैठेगा और अप्रिय चर्चा चला देगा ।

वह उठा । भाई की साइकिल ले, गली के कीचड़ से बचता हुआ और उससे अधिक लोगों की निगाहों से छिपता हुआ वह मोरी दरवाजे से बाहर निकल मिंटो पार्क जा पहुँचा । उस लंबे-चौड़े पार्क में पानी से भरी घास पर पछवाँ के तेज झोंकों में ठिठुरने के लिए उस समय भला कौन आता ?

उस एकांत में एक बेंच के सहारे साइकिल खड़ी कर वह बैठ गया। सिर से टोपी उतारकर बेंच पर रख दी । सिर में ठंडक लगने से मस्तिष्क की व्याकुलता कुछ कम हुई ।

विचार आया, यदि ठंड लग जाने से वह बीमार हो जाए, उसकी हालत खराब हो जाए तो वह चुपचाप शहीद की तरह अपने दुख को

परिचय

जन्म : १९०३, फिरोजपुर (पंजाब)
मृत्यु : १९७६
परिचय : यशपाल जी ने अपने लेखन की शुरुआत कहानियों से की । बाद में प्रमुख विधा के रूप में उपन्यास लेखन को अपनाया । आपकी रचनाओं में समाज के शोषित, उत्पीड़ित तथा सामाजिक बदलाव के लिए संघर्षरत व्यक्तियों के प्रति गहरी आत्मीयता दिखाई देती है । आपकी रचनाएँ धार्मिक आडंबर और समाज की झूठी नैतिकताओं पर करारी चोट करती हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'पिंजड़े की उड़ान', 'फूलों का कुर्ता', 'सच बोलने की भूल' (कहानी संग्रह), 'दिव्या', 'झूठा-सच', 'मनुष्य के रूप', 'देशद्रोही' (उपन्यास) 'चक्कर क्लब' (व्यंग्य संग्रह) आदि ।

गद्‌य संबंधी

मनुष्य अपने जीवन में आए दुखों को सबसे बड़ा समझता है, लेकिन उससे भी अधिक दुखी जन समाज में निरुपाय जीते रहते हैं । इन्हें देख वह अपना दुख भूलकर अपने आपको सुखी मानता है ।

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने दूसरों के दुख के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए हमदर्दी दिखाई है । आपका मानना है कि दूसरों के सुख में सुखी होना और उनके दुःख में दुःखी होना भी मानव धर्म है । छोटी बात को समस्या मानकर रोते रहना उचित नहीं है ।

अकेला ही सहेगा । 'किसी को' अपने दुख का भाग लेने के लिए नहीं बुलाएगा । जो उसपर विश्वास नहीं कर सकता, उसे क्या अधिकार है कि उसके दुख का भाग बँटाने आए ? एक दिन मृत्यु दबे पाँव आएगी और उसके रोग के कारण, हृदय की व्यथा और रोग को ले, उसके सिर पर सांत्वना का हाथ फेर, उसे शांत कर चली जाएगी । उस दिन जो लोग रोने बैठेंगे, उनमें हेमा भी होगी । उस दिन उसे खोकर हेमा अपने नुकसान का अंदाजा कर, अपने व्यवहार के लिए पछताएगी । यही बदला होगा दिलीप के चुपचाप दुख सहते जाने का । निश्चय कर उसने संतोष का एक दीर्घ निःश्वास लिया । करवट बदल ठंडी हवा खाने के लिए वह बैठ गया ।

स्वयं सहे अन्याय के प्रतिकार की एक ही संभावना देख उसका मन कुछ हलका हो गया था। वह लौटने के लिए उठा । शरीर में शैथिल्य की मात्रा बाकी रहने के कारण साइकिल पर न चढ़ वह पैदल भाटी दरवाजे पहुँचा । मार्ग में शायद ही कोई व्यक्ति दिखाई दिया हो । सड़क किनारे स्तब्ध खड़े बिजली के लैंप निष्काम और निर्विकार भाव से अपना प्रकाश सड़क पर डाल रहे थे । सौर जगत के ये अद्‌भुत नमूने थे । प्रत्येक पतंगा एक ग्रह की भाँति अपने मार्ग पर चक्कर काट रहा था। कोई छोटा, कोई बड़ा दायरा बना रहा था । कोई दायें को, कोई बायें को, कोई आगे को, कोई विपरीत गति में, निरंतर चक्कर काटते चले जा रहे थे । कोई किसी से टकराता नहीं । वृक्षों के भीगे पत्ते बिजली के प्रकाश में चमचमा रहे थे ।

कुछ कदम आगे बढ़ने पर सड़क के किनारे नीम के वृक्षों की छाया में कोई श्वेत-सी चीज दिखाई दी । कुछ और बढ़ने पर मालूम हुआ, कोई छोटा-सा लड़का सफेद कुरता-पायजामा पहने, एक थाली सामने रखे कुछ बेच रहा है ।

बचपन में गली-मुहल्ले के लड़कों के साथ उसने अकसर खोमचेवाले से सौदा खरीदकर खाया था । अब वह इन बातों को भूल चुका था परंतु इस सरदी में सुनसान सड़क पर, जहाँ कोई आने-जाने वाला नहीं, यह खोमचेवाला कैसे बैठा है?

खोमचेवाले के छोटे शरीर और आयु ने भी उसका ध्यान आकर्षित किया । उसने देखा, रात में सौदा बेचने निकलने वाले सौदागर के पास मिट्टी के तेल की ढिबरी तक नहीं । समीप आकर उसने देखा, वह लड़का सर्द हवाओं में सिकुड़कर बैठा था । दिलीप के समीप आने पर उसने आशा की एक निगाह उसकी ओर डाली और फिर आँखें झुका लीं ।

दिलीप ने और ध्यान से देखा। लड़के के मुख पर खोमचा बेचने वालों की-सी चतुरता न थी, बल्कि उसकी जगह थी एक कातरता। उसकी थाली भी खोमचे का थाल न होकर घरेलू व्यवहार की एक मामूली

यू ट्यूब पर गुलजार की कविताएँ सुनिए तथा सुनाइए ।

मुरादाबादी थाली थी । तराजू भी न था । थाली में कागज के आठ टुकड़ों पर पकौड़ों की बराबर-बराबर ढेरियाँ लगाकर रख दी गई थीं ।

दिलीप ने सोचा, इस ठंडी रात में हम ही दो व्यक्ति बाहर हैं । वह उसके पास जाकर ठिठक गया । मनुष्य-मनुष्य में कितना भेद होता है, परंतु मनुष्यत्व एक चीज है, जो कभी-कभी भेद की सब दीवारों को लाँघ जाती है । दिलीप को समीप खड़े होते देख लड़के ने कहा-

''एक-एक पैसे में एक-एक ढेरी ।''

एक क्षण चुप रह दिलीप ने पूछा, ''सबके कितने पैसे ?''

बच्चे ने उँगली से ढेरियों को गिनकर जवाब दिया, ''आठ पैसे ।''

दिलीप ने केवल बात बढ़ाने के लिए पूछा, ''बालक, कुछ कम नहीं लेगा ?''

सौदा बिक जाने की आशा से जो प्रफुल्लता बालक के चेहरे पर आ गई थी, वह दिलीप के इस प्रश्न से उड़ गई। उसने उत्तर दिया, ''माँ बिगड़ेगी ।''

इस उत्तर से दिलीप द्रवित हो गया और बोला, ''क्या पैसा माँ को देगा ?'' बच्चे ने हामी भरी ।

दिलीप ने कहा, ''अच्छा, सब दे दो !''

लड़के की व्यस्तता देख दिलीप ने अपना रूमाल निकालकर दे दिया और पकौड़े उसमें बँधवा दिए ।

आठ पैसे का खोमचा बेचने जो इस सरदी में निकला है; उसके घर की क्या अवस्था होगी ?

यह सोचकर दिलीप सिहर उठा । उसने जेब से एक रुपया निकालकर लड़के की थाली में डाल दिया । रुपये की खनखनाहट से सुनसान रात गूँज उठी । रुपये को देख लड़के ने कहा, ''मेरे पास तो छुट्‌टे पैसे नहीं हैं ?''

दिलीप ने पूछा, ''तुम्हारा घर कहाँ है ?''

''पास ही गली में है,'' लड़के ने जवाब दिया ।

दिलीप के मन में उसका घर देखने का कौतूहल जाग उठा । बोला, ''चलो, मुझे भी उधर से ही जाना है । रास्ते में तुम्हारे घर से पैसे ले लूँगा ।''

बच्चे ने घबराकर कहा, ''पैसे तो घर में भी न होंगे ।''

दिलीप सुनकर सिहर उठा, परंतु उत्तर दिया, ''होंगे, तुम चलो ।''

लड़का खाली थाली को छाती से चिपटाकर आगे-आगे चला और उसके पीछे साइकिल को थामे दिलीप ।

दिलीप ने पूछा, ''तुम्हारे पिता जी क्या करते हैं ?''

लड़के ने उत्तर दिया, ''पिता जी मर गए हैं ।''

संभाषणीय

किसी खोमचेवाले से उसकी दिनचर्या जानने के लिए बातचीत कीजिए ।

दिलीप चुप हो गया । कुछ और दूर जा उसने पूछा, ''तुम्हारी माँ क्या करती हैं ?''

लड़के ने उत्तर दिया, ''माँ एक बाबू के यहाँ चौका-बरतन करती थी, अब बाबू ने हटा दिया ।''

दिलीप ने पूछा, ''क्यों हटा दिया बाबू ने ?''

लड़के ने जवाब दिया, ''माँ अढ़ाई रुपये महीना लेती थी, जगतू की माँ ने बाबू से कहा कि वह दो रुपये में सब काम कर देगी । इसलिए बाबू की घरवाली ने माँ को हटाकर जगतू की माँ को रख लिया ।''

दिलीप फिर चुप हो गया । लड़का नंगे पैर गली के कीचड़ में छप-छप करता चला जा रहा था । दिलीप को कीचड़ से बचकर चलने में असुविधा हो रही थी । लड़के की चाल की गति को कम करने के लिए दिलीप ने फिर प्रश्न किया, ''तुम्हें जाड़ा नहीं मालूम होता ?''

लड़के ने शरीर को गरम करने के लिए चाल और तेज करते हुए उत्तर दिया, ''नहीं ।''

गली के मुख पर कमेटी की बिजली का लैंप जल रहा था । ऊपर की मंजिल की खिड़कियों से भी गली में कुछ प्रकाश पड़ रहा था । उससे गली का कीचड़ चमककर किसी तरह मार्ग दिखाई दे रहा था ।

सँकरी गली में एक बड़ी खिड़की के आकार का दरवाजा खुला था । उसका धुँधला लाल-सा प्रकाश सामने पुरानी ईंटों की दीवार पर पड़ रहा था, इसी दरवाजे में लड़का चला गया ।

दिलीप ने झाँककर देखा, मुश्किल से आदमी के कद की ऊँचाई की कोठरी में-जैसी प्रायः शहरों में ईंधन रखने के लिए बनी रहती है-धुँआ उगलती मिट्टी के तेल की एक ढिबरी अपना धुँधला लाल प्रकाश फैला रही थी । एक छोटी चारपाई, जैसी कि श्राद्ध में दान दी जाती है, काली दीवार के सहारे खड़ी थी । उसके पाये से एक-दो मैले कपड़े लटक रहे थे । एक क्षीणकाय, आधी उमर की स्त्री मैली-सी धोती से शरीर लपेटे बैठी थी ।

बेटे को देख स्त्री ने पूछा, ''सौदा बिका बेटा ?''

लड़के ने उत्तर दिया, ''हाँ माँ'' और रुपया माँ के हाथ में देकर कहा, ''बाकी पैसे बाबू जी को देने हैं ।''

रुपया हाथ में ले माँ ने विस्मय से पूछा, ''कौन बाबू बेटा ?''

बच्चे ने उत्साह से कहा, ''साइकिलवाले बाबू ने सब सौदा लिया है । उनके पास छुट्टे पैसे नहीं थे । बाबू गली में खड़े हैं ।''

घबराकर माँ बोली, ''रुपये के पैसे कहाँ से मिलेंगे बेटा ?'' सिर के कपड़े को सँभाल दिलीप को सुनाने के अभिप्राय से माँ ने कहा, ''बेटा रुपया बाबू जी को लौटाकर घर का पता पूछ ले, पैसे कल ले आना ।''

पठनीय

यशपाल लिखित 'दुख का अधिकार' कहानी पढ़कर साभिनय प्रस्तुत कीजिए ।

लड़का रुपया ले दिलीप को लौटाने आया । दिलीप ने ऊँचे स्वर से, ताकि माँ सुन ले, कहा, ''रहने दो, कोई परवाह नहीं, फिर आ जाएगा ।''

सिर के कपड़े को आगे खींच स्त्री ने कहा, ''नहीं जी, आप रुपया लेते जाइए, बच्चा पैसे कल ले आएगा ।''

दिलीप ने शरमाते हुए कहा, ''रहने दीजिए । यह पैसे मेरी तरफ से बच्चे को मिठाई खाने के लिए रहने दीजिए ।''

स्त्री ''नहीं-नहीं'' करती रह गई । दिलीप अँधेरे में पीछे सरक गया ।

स्त्री के मुरझाए, कुम्हलाए पीले चेहरे पर कृतज्ञता और प्रसन्नता की झलक छा गई । रुपया अपनी धोती की खूँट में बाँध, एक ईंट पर रखे पीतल के लोटे से पानी ले उसने हाथ धो लिए और एक मैले अँगोछे से लिपटी रोटी निकाल, बेटे के हाथ धुला, उसे खाने को दे दी ।

बेटा तुरंत की कमाई से पुलकित हो रहा था । मुँह बनाकर कहा, ''ऊँ-ऊँ, फिर रूखी रोटी ।''

माँ ने पुचकारकर कहा, ''नमक डाला हुआ है बेटा ।''

बच्चे ने रोटी जमीन पर डाल दी और ऐंठ गया, ''सुबह भी रूखी रोटी, रोज-रोज रूखी ।''

हाथ आँखों पर रख बच्चा मुँह फैलाकर रोना ही चाहता था कि माँ ने उसे गोद में खींच लिया और कहा, ''मेरा राजा बेटा, सुबह जरूर दाल खिलाऊँगी । देख, बाबू तेरे लिए रुपया दे गए हैं । शाबास !''

''सुबह मैं तुझे खूब सौदा बना दूँगी । फिर तू रोज दाल खाना ।''

बेटा रीझ गया। उसने पूछा, 'माँ, तूने रोटी खा ली ?'

खाली अँगोछे को तहाते हुए माँ ने उत्तर दिया, ''हाँ बेटा ! अब मुझे भूख नहीं है, तू खा ले ।''

भूखी माँ का बेटा बचपने के कारण रूठा था परंतु माँ की बात के बावजूद घर की हालत से परिचित था । उसने अनिच्छा से एक रोटी माँ की ओर बढ़ाकर कहा, 'एक रोटी तू खा ले ।'

माँ ने स्नेह से पुचकारकर कहा, ''बेटा, मैंने सुबह देर से खाई थी, मुझे अभी भूख नहीं, तू खा !''

दिलीप के लिए और देख सकना संभव न था । दाँतों से ओंठ दबा वह पीछे हट गया ।

मकान पर आकर वह बैठा ही था कि नौकर ने आ दो भद्र पुरुषों के नाम बताकर कहा, ''आए थे, चले गए ।'' खाना तैयार होने की सूचना दी । दिलीप ने उसकी ओर बिना देखे ही कहा, ''भूख नहीं है ।'' उसी समय उसे लड़के की माँ का 'भूख नहीं' कहना याद आ गया ।

नौकर ने विनीत स्वर में पूछा, ''थोड़ा दूध ले आऊँ ?''

लेखनीय

पुस्तकालय में आने वाली नवीनतम किसी पत्रिका की पसंदीदा कहानी को संवाद रूप में लिखकर भित्ति फलक पर लगाइए ।

दिलीप को गुस्सा आ गया। उसने गुस्से से कहा, ''क्यों, भूख न हो तो दूध पिया जाता है?... दूध ऐसी फालतू चीज है।''

नौकर कुछ न समझ विस्मित खड़ा रहा ।

दिलीप ने खीझकर कहा, ''जाओ !''

मिट्टी के तेल की ढिबरी के प्रकाश में देखा वह दृश्य उसकी आँखों के सामने से हटना नहीं चाहता था ।

छोटे भाई ने आकर कहा, ''भाभी ने पत्र भेजा है'' और लिफाफा दिलीप की ओर बढ़ा दिया ।

दिलीप ने पत्र खोला। पत्र की पहली लाइन में लिखा था–

''मैं इस जीवन में दुख ही देखने के लिए पैदा हुई हूँ....''

दिलीप ने आगे न पढ़, पत्र फाड़कर फेंक दिया । उसके माथे पर बल पड़ गए । झोंपड़ी के दृश्य आँखों के सामने नाच उठे । उसके मुँह से निकला–

''काश ! तुम जानती, दुख किसे कहते हैं ?...''

— o —

शब्द संसार

अनुरक्त वि.(सं.) = जिसके मन में अनुराग उत्पन्न हुआ हो

प्रफुल्लता स्त्री.सं.(सं.) = प्रसन्नता

अँगोछा पुं.सं.(हिं.) = शरीर पोंछने का कपड़ा, गमछा

स्वाध्याय

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

पतंगे की विशेषताएँ

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

खोमचेवाले के पास इन बातों का अभाव था

(३) ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्न शब्द हों :

१. मिंटो पार्क

२. चतुरता

३. कृतज्ञता और प्रसन्नता

४. व्यस्त और रोचकता

(४) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए :

खोमचेवाले के घर की स्थिति
↓
↓
↓
↓

(५) जोड़ियाँ मिलाइए :

अ	उत्तर	आ
१. धुँधला लाल	______	१. अँगोछा
२. खोमचेवाला	______	२. खनखनाहट
३. मुरादाबादी	______	३. प्रकाश
४. रुपये	______	४. सौदा
५. माँ	______	५. चौका-बर्तन
६. मैली-सी	______	६. थाली
		७. धोती

(६) कारण लिखिए :

१. मनुष्य का मन अनासक्त हो जाता है ------------------------

२. दिलीप साइकिल पर बिना बैठे चलने लगा ------------------------

३. बच्चे ने अनिच्छा से रोटी माँ की ओर बढ़ाई ------------------------

४. दिलीप खोमचेवाले के साथ उसके घर गया ------------------------

(७) सही घटनाक्रम लगाकर वाक्य फिर से लिखिए :

१. बेटा तुरंत की कमाई से पुलकित हो रहा था। ----------------------------------

२. उसने जेब से एक रुपया निकालकर लड़के की थाली में डाल दिया। -----------------------------------

३. एक मिनट गुजारना मुश्किल हो जाता है। -----------------------------------

४. व्याकुलता कुछ कम हुई। -----------------------------------

(८) उचित शब्द चुनकर लिखिए :

१. गली के मुख पर कमेटी की बिजली का --------- जल रहा था। (दीया, दीपक, लैंप)

२. रुपया हाथ में ले माँ ने --------- से पूछा। (दिलीप, बच्चे, विस्मय)

३. रहने दो कोई --------- नहीं फिर आ जाएगा। (चिंता, परवाह, कोई बात नहीं)

४. उसने --------- खोमचेवाले से सौदा खरीद कर खाया था। (अक्सर, हमेशा,नित्य)

(९) आकृति में दिए गए शब्दों का वर्गीकरण निर्देशानुसार कीजिए :

सड़क, खोमचा, ढिबरी, थालियाँ, चर्चा, व्यक्ति, पैसे, साइकिलें

एकवचन	बहुवचन
______	______
______	______
______	______
______	______

अभिव्यक्ति 'गरीबी उन्नति में बाधा नहीं बनती', विषय पर अपने विचार लिखिए।

उपयोजित लेखन

निम्नलिखित दोनों परिच्छेद पढ़कर प्रत्येक पर आधारित ऐसे पाँच प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हों :

परिच्छेद - १

भारतीय वायु सेना की एक प्रशिक्षणार्थी डॉ. कु. गीता घोष ने उस दिन यह छलाँग लगाकर भारतीय महिलाओं की प्रगति के इतिहास में एक पन्ना और जोड़ दिया था डॉ. घोष पहली भारतीय महिला हैं, जिन्होंने वायुयान से छतरी द्‍वारा उतरने का साहसिक अभियान किया था ।

छतरी से उतरने का प्रशिक्षण पूरा करने के लिए हर छाताधारी को सात बार छतरी से उतरना पड़ता है । इनमें से पहली कूद तो रोमांचित होती ही है, वह कूद और भी रोमांचक होती है, जब उसे रात के अँधेरे में कहीं जंगल में अकेले उतरना होता है । डॉ. गीता न पहली कूद में घबराईं, न अन्य कूदों में और इसी प्रकार सातों कूदें उन्होंने सफलतापूर्वक पूरी कर लीं । प्रशिक्षण के दौरान उनका यह कथन कि 'मैं चाहती हूँ, जल्दी ये कूदें खत्म हों और मैं पूर्ण सफल छाताधारी बन जाऊँ', उनकी उमंग तथा उत्साह को प्रकट करता है । डॉ. गीता के अनुसार, उनकी डॉक्टरी शिक्षा भी इसी साहसी अभियान में काम आई । फिर लगन और नए क्षेत्र में प्रवेश का उत्साह हो तो कौन-सा काम कठिन रह जाता है । प्रशिक्षण से पूर्व तो उन्हें और भी कठिन परीक्षाओं के दौर से गुजरना पड़ा था ।

प्रश्न : १. ____________________

२. ____________________

३. ____________________

४. ____________________

५. ____________________

परिच्छेद - २

भगिनी निवेदिता एक विदेशी महिला थीं, किंतु उन्होंने इस देश के नवोत्थान और भारतीय राष्ट्रीयता के विकास के लिए बहुत कुछ किया । जीवन के संबंध में उनका दृष्टिकोण बड़ा ही उदार था, समूचे संसार को वे एक ऐसी अविभाजनशील इकाई मानती थीं जिसका हर पहलू एक-दूसरे से संश्लिष्ट और अन्योन्याश्रयी है । लंदन में एक दिन स्वामी विवेकानंद के श्रीमुख से उनकी वक्तृता सुनकर इनमें अकस्मात परिवर्तन हुआ । २८ वर्षीय मिस मार्गरेट नोबुल, जो आयरिश थी, स्वामी जी की वाणी से इतनी अभिभूत हो उठीं कि भगिनी निवेदिता के रूप में उनका शिष्यत्व ग्रहण कर वह अपनी संवेदना, हृदय में उभरती असंख्य भाव-लहरियों को बाँध न सकी और भारत के साथ उनका घनिष्ठ रागात्मक संबंध कायम हो गया ।

ऐसा लगता था जैसे वह भारत की मिट्टी से उपजी हों या स्वर्ग दुहिता-सी अपने प्रकाश से यहाँ के अंधकार को दूर करने आई हों । ज्यों ही वे इधर आईं देशव्यापी पुनर्जागरण के साथ-साथ शिक्षा, धर्म और संस्कृति के क्षेत्र में उन्हें क्रांतिकारी परिवर्तन करने की आवश्यकता अनुभव हुई ।

प्रश्न : १. ____________________

२. ____________________

३. ____________________

४. ____________________

५. ____________________

7JFHD2

१२. चलो आज हम दीप जलाएँ

– सुरेंद्रनाथ तिवारी

भारतभूमि के वंदन हित,
राष्ट्रदेव के अभिनंदन हित,
जन-जन में चेतना जगाएँ ।
चलो आज हम दीप जलाएँ ।
आजादी के उस प्रताप का रक्त गिरा था जहाँ-जहाँ पर,
राणा के चेतक की टापें जहाँ-जहाँ थीं पड़ी, वहाँ पर !
और बिलाव घास की रोटी ले भागा था जिन कुंजों में,
नन्हीं भूखी राजकुमारी, बिलख रही थी खड़ी जहाँ पर ।
हल्दी घाटी की परती पर,
आजादी की उस धरती पर
चलो आज आरती सजाएँ ।
चलो आज हम दीप जलाएँ ।
लक्ष्मीबाई का घोड़ा था ठिठका, जहाँ नदी के तट पर,
जहाँ शिवाजी कैद हुए थे उस कारागृह की चौखट पर ।
वीर भगत सिंह की समाधि पर, अशफाक-ओ-आजाद के घर-घर
कुँअर सिंह ने गलित बाँह वह, काटी थी जिस गंगा तट पर ।
राजगुरु-सुखदेव मही पर
दुर्गा भाभी की देहरी पर,
बिस्मिल की उस विस्मृत भू-पर
और सुभाष की वीर प्रसू पर ।
आजादी का प्रण दुहराएँ ।
चलो आज हम दीप जलाएँ ।
जलियाँवाला की धरती पर, लहूलुहान लाल परती पर
शिशु को गोद लिए ललनाएँ, कट-कटकर गिर गईं मही पर
शीश कटा पर झुका नहीं, उन शीशगंज के गुरुद्वारों पर।
नन्हे शिशु चिन गए जहाँ, उन अत्याचारी दीवारों पर ।
कारगिल के उन शिखरों पर, जहाँ खून ताजा है अब भी,
वीरगति को प्राप्त हुए जो, हर जवान के दरवाजे पर ।
राष्ट्रदेव की प्राण प्रतिष्ठा में
उनकी अब आरती सजाएँ
चलो आज हम दीप जलाएँ ।

— ० —

परिचय

जन्म : १९५३, चंपारन (बिहार)
परिचय : सुरेंद्रनाथ तिवारी जी भारतीय सेना के पूर्व कमीशन अधिकारी हैं । पिछले बीस वर्षों से अमेरिका के विश्वविद्‌यालयों में इंजीनियरिंग मैनेजमेंट का अध्यापन कर रहे हैं । आप अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति के अध्यक्ष भी रहे हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'वह कविता है', 'कुछ तो गाओ', 'चलो आज हम दीप जलाएँ', 'अमीरों के कपड़े' (कविता), 'उपलब्धि' (कहानी), 'संउसे सहरिया' (संस्मरण) आदि ।

पद्‌य संबंधी

प्रस्तुत गीत में सुरेंद्रनाथ तिवारी जी ने ऐतिहासिक स्थलों, इनसे संबंधित महान विभूतियों, बलिदानियों का उल्लेख किया है । आपका कहना है कि ये सभी हमारे गौरव के प्रतीक हैं । हमें इनका सदैव सम्मान करना चाहिए। आपका मानना है कि हर भारतीय का यह पावन कर्तव्य है कि हम उन स्थलों पर दीप जलाएँ और उन बलिदानियों की आरती उतारें ।

शब्द संसार

ठिठका स्त्री.सं.(सं.) = अचानक रूक जाना
देहरी स्त्री.सं.(दे.) = दहलीज
विस्मृत वि.(सं.) = भुलाया हुआ
प्रसू स्त्री.वि.(सं.) = पैदा करने वाली
मही स्त्री.सं.(सं.) = पृथ्वी

स्वाध्याय

✲ सुचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(१) कारण लिखिए :

१. हल्दी घाटी पर दीपक जलाने का -------
२. कारगिल के शिखरों पर दीपक जलाने का -------

(२) जोड़ियाँ मिलाइए :

अ	आ	उत्तर
१. राणा प्रताप	धरती	-------------
२. रानी लक्ष्मीबाई	कारागृह	-------------
३. शिवाजी महाराज	गंगा तट	-------------
४. कुँअर सिंह	रक्त	-------------
५. जलियाँवाला	घोड़ा	-------------
	समाधि	-------------

(३) निम्न स्थानों का महत्त्व दो–तीन वाक्यों में लिखिए :

१. जलियाँवाला बाग –
२. हल्दी घाटी –

(४) निम्न मुद्दों पर आधारित पद्‍य का विश्लेषण कीजिए :

१. रचनाकार का नाम
२. रचना की विधा
३. पसंदीदा पंक्ति
४. पसंद होने के कारण
५. कविता से प्राप्त प्रेरणा/संदेश

(५) भावार्थ लिखिए :

लक्ष्मीबाई का घोड़ा था, ...
....
....
.... गंगा तट पर ।

अभिव्यक्ति **'मानवता ही सच्चा धर्म है' पर अपने विचार लिखिए ।**

अपठित पद्यांश

*** परिच्छेद पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-**

परोपकार ही मानवता है, जैसा कि राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है - 'वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे ।' केवल अपने दुख-सुख की चिंता करना मानवता नहीं, पशुता है । परोपकार ही मानव को पशुता से सदय बनाता है ।

वस्तुतः निस्स्वार्थ भावना से दूसरों का हित साधन ही परोपकार है । मनुष्य अपनी सामर्थ्य के अनुसार परोपकार कर सकता है । दूसरों के प्रति सहानुभूति करना ही परोपकार है और सहानुभूति किसी भी रूप में प्रकट की जा सकती है । किसी निर्धन की आर्थिक सहायता करना अथवा किसी असहाय की रक्षा करना परोपकार के रूप हैं । किसी पागल अथवा रोगी की सेवा-शुश्रूषा करना अथवा किसी भूखे को अन्नदान करना भी परोपकार है । किसी को संकट से बचा लेना, किसी को कुमार्ग से हटा देना, किसी दुखी-निराश को सांत्वना देना-ये सब परोपकार के ही रूप हैं । कोई भी कार्य, जिससे किसी को लाभ पहुँचता है, परोपकार है, जो अपनी सामर्थ्य के अनुसार विभिन्न रूपों में किया जा सकता है ।

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

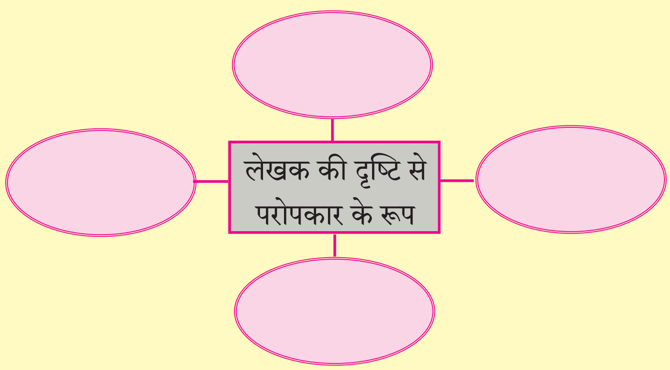

(२) 'वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे' इस पंक्ति का तात्पर्य लिखिए ।

(३) १. वचन परिवर्तन कीजिए :

१.चिंता - ______ २. भूखे - ______

२. निम्न शब्दों के लिंग पहचानिए:

१. सामर्थ्य - ______ २. परोपकार - ______

(४) 'परहित सरिस धरम नहिं भाई' पर अपने विचार लिखिए ।

व्याकरण विभाग

शब्द

(१) विकारी शब्द और उनके प्रकार

संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण	क्रिया
जातिवाचक	पुरुषवाचक	गुणवाचक	सकर्मक
व्यक्तिवाचक	निश्चयवाचक अनिश्चयवाचक	परिमाणवाचक १.निश्चित २.अनिश्चित	अकर्मक
भाववाचक	निजवाचक	संख्यावाचक १. निश्चित २. अनिश्चित	संयुक्त
द्रव्यवाचक	प्रश्नवाचक	सार्वनामिक	प्रेरणार्थक
समूहवाचक	संबंधवाचक	–	सहायक

(२) अविकारी (अव्यय) शब्द और उनके प्रकार, अव्यय पहचानना और प्रयोग

- क्रियाविशेषण
- संबंधसूचक
- समुच्चयबोधक
- विस्मयादिबोधक

(३) संधि और उसके प्रकार

- स्वर संधि
- व्यंजन संधि
- विसर्ग संधि

(४) काल और उनके प्रकार–उपप्रकार

- वर्तमानकाल
  - सामान्य
  - अपूर्ण
  - पूर्ण
- भूतकाल
  - सामान्य
  - अपूर्ण
  - पूर्ण
- भविष्यकाल
  - सामान्य
  - अपूर्ण
  - पूर्ण

(५) वाक्य के प्रकार

- रचना की दृष्टि से
  - साधारण
  - मिश्र
  - संयुक्त
- अर्थ की दृष्टि से
  - विधानार्थक
  - निषेधार्थक
  - प्रश्नार्थक
  - आज्ञार्थक
  - विस्मयाधिबोधक
  - संदेशसूचक

(६) छंद और उनके प्रकार

- दोहा
- चौपाई
- सोरठा

(७) अलंकार और उसके प्रकार–उपप्रकार

- शब्दालंकार
  - अनुप्रास
  - यमक
  - श्लेष
- अर्थालंकार
  - उपमा
  - उत्प्रेक्षा
  - रूपक

(८) कारक एवं कारक चिह्न

(९) मुहावरे और कहावतें

(१०) विरामचिह्न और उनके प्रयोग

(११) वाक्य शुद्धीकरण

(१२) समास

- अव्ययी भाव
- कर्मधारय
- तत्पुरुष
- बहुब्रीहि
- द्वंद्व
- द्विगु

शब्द संपदा– व्याकरण पाँचवीं से नौवीं

लिंग, वचन, विलोमार्थक, पर्यायवाची, शब्दयुग्म, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, भिन्नार्थक शब्द, मराठी–हिंदी समोच्चारित, कठिन शब्दों के अर्थ, उपसर्ग–प्रत्यय पहचानना/अलग करना, कृदंत, तद्धित पहचानना / मूल शब्द अलग करना ।

वर्ण, वर्ण मेल और वर्ण विच्छेद पढ़िए, समझिए और करिए :

- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ
- इनका उच्चारण स्वतंत्र रूप से किया जाता है ।
- ये व्यंजनों के उच्चारण में सहायता करते हैं ।

- क्, च्, त्, प्, ...मूल व्यंजन हैं ।
- ये स्वरों की सहायता के बिना नहीं बोले जाते ।
- व्यंजनों में स्वरों को मिलाकर लिखा और बोला जाता है । क्+अ=क, न्+अ=न, प्+ओ=पो

स्वर

व्यंजन

वर्ण

वह मूल ध्वनि जिसके खंड नहीं होते ।

वर्ण विच्छेद		वर्ण विच्छेद	
भक्ति	भ्+अ+क्+त्+इ	युक्ति	----------------
मिट्टी	म्+इ+ट्+ट्+ई	स्वस्थ	----------------
बुढ़ापा	ब्+उ+ढ़्+आ+प्+आ	उर्जस्वित	----------------
		स्तब्ध	----------------

वर्ण मेल		वर्ण मेल	
व्+इ+द्+ए+श्+ई	विदेशी	प्+उ+स्+त्+अ+क्+अ	---------
भ्+औ+ग्+ओ+ल्+इ+क्+अ	भौगोलिक	म्+ऊ+र्+त्+इ	---------
प्+ ऋ+थ्+व्+ई	पृथ्वी	अ+स्+त्+इ+त्+व्+अ	---------
		व्+इ+श्+र्+आ+म्+अ	---------

ध्यान में रखिए :– क्ष, त्र, श्र और ज्ञ संयुक्त वर्ण हैं :–

क्ष =क्+ष्+अ, त्र=त्+र्+अ, श्र =श्+र्+अ, ज्ञ=ज्+ञ्+अ

उपयोजित लेखन (रचना विभाग)

पत्रलेखन

अपने विचारों, भावों को शब्दों के द्‌वारा लिखित रूप में अपेक्षित व्यक्ति तक पहुँचा देने वाला साधन है पत्र ! हम सभी 'पत्रलेखन' से परिचित हैं ही । आजकल हम नई-नई तकनीक को अपना रहे हैं । संगणक, भ्रमणध्वनि, अंतरजाल, ई-मेल, वीडियो कॉलिंग जैसी तकनीक को अपने दैनिक जीवन से जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं । दूरध्वनि, भ्रमणध्वनि के आविष्कार के बाद पत्र लिखने की आवश्यकता कम महसूस होने लगी है फिर भी अपने रिश्तेदार, आत्मीय व्यक्ति, मित्र/सहेली तक अपनी भावनाएँ प्रभावी ढंग से पहुँचाने के लिए पत्र एक सशक्त माध्यम है । पत्रलेखन की कला को आत्मसात करने के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है । अपना कहना (माँग/शिकायत/अनुमति/विनती/आवेदन) उचित तथा कम-से-कम शब्दों में संबंधित व्यक्ति तक पहुँचाना, अनुरूप भाषा का प्रयोग करना एक कौशल है । अब तक हम जिस पद्‌धति से पत्रलेखन करते आए हैं, उसमें नई तकनीक के अनुसार अपेक्षित परिवर्तन करना आवश्यक हो गया है । ।

पत्रलेखन में भी आधुनिक तंत्रज्ञान/तकनीक का उपयोग करना समय की माँग है । आने वाले समय में आपको ई-मेल भेजने के तरीके से भी अवगत होना है । अतः इस वर्ष से पत्र के नये प्रारूप के अनुरूप ई-मेल की पद्‌धति अपनाना अपेक्षित है ।

❋ पत्र लेखन के मुख्य दो प्रकार हैं, औपचारिक और अनौपचारिक । (पृष्ठ क्र. ५१, ७७)

औपचारिक पत्र

• प्रति लिखने के बाद पत्र प्राप्तकर्ता का पद और पता लिखना आवश्यक है । • पत्र के विषय तथा संदर्भ का उल्लेख करना आवश्यक है । • इसमें महोदय/महोदया शब्द द्‌वारा आदर प्रकट किया जाता है । • निश्चित तथा सही शब्दों में आशय की प्रस्तुति करना अपेक्षित है । • पत्र का समापन करते समय बायीं ओर पत्र भेजने वाले का नाम, पता लिखना चाहिए। •ई-मेल आई डी देना आवश्यक है ।

अनौपचारिक पत्र

• संबोधन तथा अभिवादन रिश्तों के अनुसार, आदर के साथ करना चाहिए । • प्रारंभ में जिसको पत्र लिखा है उसका कुशलक्षेम पूछना चाहिए । • लेखन स्नेह सम्मान सहित प्रभावी शब्दों और विषय विवेचन के साथ होना चाहिए। • रिश्ते के अनुसार विषय विवेचन में परिवर्तन अपेक्षित है। • इस पत्र में विषय उल्लेख आवश्यक नहीं है । • पत्र का समापन करते समय बायीं ओर पत्र भेजने वाले के हस्ताक्षर, नाम तथा पता लिखना आवश्यक है ।

टिप्पणी : पत्रलेखन में अब तक लिफाफे पर पत्र भेजने वाले (प्रेषक) का पता लिखने की प्रथा है । ई-मेल में लिफाफा नहीं होता है । अब पत्र में ही पता लिखना अपेक्षित है ।

पत्र का प्रारूप
(औपचारिक पत्र)

दिनांक :
प्रति,
....
....
विषय : ....
संदर्भ : ....
महोदय,
विषय विवेचन ....
....
....

भवदीय/भवदीया,
नाम : ....
पता : ....
....
ई-मेल आईडी : ....

गद्य आकलन (प्रश्न निर्मिति)

• भाषा सीखकर प्रश्नों की निर्मिति करना एक महत्वपूर्ण भाषाई कौशल है । पाठ्यक्रम में भाषा कौशल को प्राप्त करने के लिए प्रश्ननिर्मिति घटक का समावेश किया गया है । • दिए गए परिच्छेद (गद्यांश) को पढ़कर उसी के आधार पर पाँच प्रश्नों की निर्मिति करनी है । प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में हों, ऐसे ही प्रश्न बनाए जाएँ ।

✻ प्रश्न ऐसे हों : • तैयार प्रश्न सार्थक एवं प्रश्न के प्रारूप में हों । • प्रश्नों के उत्तर दिए गए गद्यांश में हों । • रचित प्रश्न के अंत में प्रश्नचिह्न लगाना आवश्यक है । • प्रश्न रचना का कौशल प्राप्त करने के लिए अधिकाधिक अभ्यास की आवश्यकता है । • प्रश्न के उत्तर नहीं लिखने है । • प्रश्न की रचना पूरे गद्यांश पर होनी आवश्यक है ।

✻ प्रश्न निर्मिति के लिए आवश्यक प्रश्नवाचक शब्द निम्नानुसार हैं :

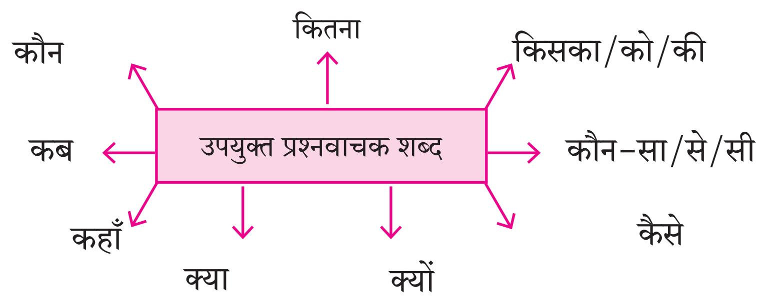

वृत्तांत लेखन

वृत्तांत का अर्थ है- घटी हुई घटना का विवरण/रपट/अहवाल लेखन । यह रचना की एक विधा है । इसे विषय के अनुसार लिखना पड़ता है। वृत्तांत लेखन एक कला है, जिसमें भाषा का कुशलतापूर्वक प्रयोग करना होता है । यह किसी घटना, समारोह का विस्तृत वर्णन है जो किसी को जानकारी देने हेतु लिखा होता है । इसे रिपोर्ताज, इतिवृत्त, अहवाल आदि नामों से भी जाना जाता है ।

वृत्तांत लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य बातें : • वृत्तांत में घटित घटना का ही वर्णन करना है । • घटना, काल, स्थल का वर्णन अपेक्षित होता है । साथ-ही-साथ घटना जैसी घटित हुई उसी क्रम से प्रभावी और प्रवाही भाषा में वर्णित हो । • वृत्तांत लेखन लगभग अस्सी शब्दों में हो । समारोह में अध्यक्ष/उद्घाटक/व्याख्याता/वक्ता आदि के जो मौलिक विचार/संदेश व्यक्त हुए हैं उनका संक्षेप में उल्लेख हो • भाषण में कहे गए वाक्यों को दुहरा अवतरण '' ....'' चिह्न लगाकर लिखना चाहिए । • आशयपूर्ण, उचित तथा आवश्यक बातों को ही वृत्तांत में शामिल करें । • वृत्तांत का समापन उचित पद्धति से हो ।

वृत्तांत लेखन के विषय : शिक्षक दिवस, हिंदी दिवस, वाचन प्रेरणा दिवस, शहीद दिवस, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस, वैश्विक महिला दिवस, बालिका दिवस, बाल दिवस, दिव्यांग दिवस, क्रीड़ा महोत्सव, वार्षिक पुरस्कार वितरण, वन महोत्सव आदि ।

उदाहरण : १. नीचे दिए विषय पर वृत्तांत लेखन कीजिए :

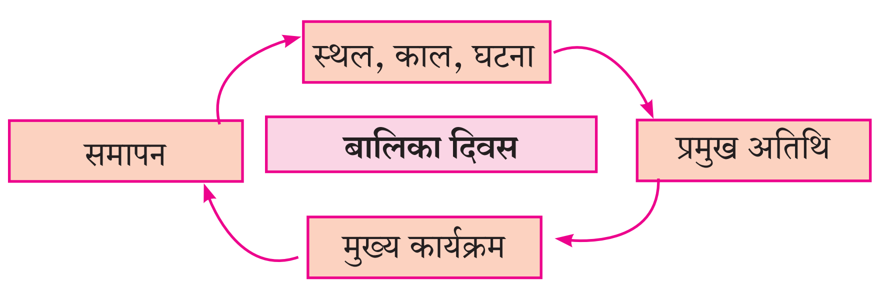

२. अपने परिसर में मनाए गए 'अंतरराष्ट्रीय दिव्यांग दिवस' का वृत्तांत लगभग अस्सी शब्दों में लिखिए । (वृत्तांत में स्थल, काल, घटना का उल्लेख आवश्यक है ।)

कहानी लेखन

कहानी सुनना-सुनाना आबाल वृद्धों के लिए रुचि और आनंद का विषय होता है । कहानी लेखन विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति, नवनिर्मिति व सृजनशीलता को प्रेरणा देता है । इसके पूर्व की कक्षाओं में आपने कहानी लेखन का अभ्यास किया है । कहानी, घटना अपनी कल्पना और सृजनशीलता से रची जाती है । कहानी का मूलकथ्य (कथाबीज) उसके प्राण होते हैं । मूल कथ्य के विस्तार के लिए विषय को पात्र, घटना, तर्कसंगत विचारों से परिपोषित करना लेखन कौशल है । इसी लेखन कौशल का विकास करना कहानी लेखन का उद्देश्य है । कहानी लेखन का उद्देश्य मनोरंजन तथा आनंदप्राप्ति भी है ।

कहानी लेखन में निम्न बातों की ओर विशेष ध्यान दें : • शीर्षक, कहानी के मुद्दों का विस्तार और कहानी से प्राप्त सीख, प्रेरणा, संदेश ये कहानी लेखन के अंग हैं । • कहानी भूतकाल में लिखी जाए । कहानी के संवाद प्रसंगानुकूल वर्तमान या भविष्यकाल में हो सकते हैं । संवाद दोहरे अवतरण चिह्न में लिखना अपेक्षित है । • कहानी लेखन की शब्दसीमा सौ शब्दों तक हो । • कहानी के आरंभ में शीर्षक लिखना आवश्यक होता है । शीर्षक छोटा, आकर्षक, अर्थपूर्ण और सारगर्भित होना चाहिए । • कहानी में कालानुक्रम, घटनाक्रम और प्रवाह होना आवश्यक है । प्रत्येक मुद्दे या शब्द का अपेक्षित विस्तार आवश्यक है । • घटनाएँ धाराप्रवाह अर्थात एक दूसरे से शृंखलाबद्ध होनी चाहिए । • कहानी के प्रसंगानुसार वातावरण निर्मिति होनी चाहिए । उदा. जंगल में कहानी घटती है तो जंगल का रोचक, आकर्षक तथा सही वर्णन अपेक्षित है । • कहानी के मूलकथ्य/विषय (कथाबीज) के अनुसार पात्र व उनके संवाद, भाषा पात्रानुसार प्रसंगानुकूल होने चाहिए । • प्रत्येक परिसर/क्षेत्र की भाषा एवं भाषा शैली में भिन्नता/विविधता होती है । इसकी जानकारी होनी चाहिए । • अन्य भाषाओं के उद्धरण, सुवचनों आदि के प्रयोग से यथासंभव बचे । • कहानी लेखन में आवश्यक विरामचिह्नों का प्रयोग करना न भूलें । • कहानी लेखन करते समय अनुच्छेद बनाएँ । जहाँ एक विचार, एक घटना समाप्त हो, वहाँ परिच्छेद समाप्त करें । • कहानी का विस्तार करने के लिए उचित मुहावरे, कहावतें, सुवचन, पर्यायवाची शब्द आदि का प्रयोग करें ।

कहानी लेखन-[शब्द सीमा अस्सी से सौ तक]

कहानी लेखन के प्रकार

(१) शब्दों के आधार पर

(२) मुद्दों के आधार पर

(३) सुवचन/कहावतों के आधार पर

विज्ञापन

वर्तमान युग स्पर्धा का है और विज्ञापन इस युग का महत्वपूर्ण अंग है । उत्कृष्ट विज्ञापन पर उत्पाद की बिक्री का आँकड़ा निर्भर करता है । आज संगणक तथा सूचना प्रौद्योगिकी के युग में, अंतरजाल (इंटरनेट) एवं भ्रमणध्वनि (मोबाइल) के क्रांति के काल में विज्ञापन का क्षेत्र विस्तृत होता जा रहा है । विज्ञापनों के कारण किसी वस्तु, समारोह, शिविर आदि के बारे में पूरी जानकारी आसानी से समाज तक पहुँच जाती है । लोगों के मन में रुचि निर्माण करना, ध्यान आकर्षित करना विज्ञापन का मुख्य उद्देश्य होता है ।

विज्ञापन लेखन करते समय निम्न मुद्दों की ओर ध्यान दें : • कम-से-कम शब्दों में अधिकाधिक आशय व्यक्त हों । • विज्ञापन की ओर सभी का ध्यान आकर्षित हो, अतः शब्दरचना, भाषा शुद्ध हो । • जिसका विज्ञापन करना है उसका नाम स्पष्ट और आकर्षक ढंग से अंकित हो । • विषय के अनुरूप रोचक शैली हो । आलंकारिक, काव्यमय, प्रभावी शब्दों का उपयोग करते हुए विज्ञापन अधिक आकर्षक बनाएँ । • ग्राहकों की बदलती रुचि, पसंद, आदत, फैशन एवं आवश्यकताओं का प्रतिबिंब विज्ञापन में परिलक्षित होना चाहिए । • विज्ञापन में उत्पाद की गुणवत्ता महत्वपूर्ण होती है, अतः छूट का उल्लेख करना हर समय आवश्यक नहीं है । • विज्ञापन में संपर्क स्थल का पता, संपर्क (फोन, मोबाइल नंबर, ई-मेल आईडी) का स्पष्ट उल्लेख करना आवश्यक है । • विज्ञापन केवल पेन से लिखें । • पेन्सिल, स्केच पेन का उपयोग न करें । • चित्र, डिजाइन बनाने की आवश्यकता नहीं है । • विज्ञापन की शब्द मर्यादा पचास से साठ शब्दों तक अपेक्षित है । विज्ञापन में आवश्यक सभी मुद्दों का समावेश हो ।

उदाहरण : निम्नलिखित जानकारी के आधार पर आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए :

ATM के लिए सुरक्षा रक्षक की आवश्यकता

- कालावधि
- शैक्षिक योग्यता
- आयु सीमा
- संपर्क

निबंध लेखन

निबंध लेखन एक कला है । निबंध का शाब्दिक अर्थ होता है 'सुगठित अथवा सुव्यवस्थित रूप में बँधा हुआ' । साधारण गद्‌य रचना की अपेक्षा निबंध में रोचकता और सजीवता पाई जाती है । निबंध गद्‌य में लिखी हुई रचना होती है, जिसका आकार सीमित होता है । उसमें किसी विषय का प्रतिपादन अधिक स्वतंत्रतापूर्वक और विशेष अपनेपन और सजीवता के साथ किया जाता है । एकसूत्रता, वस्तु/व्यक्तित्व का प्रतिबिंब, आत्मीयता, कलात्मकता निबंध के तत्व माने जाते हैं । इन तत्वों के आधार पर निबंध की रचना की जाती है ।

निबंध लिखते समय निम्नलिखित बातों की ओर ध्यान दें :

• प्रारंभ, विषय विस्तार, समापन इस क्रम से निबंध लेखन करें । • विषयानुरूप भाषा का प्रयोग करें । • भाषा प्रवाही, रोचक और मुहावरेदार हो । • कहावतों, सुवचनों का यथास्थान प्रयोग करें । • शुद्‌ध, सुवाच्य और मानक वर्तनी के अनुसार निबंध लेखन आवश्यक है । • सहज, स्वाभाविक और स्वतंत्र शैली में निबंध की रचना हो । • विचार स्पष्ट तथा क्रमबद्‌ध होने आवश्यक हैं । • निबंध की रचना करते समय शब्द चयन, वाक्य विन्यास की ओर ध्यान देना आवश्यक है । • निबंध लेखन में विषय को प्रतिपादित करने की पद्‌धति के साथ ही कम-से-कम चार अनुच्छेदों की रचना हो । • निबंध का प्रारंभ आकर्षक और जिज्ञासावर्धक हो । • निबंध के मध्यभाग में विषय का प्रतिपादन हो । निबंध का मध्यभाग महत्त्वपूर्ण होता है इसलिए उसमें नीरसता न हो । • निबंध का समापन विषय से संबंधित, सुसंगत, उचित, सार्थक विचार तक ले जाने वाला हो ।

आत्मकथनात्मक निबंध लिखते समय आवश्यक तथा महत्त्वपूर्ण बातें :

• आत्मकथन अर्थात एक तरह का परकाया प्रवेश है । • किसी वस्तु, प्राणी, पक्षी, व्यक्ति की जगह पर स्वयं को स्थापित/आरोपित करना होता है । • आत्मकथनात्मक लेखन की भाषा प्रथम पुरुष, एकवचन में हो । जैसे – मैं .... बोल रहा/रही हूँ । • प्रारंभ में विषय से संबंधित उचित प्रस्तावना, सुवचन, घटना, प्रसंग संक्षेप में लिख सकते हैं । सीधे 'मैं... हूँ' से भी प्रारंभ किया जा सकता है ।

वैचारिक निबंध लिखते समय आवश्यक बातें :

• वैचारिक निबंध लेखन में विषय से संबंधित जो विचार होते हैं, उनको प्रधानता दी जाती है । • वर्णन, कथन, कल्पना से बढ़कर विचार महत्त्वपूर्ण होते हैं । • विचार के पक्ष-विपक्ष में लिखना आवश्यक होता है । • विषय के संबंध में विचार, मुद्‌दे, मतों की तार्किक प्रस्तुति महत्त्वपूर्ण होती है । • पूरक पठन, शब्दसंपदा, विचारों की संपन्नता जितनी अधिक होती है; उतना ही वैचारिक निबंध लिखना हमारे लिए सहज होता है ।

जैसे :

निबंध लेखन के प्रकार

- आत्मकथनात्मक
  - १.फटी पुस्तक की आत्मकथा
  - २. मैं हिमालय बोल रहा हूँ...
- वैचारिक
  - १. समाचार पत्रों की भूमिका
  - २. विज्ञान के चमत्कार
- वर्णनात्मक
  - १. ऐतिहासिक स्थल की सैर
  - २. नदी किनारे दो घंटे
- चरित्रात्मक
  - १. मेरा प्रिय गायक
  - २. मेरा प्रिय खिलाड़ी
- कल्पनाप्रधान
  - १. यदि मोबाइल न होता तो...
  - २. यदि ऐनक न होती तो ...

भावार्थ– पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ४३ : पहली इकाई, पाठ ९. ब्रजवासी–संत सूरदास

यशोदा जी बार–बार यों कहती हैं कि ब्रज में कोई भी मेरा हितैषी है जो जाते हुए मेरे गोपाल (कृष्ण) को रोक ले? राजा कंस ने मेरे बेटे को किस काम से मथुरा बुलाया है ? कृष्ण को मथुरा ले जाने के लिए यह अक्रूर मेरे लिए काल का रूप धारण करके आया है। कंस मेरे पास की गायें, हाथी सभी धन ले ले, मुझे बंदी बनाकर कारागार में डाल दें, किंतु मुझे इतना सुख दे दें कि कमल के समान नयनोंवाले मेरे कृष्ण, मेरे नयनों के सामने खेलते रहें हैं। मैं दिनभर उसका मुख देखती रहूँ और रात में उन्हें अपनी गोद में चिपकाकर सो सकूँ। यदि कृष्ण के मथुरा जाने के दुख के बाद दुर्भाग्यवश जीवित भी रही तो हँसकर किसे बुलाऊँगी। सूरदास जी कहते हैं कि इस तरह कमल के समान सुंदर नेत्रोंवाले कृष्ण के गुणों का गान करते–करते नंद जी की पत्नी, महारानी माता यशोदा अंत्यत दुःखी हो जाती हैं। मैं अत्यंत दुखित नंदरानी की दशा का प्रत्यक्ष वर्णन कहाँ तक करूँ ?

कृष्ण के मथुरा चले जाने पर उनके वियोग में दुखी एक गोपी कहती है कि प्रेम चाहे जिससे भी करो उसका अंत दुखदायी ही होता है। पतंगा आग से प्रीति करता है तो उसका अंत आग में जलने से होता है क्योंकि वह प्रेम में अपने आपको आग में समर्पित कर देता है। भौंरा कमल से प्रेम करता है, वह कमल के फूल के बीच बैठ जाता है और अंत में सूर्यास्त के बाद वह कमल की पंखुड़ियों में अर्थात कमल के फूल के बीच बंद होकर अपने प्राण त्याग देता है। हिरन नाद से प्रेम करता है, नाद सुनकर वह अपने स्थान पर खड़ा हो जाता है जिसके कारण बहेलिये के बाण उसे भेद देते हैं। नहीं तो वह चारों तरफ भागता रहता है तब उसे वह बहेलिया नहीं मार पाता। हमने माधव (कृष्ण) से प्रीति की तो उन्होंने गोकुल से जाते समय हमें बताया तक नहीं। कुछ कहकर जाते तो हमें इतना दुख नहीं होता।

सूरदास जी कहते हैं कृष्ण के मथुरा चले जाने पर गोपियाँ इतनी दुखी हैं कि उनके नेत्रों से सदैव आँसू बह रहे हैं।

कृष्ण के मथुरा चले जाने पर राजा वृषभान की पुत्री कुमारी राधा भी कृष्ण के लिए बहुत दुखी हैं। कृष्ण के श्रम बिंदु (पसीने) से राधा जी के हृदय एवं वस्त्र भीगे हैं। कहीं कृष्ण की खुशबू निकल न जाए, इस डर से वे साड़ी नहीं धुलवा रही हैं। मुख नीचे किए रहती हैं। अन्यत्र देखती नहीं। उनकी दशा हारे हुए जुवारी की तरह हो गई है। उनके बाल बिखरे हुए हैं। शरीर सूख गया है। राधा जी कुम्हला गई है जैसे कमलिनी के ऊपर हिमपात हो गया है। यही दशा कृष्ण के वियोग में राधा की हो गई है।

ब्रज के लोगों की स्थिति का वर्णन कहाँ तक करूँ ?

हे कृष्ण सुनिए, आपके बिना ब्रज के लोगों के दिन–रात के बुरे हाल हैं, गोपियाँ ग्वाल–बाल, गायें और उनके बछड़े मलिन वदन तो हैं ही उनका शरीर भी काला पड़ गया है। उनका शरीर तो वसंत और शिशिर ऋतु के पत्ते झड़ जाने वाले पेड़ों की तरह हो गया है। मथुरा की तरफ से आने वाले रास्ते में जो कोई दूर से दिखाई देता है, उनसे सभी ब्रजवासी आपकी कुशलता पूछने लगते हैं। इस मार्ग से जाने वाले पथिकों के पैरों में वे प्रेम में आतुर होकर लिपट जाते हैं। उनकी स्थिति वन में रहने वाले उस चातक की–सी हो गई है, जो वन में सभी चीजों के होने के बावजूद स्वाति नक्षत्र के जल की प्रतीक्षा करता रहता है।

सूरदास जी कहते हैं कि हे कृष्ण ! आपके संदेश पूछने के डर के कारण पथिकों ने ब्रज जाने वाले मार्ग का ही त्याग कर दिया है।

कृष्ण उद्धव से कहते हैं, हे ऊधौ मुझे ब्रज भूलता ही नहीं है, मैं वृंदावन और गोकुल के बाग बगीचे, वन, सघन कुंजों की छाया नहीं भूल पाता हूँ। माता यशोदा और बाबा नंद के दर्शन का सुख बहुत याद आता है। दोस्तों के साथ माखन–रोटी का भोजन, गोपियों, ग्वालों और बाल सखा मित्रों के साथ सदैव दिनभर हँसना और खेलना भी भूलता ही नहीं है। सूरदास जी कहते हैं कि ब्रज में रहने वाले लोग धन्य हैं, जिनके हितैषी जगताधार श्री कृष्ण हैं।

—— ० ——

भावार्थ : पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. ९० : दूसरी इकाई, पाठ ७. अकथ कथ्यौ न जाइ– संत नामदेव

राम का नाम ही हमारी खेती–बाड़ी है । बनवारी हमारी धन–दौलत हैं । यह वह धन है जिसको न कोई चुरा सकता है न इसपर काई लगती है । संतों की संगति पाकर दसों दिशाओं में राम नाम को पाया जा सकता है । संत नामदेव कहते हैं कि जब तक मेरे कृष्ण मेरे साथ हैं मुझे कौन आहत कर सकता है ?

राम नाम में यह नामदेव राममय हो गया है । तुम मेरे स्वामी हो, मैं तुम्हारा सेवक हूँ । हरि सरोवर की तरह हैं और भक्तगण सरोवर में तरंगों की तरह हैं । भला सेवक अपने स्वामी को छोड़कर कहाँ जाएँगे । हरि पेड़ की तरह हैं और भक्तगण पंछी की तरह हैं । भक्तगण हरिभजन में लीन होकर अपने अहम को गँवा देते हैं ।

नामदेव कहते हैं कि जिन्होंने हरि के नाम को पा लिया है; वे तो सीधे मुक्ति पा जाते हैं । यमराज उन्हें क्या सताएगा ? भक्ति अनेक प्रकार से की जाती है । भक्ति के फल को कौन टाल सकेगा । जो ब्रह्म के निकट चला जाता है वह; तो मुक्त हो ही जाता है । जिसका नाम लेने मात्र से ही सभी का उद्धार हो जाता है, उसे कोई पार नहीं पा सका है । नामदेव कहते हैं कि यह अब मेरी समझ में आ गया है ।

मैं तो राम नाम का जाप करूँगा । केवल उन्हीं का नाम सुनूँगा, जिसके प्रताप से मोह–माया के जल में नहीं बहूँगा । राम नाम की महिमा अकथनीय है । उसे कह पाना या कागज पर लिख पाना संभव नहीं है । वह सारे भुवनों का स्वामी है । वही माता है, वही पिता है । वह सारे जग का दाता है पर सहजता से मिल जाता है । नामदेव कहते हैं कि उसे पाने के लिए हृदय से पुकारना पड़ेगा ।

——— ० ———

7JYNGC

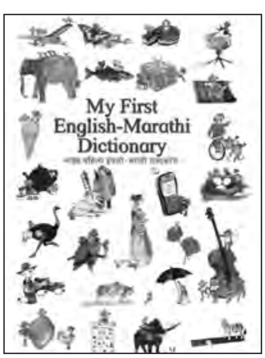

- पाठ्यपुस्तक मंडळाची वैशिष्ट्यपूर्ण पाठ्येत्तर प्रकाशने.
- नामवंत लेखक, कवी, विचारवंत यांच्या साहित्याचा समावेश.
- शालेय स्तरावर पूरक वाचनासाठी उपयुक्त.

पुस्तक मागणीसाठी www.ebalbharati.in, www.balbharati.in संकेत स्थळावर भेट द्या.

साहित्य पाठ्यपुस्तक मंडळाच्या विभागीय भांडारांमध्ये विक्रीसाठी उपलब्ध आहे.

ebalbharati

विभागीय भांडारे संपर्क क्रमांक : पुणे - ☎ २५६५९४६५, कोल्हापूर- ☎ २४६८५७६, मुंबई (गोरेगाव) - ☎ २८७७१८४२, पनवेल - ☎ २७४६२६४६५, नाशिक - ☎ २३९१५११, औरंगाबाद - ☎ २३३२१७१, नागपूर - ☎ २५४७७१६/२५२३०७८, लातूर - ☎ २२०९३०, अमरावती - ☎ २५३०९६५

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ. पुणे.

हिंदी कुमारभारती इयत्ता दहावी (हिंदी माध्यम) ₹ ७३.००